RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 नवंबर 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 नवंबर-01 दिसंबर 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 16
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 84
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

09 फरवरी, 2025

महत्तम शिखर महोत्सव

29 दिसंबर, 2024
05 जनवरी, 2025
12 जनवरी, 2025
19 जनवरी, 2025
26 जनवरी, 2025
02 फरवरी, 2025

22 दिसंबर, 2024 - ग्रैंड समर्पणा दिवस

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

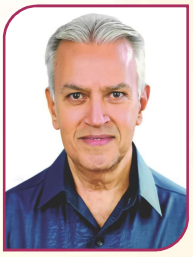

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

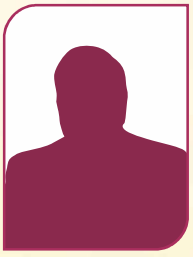

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

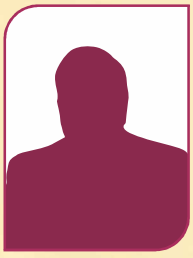

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री शांतिलाल जी डागा
कोलकाता
MID No. : 188697

श्री प्रकाशचंद जी सूर्या
उज्जैन
MID No. : 160559

श्री उत्तमचंद जी रांका
जयपुर
MID No. : 111353

श्री रावतमल जी संचेती
गंगाशहर
MID No. : 123813

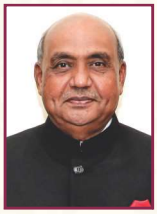

श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

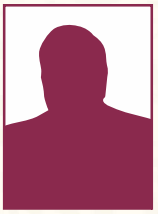

श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

चतुर्थ चरण

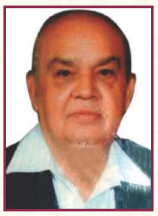

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजयकुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्री सुंदरलाल जी पींचा-गुवाहाटी

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ * श्रीमती जमना देवी लुणावत-नोखागाँव * श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई * श्री संजय जी मालू-कोलकाता * श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम * श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता * श्री अतीज जी कांकरिया-सूरत

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

:: Donor Portal ::

To view your Donation and Membership, please visit this URL or scan the QR Code

https://donor.sadhumargi.com/

विहार सेवा संयोजन सदस्य संक्षिप्त परिचय

वीरगंज (नेपाल)। **सुश्रावक राजेश कुमार जी** सुपुत्र स्व. श्री निर्मल कुमार जी-स्व. श्रीमती विमला देवी बच्छावत गुरुनिष्ठा एवं सेवा भावों से ओत-प्रोत व्यक्तित्व हैं। आप साध्वी श्री मननप्रज्ञा जी म.सा. के संसारपक्षीय भाई हैं। संघ कार्यकर्ता के रूप में आप संघ सेवा के प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहते हैं। आपने श्री अ.भा.सा. जैन संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर दो वर्ष सेवाएँ दीं एवं वर्तमान में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद के दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। संपूर्ण बच्छावत परिवार पूर्णरूपेण शासन समर्पित है। विहार सेवा में आपकी विशेष रुचि है।

कोरबा। **सुश्रावक मूलचंद जी** सुपुत्र स्व. श्री लक्ष्मीलाल जी-स्व. आशी देवी कोटड़िया, लोहावट मूलनिवासी, कोरबा प्रवासी का जीवन सादगी व सरलता से परिपूर्ण है। आपने कोरबा संघ में कोषाध्यक्ष पद पर अनेक वर्षों तक सेवाएँ प्रदान की हैं। आप चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते हैं। आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट आस्थावान मूलचंद जी ने दो बार अठाई तप किया है। धर्मोत्थान के लिए आप सदैव तत्पर रहते हैं।

बेंगलुरु। **सुश्राविका सुंदर देवी** धर्मपत्नी स्व. श्री रतनलाल जी सुराणा का जीवन प्रारंभ से ही धर्माभिमुख है। आपने अपने जीवन में धर्म एवं सेवा को सर्वोपरि रखते हुए संपूर्ण परिवार को संस्कारों की धरोहर प्रदान की। आपने वर्षीतप कर जीवन उन्नत किया। प्रतिदिन 7 से 11 सामायिक तथा उभयकाल प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखती हैं। आपके 33 वर्षों से सचित्त का त्याग एवं 17 वर्षों से चौविहार का नियम है।

नोखा। **सुश्राविका प्रेमलता जी** धर्मपत्नी तेजकरण जी कांकरिया संघ व शासन के प्रति अटूट श्रद्धा व समर्पणा के पूरित है। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय, पक्खी पर उभयकाल प्रतिक्रमण, अष्टमी व चतुर्दशी को हरी व जमीकंद का त्याग का लक्ष्य रखती हैं। आपने दो बार श्रावण एवं एक बार भादवा एकांतर तथा चातुर्मास में चौविहार किया है। आप श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. की संसारपक्षीय चाचीजी एवं साध्वी श्री मुस्कान श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय मामीजी हैं।

होलेनरसिपुर। **सुश्राविका तारा जी** धर्मपत्नी महावीर जी कोठारी ज्ञान-ध्यान के क्षेत्र में अग्रणी व्यक्तित्व हैं। आप 32 साल से रात्रि चौविहार एवं सावन-भादवा में एकांतर करते हैं। स्वाध्यायी सेवा के साथ आपने जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा के 6 भाग उत्तीर्ण किए हैं। आपको दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, नंदी सूत्र, सुखविपाक सूत्र, उववाई सूत्र, गति-आगति, जीवधड़ा, लघुदंडक, 102 बोल का बासठिया, 98 बोल का बासठिया, तत्त्वार्थ सूत्र के 5 अध्ययन आदि कंठस्थ हैं। आपके प्रतिदिन चौविहार, प्रतिक्रमण, नवकारसी व पौरसी का लक्ष्य रहता है।

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

द्वारा सामाजिक कार्य की शृंखला में प्रस्तुत है

तन में हो स्वास्थ्य की अभिवृद्धि,
जीवन में बढ़े शांति समृद्धि।
सभी को पहुँचाएँ यही सुख-शांति,
कर से कर लें हम भी 'आरोग्य वृद्धि'।।

आरोग्य वृद्धि

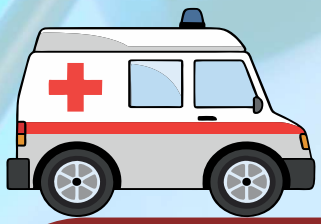

(अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर)

महिला समिति द्वारा आरोग्य वृद्धि के अंतर्गत निम्न कार्य किए जाने का लक्ष्य है -

1. स्वास्थ्य जाँच, आँखों के ऑपरेशन के शिविर आयोजित करना।
2. चश्मे, दवाइयाँ, फल व स्वास्थ्य संबंधी अन्य वस्तुओं का वितरण।
3. एंबुलेंस/व्हील चेयर/डायलिसिस मशीन आदि उपकरण भेंट करना।

आप सभी से निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

।। जय महावीर।।

।। जय गुरु नाना।।

।। जय गुरु राम।।

सज्झायम्मि रओ सया

संपूर्ण संघों में

सदा स्वाध्याय में रत रहो...

:: नियमावली ::

1) प्रतिदिन 26 आगम का स्वाध्याय संपूर्ण संघ में हो।
2) प्रत्येक श्रावक- श्राविका लगभग 100 या अधिक गाथाओं का स्वाध्याय करें।
3) प्रत्येक श्रावक-श्राविका को उनके द्वारा किए जाने वाले स्वाध्याय की पुस्तिका भेजी जाएगी।
4) इन गाथाओं की वाचनी चारित्रात्माओं से लेने का लक्ष्य रखें। जिन क्षेत्रों में ऐसा संभव नहीं हो, वहाँ वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं से ले सकते हैं।
5) स्वाध्याय के पश्चात् **'आगमे तिविहे'** का पाठ अवश्य करें।
6) अस्वाध्याय के 32 कारण, जो स्वाध्याय पुस्तिका में दिए जाएँगे, उनका यथोचित रीति से पालन करें।
7) 12 अंचल को 4 जोन में विभाजित किया गया। प्रत्येक जोन में 3 अंचल है।
8) जिन्होंने पहले आगम भक्ति और महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 100 गाथा के स्वाध्याय का नियम ले रखा है, उनको पुनः रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है।

Scan Me for Registration

Zone - 1
1. मेवाड़
2. जयपुर-ब्यावर
3. दिल्ली-पंजाब हरियाणा व उत्तरी

Zone - 2
1. बीकानेर-मारवाड़
2. बंगाल-बिहार
3. पूर्वोत्तर

Zone - 3
1. मालवा
2. मुंबई-गुजरात
3. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश

Zone - 4
1. छ.ग.-ओड़िशा
2. कर्नाटक-आंध्र.
3. तमिलनाडु

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव - महत्तम शिखर

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा महोत्सव का चरम स्वरुप

जीवदया

जीवदया - मनुष्यता से प्रभुता.....

जीवदया सप्ताह : 5 जनवरी से 14 जनवरी 2025

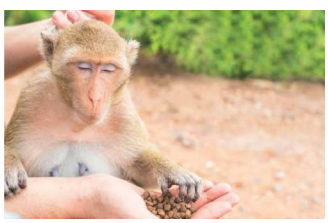

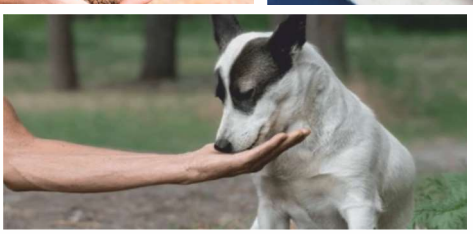

भगवान महावीर का संदेश

जीओ और जीने दो...'अहिंसा परमो धर्मः'...

आयोजक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

निवेदक-महत्तम शिखर आयोजन समिति

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह	10
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र	14
श्रमणोपासक हेडलाइंस	16
भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार	17
अपने आचार्यदेव को जानें	30
विविध समाचार	33
सज्झायं	41
महत्तम महोत्सव	48
विविध भेंट मार्फत	52
विनम्र श्रद्धांजलि	62
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	63
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	67
चारित्रात्माओं की विहारचर्या	71

विनय

सुविचार

रत्नाधिक ज्ञानवान, अवस्था में जो हो ज्येष्ठ।
उनके आगे झुकना, विनय आचार है।।
आगम में विनय की, वृत्तियाँ बताई देखो।
मैत्री प्रमोद करुणा, वात्सल्य ये चार हैं।।
धरम विटप गर, विनय बताई जड़।
विनय धरम सारे, गुणों का शृंगार है।।
वीर कहे गौतम से, झुकता है जो भी नर।
उठता है वही सदा, पूजता संसार है।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

मैत्री नहीं दोष देखती

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

भगवान महावीर ने मैत्री का उपदेश दिया। उनका उपदेश पद है- **'मेत्तिं भुएसु कप्पए'**। समस्त प्राणियों पर मैत्री भाव हो। यह बात बड़ी सहज लगती है, लेकिन इतनी सहज नहीं है। मैत्री में एक ऐसा घटक होता है, जो मैत्री को टिकाए रखने में समर्थ होता है। यदि उसे हटा दिया जाए तो मैत्री-प्रीत लंबे समय तक टिक नहीं सकती। वह घटक है- अदोष दर्शन। मैत्री में दोषों को देखने की नीयत नहीं होती। यदि किसी मित्र में कोई दोष होता भी है तो अन्य मित्र उस दोष का परिहार कैसे हो, प्रयत्न करता है; न कि वह उसके दोषों को देखने का ध्येय बनाता है। दोष दर्शन की नीयत पैदा होते ही मित्रता को खिसकते-दरकते देर नहीं लगेगी। मैत्री के उपदेश से भगवान ने एक महान उपकार सृष्टि के जीवों पर किया है। वह यह कि उसकी दोष दर्शन की नीयत न बने। वह दोष देखने वाला न हो। यह दोष यदि मनुष्य में से एक बार अलग कर दिया जाए तो मानवीय संस्कृति-सभ्यता में एक अद्भुत नजारा नजर आने लग जाए। मैं तो यहाँ तक मानता हूँ कि यदि भगवान-अरिहंत भी आज इस धरा पर होते तो दोष देखने वाले उनमें भी दोषों का कथन करने से नहीं चूकते। भगवान महावीर के युग में उनसे भी असूया रखने वालों की कमी नहीं थी। आज भी लोग भगवान को दोष देने से नहीं चूकते। उन्हें कहते हुए सुना जाता है, हे भगवान! तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? यह शिकायत क्यों है? प्रायः आदतन। व्यक्ति के दोष देखने की दृष्टि में यदि बदलाव आ जाए तो बहुत बड़ी बात होगी। उसके लिए भगवान का फॉर्मूला है- **मैत्री भाव**। जगत के समस्त जीवों के साथ वैसा भाव सध जाता है तो दोष दर्शन का प्रवाह स्वतः थम सकता है। अन्यथा दोष दर्शन में मानव की कितनी शक्ति का ह्रास हो रहा है, यह अनुभव किया जा सकता है। दोष दर्शन का प्रवाह रुके, मैत्री भाव के संबंध प्रगाढ़ बनें ताकि पूरा विश्व शांति से श्वास ले सके।

फाल्गुन शुक्ल 11, शनिवार, 19.03.2016

साभार- आरोह

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

कृष्णागमन

29-30 अक्टूबर 2024 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

वीर पुरुष सहायता माँगने वाले की सहायता करते ही हैं। वे शरणागत को कभी निराश नहीं करते। शरणागत की रक्षा करना वे अपना धर्म मानते हैं और इस धर्म का पालन करने में कदापि पीछे नहीं हटते। भले ही ऐसा करने में उन्हें धन-जन की हानि ही क्यों न उठानी पड़े, उन्हें अपना अस्तित्व ही क्यों न खो देना पड़े और अपना सर्वस्व ही नष्ट क्यों न कर देना पड़े, वे शरणागत की रक्षा और सहायता माँगने वाले की सहायता अवश्य ही करेंगे। चाहे उनका शत्रु ही शरण में आया हो या शत्रु ही सहायता माँगता हो, ऐसे समय में वीर लोग शत्रुता भूलकर मित्रता का ही परिचय देंगे। मुगल बादशाह बाबर और चित्तौड़ के राणा साँगा में भयंकर लड़ाई हुई थी, परंतु साँगा के पश्चात् चित्तौड़ की रानी ने जब बाबर के लड़के हुमायूँ के पास राखी भेजकर गुजरात के बादशाह को परास्त करने हेतु सहायता माँगी थी, तब हुमायूँ बंगाल से दौड़ा हुआ आया था और उसने अपने स्वधर्मी गुजरात बादशाह से युद्ध करके उसे परास्त किया था। रूपनगर की राजकुमारी ने औरंगजेब से स्वयं की रक्षा के लिए उदयपुर के राणा राजसिंह से प्रार्थना की थी, तब राणा राजसिंह ने धन-जन की अत्यधिक हानि उठाकर भी राजकुमारी की रक्षा की थी। औरंगजेब के लड़के अकबर ने दुर्गादास राठौड़ की शरण ली थी, तब दुर्गादास ने अनेक कष्ट सहकर भी उसकी सहायता की थी। नागौर के राजा दिलीप सिंह और रुद्र सिंह में घोर शत्रुता थी, परंतु जब दिलीप सिंह की लड़की ने राखी भेजकर रुद्र सिंह से अपने पिता के लिए सहायता चाही थी तब रुद्र सिंह पूर्व की शत्रुता को भूलकर सहायता के लिए आया था और गुजरात के बादशाह को भगाकर नागौर की रक्षा की थी। इतिहास में इस प्रकार के अनेक उदाहरण भरे हैं। शास्त्रानुसार भी राजा श्रेणिक का कनिष्ठ पुत्र बहिल कुमार अपने ज्येष्ठ भ्राता कौणिक से बचने के लिए चेड़ा महाराज की शरण गया था। चेड़ा महाराज में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह कौणिक से लड़ता, परंतु बहिल कुमार की रक्षा के लिए चेड़ा महाराजा ने कौणिक से संग्राम करते हुए अपने प्राण खो दिए। मेघरथ राजा ने एक कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस भी काटकर दिया था। मतलब यह है कि शरणागत की रक्षा और सहायता करना वीर लोग अपना परम कर्तव्य मानते हैं। कर्तव्य का पालन करने के लिए ही महाभारत युद्ध में अनेक राजा कौरवों-पांडवों की सहायता के लिए आए थे। कौरवों और पांडवों के युद्ध से किसी दूसरे की हानि नहीं थी, न किसी एक के जीतने से दूसरे राजाओं को विशेष लाभ ही था, परंतु वे वीरोचित कर्तव्य से विवश थे। जो लोग भय से, उपेक्षा से, शत्रुता के कारण या और किसी कारण से शरणागत की रक्षा तथा सहायता माँगने वाले की रक्षा नहीं करते, वे वीर नहीं, अपितु वीरता पर कलंक माने जाते हैं। ऐसे लोगों की गणना कायरों में होती है। वीर कहलाकर इस पवित्र कर्तव्य को पददलित करने वाले संसार में अपयश के भागी होते हैं।

रुक्मिणी ने भी कृष्ण की शरण ली है। उसने भी

कृष्ण से सहायता चाही है। कुशल पुरोहित उसकी प्रार्थना लेकर कृष्ण के पास गया है। अब देखना यह है कि रुक्मिणी की प्रार्थना पर श्रीकृष्ण वीरोचित कर्तव्य का पालन कैसे करते हैं?

सेना के घेरे से निकलकर कुशल द्वारका को चला। कुशल को मार्ग में न मालूम कोई शीघ्रगामी वाहन मिल गया, किसी देवता की सहायता मिल गई या आवेश में वह स्वयं ही वेग से चला। कुछ भी हो, वह आशा से अधिक शीघ्र द्वारका पहुँच गया। ठीक समय पर द्वारका पहुँच जाने के कारण उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह विचार कर रहा था कि अब श्रीकृष्ण रुक्मिणी की सहायता करें या न करें, मैं ठीक समय पर अपना कर्तव्य पूरा कर दूँगा। हर्षपूर्वक रत्नमयी द्वारका नगरी की शोभा देखता हुआ और भूतल पर स्वर्ग-सी रमणीय द्वारका नगरी को देखने का सुअवसर प्राप्त होने से अपने भाग्य की सराहना करता हुआ कुशल राजभवन की ओर बढ़ता जा रहा था। चलते-चलते वह राजद्वार पर पहुँचा। उसने द्वारपाल को आशीर्वाद देकर उससे कहा कि आप श्रीकृष्ण से प्रार्थना कर दीजिए कि एक विदेशी दूत किसी अत्यावश्यक कार्य से भेंट करने आया है।

आज जैसा समय होता तब तो द्वारपाल कुशल को द्वार पर खड़ा भी नहीं रहने देता, किंतु कहता कि अपना विजीटिंग कार्ड दो, सेकेट्री मुलाकात का प्रबंध करेंगे। सेकेट्री के पास विजीटिंग कार्ड पहुँच जाने पर वह भी घंटों खबर नहीं लेता और जब मिलता तब आकाश-पाताल की सब बातें पूछकर संभवतः आप ही श्रीकृष्ण के सामने सब मामला पेश करता तथा दो-चार दिन या अधिक में कुशल को उत्तर देता। कुशल को श्रीकृष्ण के पास तक नहीं पहुँचने देता, लेकिन श्रीकृष्ण के यहाँ का प्रबंध आज के राजाओं के प्रबंध की तरह नहीं था। उनके पास छोटे से छोटा व्यक्ति भी जा सकता था। द्वारपाल तो केवल इसलिए रहता था कि कौन व्यक्ति आया है इसकी सूचना कर दे, जिससे उसके बैठने या स्वागत का कोई विशेष प्रबंध करना हो तो किया जा सके। साथ ही, कोई व्यक्ति ऐसे समय में नहीं आ जाए जब किसी प्रकार का कार्य विशेष किया जा रहा हो।

श्रीकृष्ण से कहने के लिए द्वारपाल को कुशल ने जो कुछ कहा था द्वारपाल ने कृष्ण के पास आकर वह सब निवेदन कर दिया। कृष्ण ने द्वारपाल को आज्ञा दी कि उस दूत को सम्मानपूर्वक ले आओ। कृष्ण की आज्ञा पाकर द्वारपाल कुशल को सम्मानपूर्वक उनके पास ले गया। कृष्ण ने कुशल को प्रणाम करके बैठने के लिए आसन दिया। कृष्ण से आसन पाकर कुशल गंभीरतापूर्वक बैठ गया।

कुशल को शांत देखकर **श्रीकृष्ण** उससे पूछने लगे— कहिए ब्राह्मण देवता! आपका आगमन कहाँ से हुआ?

कुशल—मैं विदर्भ देश की राजधानी कुण्डिनपुर से आया हूँ।

कृष्ण—राजा भीम और उनका परिवार तो सकुशल हैं न?

कुशल—हाँ महाराज! मैं आया तब तक तो सब कुशल ही था, परंतु अकुशलता के बादल छा रहे हैं। अकुशलता बरसने से पहले यदि आपने उन बादलों को छिन्न-भिन्न कर दिया तब तो कुशल ही बना रहेगा अन्यथा अकुशलता अवश्यंभावी है।

कृष्ण—कहिए ऐसी कौनसी बात है? आप अपने आगमन का कारण सुनाइए। मैं अपने योग्य कार्य को करने के लिए सदैव तत्पर हूँ।

कुशल ने विचार किया कि सभा में सभी प्रकार के लोग होते हैं। सभी के विचारों में समानता नहीं होती और विचार-भिन्नता मिटाने के लिए अवसर की आवश्यकता हुआ करती है। एक व्यक्ति को समझाने में विलंब या कठिनाई नहीं होती, परंतु अनेक व्यक्तियों को समझाकर एक निश्चय पर लाना कठिन होता है। रुक्मिणी ने भी मुझसे कहा था कि अवसर देखकर बात करना। नीति के अनुसार भी कोई गुप्त या विचारणीय बात एकदम से सभा में नहीं कहनी चाहिए।

इस प्रकार विचार कर **कुशल** ने श्रीकृष्ण से कहा— क्या सभा में ही? कुशल के उत्तर से कृष्ण समझ गए कि दूत चतुर है। अपनी बात सभा में नहीं कहना चाहता, अपितु एकांत में कहना चाहता है। उन्होंने कुशल से कहा—अच्छा,

एकांत में चलते हैं। यह कहकर कृष्ण बलदेव जी को साथ लेकर सभा से उठ गए और कुशल सहित मंत्रणागृह में आए।

मंत्रणागृह में बैठकर **श्रीकृष्ण** ने कुशल से कहा—हाँ, आपको जो कुछ कहना है, कहिए। कुशल ने रुक्मिणी का पत्र श्रीकृष्ण को दे दिया। कुशल का दिया हुआ पत्र लेकर कृष्ण उसे पढ़ने लगे। पत्र पढ़ते-पढ़ते ही श्रीकृष्ण को रोमांच हो आया। रुक्मिणी की रक्षा करने के लिए श्रीकृष्ण की भुजाएँ फड़कने लगीं, फिर भी उन्होंने गंभीरता नहीं त्यागी और बलदेव जी को पत्र देकर उनसे कहा कि यह पत्र आप भी पढ़िए और कहिए कि अपने को क्या करना चाहिए?

बलदेव जी ने भी रुक्मिणी का पत्र पढ़ा। पत्र पढ़कर वे श्रीकृष्ण से कहने लगे कि इस विषय में विशेष विचारणीय कौनसी बात है? अपना कर्तव्य स्पष्ट है। शरणागत की रक्षा और असहाय की सहायता करना अपना कर्तव्य है। यदि हम कर्तव्य पालन के विमुख रहते हैं तो क्षत्रिय कुल को दूषित बनाते हैं। हम यदुवंशी हैं, शरणागत की रक्षा के लिए हम एक बार मृत्यु से भी सामना करेंगे, लेकिन शरीर में प्राण रहते शरणागत को कदापि नहीं त्यागेंगे। यदि हम शरणागत की और विशेषतः शरण में आई हुई कन्या की रक्षा नहीं करें तो हमारी वीरता को, हमारे पुरुषत्व को और हमारे क्षात्रत्व को कोटि-कोटि धिक्कार है। यदि हम रुक्मिणी की रक्षा नहीं करेंगे तो हमारी गणना अधम से अधम में होगी। आप इस विषय में विशेष विचार मत करिए, अपितु कुण्डिनपुर चलकर रुक्मिणी की रक्षा करिए। आपके साथ मैं भी कुण्डिनपुर चलूँगा।

यद्यपि बलदेव जी ने कृष्ण को मनभाती बात कही थी, परंतु नीतिज्ञ श्रीकृष्ण प्रत्येक बात को स्पष्ट कर लेना आवश्यक समझते थे। इसी दृष्टि के उन्होंने बलदेव जी से कहा—भ्राता! यद्यपि आप जो कुछ कह रहे हैं, यह सर्वथा उचित है, लेकिन इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि दूसरी ओर शिशुपाल है, जो बुआ का लड़का भाई है।

बलदेव जी—भैया! क्या अत्याचारी भाई दंड का पात्र नहीं माना जाएगा? न्याय के सन्मुख पिता, माता, भ्राता, भगिनी आदि कोई चीज नहीं है। न्याय कहता है कि चाहे पिता हो या पुत्र, बहन हो या भाई और माता हो या पत्नी, कोई भी हो जो अन्याय करता है, उसे दंड देना ही चाहिए। न्याय के समीप पक्षपात नहीं चल सकता।

कृष्ण—अच्छी बात है, चलिए तैयारी कराइए, परंतु इतने अल्प समय में कुण्डिनपुर पहुँचेंगे कैसे?

बलदेव जी—पहुँच जाएँगे। कैसे भी पहुँचे, परंतु पहुँचेंगे अवश्य। अधिक धावा करके पहुँचेंगे। अब विलंब करना ठीक नहीं, इसी समय प्रस्थान कर देना अच्छा है।

श्रीकृष्ण ने बलदेव जी की बात स्वीकार की। उन्होंने कुशल से कहा—लीजिए महाराज! आपके आगमन का उद्देश्य पूरा हो गया न?

कुशल—मेरा उद्देश्य तो आपके दर्शन होते ही पूरा हो गया।

कृष्ण—अब आप जल्दी से स्नान, भोजन कर लीजिए। तब तक मैं रथ तैयार कराता हूँ।

कृष्ण ने सेवकों को कुशल के स्नान, भोजन का प्रबंध करने और रथ तैयार करने की आज्ञा दी। कुशल स्नान, भोजन से निवृत्त हुआ तब तक कृष्ण का गरुड़ध्वज रथ भी तैयार होकर आ गया। रथ में कृष्ण के समस्त आयुध प्रस्तुत थे और रथ के सारथी थे स्वयं बलदेव जी। कुशल को लेकर कृष्ण रथ में बैठे और रथ कुण्डिनपुर की ओर चला।

आज विवाह का दिन है। सब ओर खूब चहल-पहल है। रुक्म के प्रबंध से रुक्मिणी की विवाह करने से इनकार करने की बात राजपरिवार और उससे संबंध रखने वाले कुछ व्यक्तियों के सिवाय किसी को मालूम नहीं हो पाई। वह चाहता था कि मैं भीतर-ही-भीतर रुक्मिणी को बलात् शिशुपाल के साथ विवाह दूँ और बाहर प्रजा को रुक्मिणी का बलात् विवाह करने की खबर न होने दूँ। इस उद्देश्य से वह खूब धूमधाम करा रहा है। शिशुपाल की बारात में भी खूब राग-रंग हो रहा है। इस प्रकार सब ओर आनंद ही आनंद दिखाई दे रहा था, परंतु रुक्मिणी के हृदय में अपार दुःख है। वह आज के दिवस को अपनी मृत्यु का दिन समझ रही थी। वह विचार कर रही थी कि आज इन दुष्टों के अत्याचार से बचने के लिए मुझे अपने प्राण विसर्जित करने पड़ेंगे। रुक्मिणी को खाना, पीना, सोचना, बैठना कुछ नहीं सुहाता था। वह इसी चिंता में डूबी हुई थी कि मैं अपनी प्रतिज्ञा की

रक्षा कर सकूँगी या नहीं? उसकी आँखों के सामने रुक्म और शिशुपाल की वीभत्स मूर्तियाँ अत्याचार का तांडव दिखा रही थीं। कृष्ण के पास पत्र देर से भेजा गया था। इसलिए वे समय पर आ पाएँगे, इसका उसे विश्वास नहीं था। उसे कभी-कभी यह भी संदेह हो जाता कि कहीं पत्र सहित कुशल पकड़ा न गया हो और मेरे कारण उसको काल के हवाले नहीं कर दिया गया हो। कृष्ण के आने पर संदेह होने पर भी रुक्मिणी उनकी ओर से सर्वथा निराश नहीं थी। उसके हृदय को संदिग्ध आशा थी। वह उस संदिग्ध आशा के सहारे ही अपने हृदय में धैर्य दे रही थी। जब निराशा का आधिक्य होता तब रुक्मिणी व्याकुल हो जाती और जब आशा निराशा को दबा देती तब रुक्मिणी के हृदय को कुछ धैर्य हो जाता। वह आशा और निराशा के बीच में ही उलझी हुई थी। बीच-बीच में बुआ से उसकी आशा को संबल मिल जाता, लेकिन रुक्म का क्रोध उसे भयभीत भी बना रहा था। उसका हृदय किसी भी प्रकार धैर्य धारण नहीं करता।

अपनी संदिग्ध आशा के आधार पर रुक्मिणी महल की छत पर बैठी थी और उसकी आँखें द्वारका के मार्ग पर लगी हुई थीं। कभी-कभी उसके हृदय में यह विचार भी आ जाता कि क्या मालूम श्रीकृष्ण मुझ अभागिन के लिए आने का कष्ट करेंगे या नहीं? कहीं वे द्वारका से बाहर तो नहीं गए होंगे? यदि मेरा पत्र उनके पास समय पर पहुँच ही गया होगा तब भी कहीं बलदेव जी आदि उन्हें आने से मना तो नहीं कर देंगे? रुक्मिणी के हृदय में जब निराशा का जोर बढ़ता है तब वह इसी प्रकार के अनेक संदेहों में डूब जाती है, परंतु जब आशा का जोर बढ़ता है तब वह सोचती है कि मैं ऐसी अभागिन तो नहीं कि जो मुझे आत्महत्या करनी पड़े। मैं किसी कायर पुरुष की शरण नहीं गई अपितु एक महापुरुष की शरण गई हूँ। वे दयालु हैं, करुणानिधान हैं। वे शत्रु पर भी दया करते हैं, फिर मैं तो एक अबला नारी हूँ। मुझ पर दया क्यों नहीं करेंगे? अवश्य ही दया करेंगे। कदाचित् मेरे लिए वे आने का कष्ट न भी करते, परंतु अपने विरुद की रक्षा के लिए तो अवश्य ही आएँगे। बलराम आदि प्रमुख यादव भी उन्हें एक अनाथिनी की रक्षा करने से कदापि नहीं रोकेंगे, बल्कि वे मेरी रक्षा करने के लिए श्रीकृष्ण को प्रेरणा करके यहाँ भेजेंगे और आश्चर्य नहीं कि वे स्वयं भी साथ आएँ।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

– क्रमशः

प्रतियोगिता

आचार्य प्रवर का जीवन, हमारा आदर्श

देश के अनेक स्थानों में विचरण व चातुर्मास आदि विविध प्रसंगों पर परम पूज्य आचार्य भगवन् के सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ है। इस दौरान अनेक सुश्रावक-सुश्राविकाओं को आचार्य भगवन् के जीवन को नजदीक से जानने-समझने का अवसर मिला। यदि आपके ध्यान में आचार्य भगवन् के जीवन, जीवन चारित्र, संघीय व्यवस्था, श्रावक-श्राविकाओं संबंधी कुछ विशेष घटनाएँ या संस्मरण हों, जो आपने प्रत्यक्ष देखे हों तो उन्हें अपने शब्दों में पिरोकर हमें भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही यह भी अंकित करें कि आप द्वारा लिखित संस्मरण से हमें क्या शिक्षा मिलती है एवं यह संस्मरण आचार्य भगवन् की कौनसी विशेषता को उजागर करता है। आप द्वारा भेजा गया विवरण यथाशीघ्र ही हमें प्राप्त हो सके, ऐसा लक्ष्य रखें।

सारगर्भित शब्दांकन, सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित एवं शब्द रचना में जिन श्रावक-श्राविकाओं की रचनाएँ सर्वश्रेष्ठ होंगी उन्हें विजेता के रूप में **प्रथम ₹1100/-**, **द्वितीय ₹700/-**, **तृतीय ₹500/-** एवं **सांत्वना (पाँच) ₹251/-** के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। आपका यह सार्थक प्रयास अन्यों के लिए प्रेरक होगा।

- श्रमणोपासक टीम

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

29-30 अक्टूबर 2024 अंक से आगे...

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

ज्ञान लब्धि

प्र.2569 यथाख्यात चारित्र अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर यथाख्यात चारित्र की अलब्धि में सिद्ध भगवान और 1-10 गुणस्थान वाले जीव होते हैं। अतः 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

प्र.2570 चारित्राचारित्र लब्धि (श्रावक) में कितने ज्ञान होते हैं?

उत्तर चारित्राचारित्र लब्धि में 3 ज्ञान की भजना (2 या 3)।

प्र.2571 चारित्राचारित्र अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर चारित्राचारित्र की अलब्धि में 5वें गुणस्थान को छोड़कर शेष सभी गुणस्थान और सिद्ध भगवान होते हैं, इसलिए 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

प्र.2572 चारित्राचारित्र लब्धि कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर अप्रत्याख्यानी, संज्वलन कषाय और नोकषाय के क्षयोपशम से चारित्राचारित्र लब्धि प्राप्त होती है।

दान यावत् वीर्यलब्धि

प्र.2573 दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्यलब्धि कैसे प्राप्त होती है तथा इनमें एवं इनकी अलब्धि में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर ये लब्धियाँ अंतराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से प्राप्त होती हैं। इनमें 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना है एवं दानादि की अलब्धि में सिद्ध भगवान की अपेक्षा केवलज्ञान की नियमा।

प्र.2574 सयोगी केवली भगवान के दानलब्धि आदि का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. **दानलब्धि -** साधु योग्य वस्तुएँ मिलने में बाधा नहीं आती है एवं ज्ञान दान देने में भी उदार होते हैं।
2. **लाभलब्धि -** इनकी प्रत्येक प्रवृत्ति से स्व-पर को लाभ होता है।
3. **भोगलब्धि -** आहार आदि मिलने में बाधा नहीं आती है।
4. **उपभोगलब्धि -** वस्त्र, पात्र आदि मिलने में बाधा नहीं आती है।
5. **वीर्यलब्धि -** विहार, तपस्यादि में थकान नहीं आती है।

प्र.2575 सिद्धों में दानादि लब्धि क्यों नहीं मानी गई है?

उत्तर यद्यपि सिद्ध भगवान अनंत लब्धि संपन्न होते हैं तथापि कृतकृत्य हो जाने के कारण यानी प्रयोजन के अभाव में उनके दानादि रूप करण लब्धि नहीं होती। अनंत वीर्य के सामर्थ्य से वे सदाकाल निष्कंप रहते हैं।

इंद्रिय लब्धि

प्र.2576 इंद्रिय लब्धि में ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर इंद्रिय लब्धि में 4 ज्ञान (2-3-4) या 3 अज्ञान (2-3) की भजना।

प्र.2577 इंद्रिय अलब्धि में कौन से जीव होते हैं?

उत्तर
1. श्रोतेंद्रिय अलब्धि में एकेंद्रिय यावत् चतुरिंद्रिय,
2. चक्षुरिंद्रिय अलब्धि में एकेंद्रिय यावत् तेइंद्रिय,
3. घ्राणेंद्रिय अलब्धि में एकेंद्रिय और बेइंद्रिय,
4. रसनेंद्रिय अलब्धि में एकेंद्रिय,
5. स्पर्शेंद्रिय अलब्धि में कोई छद्मस्थ नहीं होता, केवलज्ञानी ही होते हैं।

उपयोग

प्र.2578 साकार उपयोग, अनाकार उपयोग में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर साकार उपयोग, अनाकार उपयोग में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

प्र.2579 चक्षु-अचक्षु, अवधि और केवलदर्शन में कितने ज्ञान-अज्ञान होते हैं?

उत्तर
1-2. चक्षुदर्शन और अचक्षुदर्शन में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
3. अवधिदर्शन में 4 ज्ञान की भजना, 3 अज्ञान की नियमा।
4. केवलदर्शन में केवलज्ञान की नियमा।

योग

प्र.2580 सयोगी और अयोगी में ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. सयोगी, मन, वचन, काययोगी में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. अयोगी में केवलज्ञान की नियमा।

लेश्या

प्र.2581 सलेशी-अलेशी जीवों के ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. प्रथम 5 लेश्या में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. शुक्ल लेश्या में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
3. अलेशी में केवलज्ञान की नियमा।

कषाय

प्र.2582 सकषायी और अकषायी जीवों के ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. सकषायी में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. अकषायी में 5 ज्ञान की भजना।

वेद

प्र.2583 सवेदी और अवेदी में ज्ञान-अज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर
1. सवेदी, स्त्री, पुरुष, नपुंसक वेदी में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।
2. अवेदी में 5 ज्ञान की भजना।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

श्रमणोपासक हेडलाइंस

हम सब के साथ: राम चमकते भानु समाना

- अनेकानेक कीर्तिमानों के साथ भीलवाड़ा में महत्तम शिखर चातुर्मास भव्यातिभव्य रूप से संपन्न। इस दौरान 12 दीक्षाएँ, 27 मासखमण, 300 अठाइयाँ, 2100 तेले, 300 शीलव्रत, 318 लोच, 15 रंगी सामायिक सहित विभिन्न शिविरों व प्रत्येक रविवार को दया आदि के ठाठ से जन-जन धन्य हुआ। श्री इभ्य मुनि जी म.सा. ने इस चातुर्मास में अपनी नौवीं अठाई 9 उपवास की तपस्या के साथ पूर्ण की।
- जीतो (समग्र जैन समाज की संस्था) ने आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की प्रेरणा से प्रत्येक वर्ष 9 अप्रैल को '**विश्व नवकार दिवस**' मनाने का संकल्प लिया। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने इस अवसर पर नवकार मंत्र की 9 माला फेरने की प्रेरणा दी।
- दिगंबर आचार्य श्री सुंदरसागर जी महाराज, मुनि श्री शुभम्कीर्ति जी महाराज, श्री सुगमसागर जी महाराज, श्री सुलक्ष्यसागर जी महाराज, श्री अज्ञेयसागर जी महाराज, श्री सुज्ञानसागर जी महाराज, अ.भा. श्वेतांबर नानक श्रावक समिति प्राज्ञ जैन संघ के अध्यक्ष संपतराज जी चपलोत, श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेश जी गोधा, पूर्व न्यायाधीश प्रकाश जी पगारिया, आर.सी.एम. ग्रुप के चेयरमेन प्रकाशचंद जी छाबड़ा, भारत सरकार के विशिष्ट साइंटिस्ट डॉ. रितेश विजय जी एवं इंजी. अमित जी, ओम शांति वृद्धाश्रम के भाई-बहनों, अग्रवाल, माहेश्वरी, ब्राह्मण समुदाय के अनेक गणमान्यजनों आदि ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- विहार सेवाकर्मी प्रशिक्षण शिविर में सेवाकर्मियों को अद्यतन जानकारियों के साथ प्रशिक्षित किया गया।
- आगामी चातुर्मास, दीक्षा प्रसंग, महत्तम महोत्सव, होली चातुर्मासिक पर्व, क्षेत्र स्पर्शने आदि हेतु देशनोक, जयपुर, नागौर, सिरकाली, रतलाम, भीम, चिकारड़ा, कालियास, बोहेड़ा आदि संघों ने भावभरी विनतियाँ गुरुचरणों में अर्पित कीं।
- अनेकानेक स्कूलों में महेश जी नाहटा द्वारा आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के दिव्य संदेश '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' अभियान के अंतर्गत व्यसनमुक्ति व संस्कार जागरण कार्यक्रम संपन्न।
- संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का अंचल प्रमुखों सहित तीन अंचलों- 1. मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल, 2. मेवाड़ अंचल एवं 3. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल का प्रवास संपन्न।
- महत्तम महोत्सव के अंतर्गत '**ग्रैंड समर्पणा दिवस**' 22 दिसंबर 2024 को एकासना दिवस के रूप में मनाने का आह्वान। आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 9 फरवरी के लिए 50 दिनों का काउंटडाउन 22 दिसंबर से होगा प्रारंभ। इन 50 दिनों में आने वाले 8 रविवार विविध सामूहिक गतिविधियों के साथ भव्यातिभव्य रूप से संपूर्ण राष्ट्र में मनाने का लक्ष्य।

शिखर महोत्सव चातुर्मास 12 दीक्षाओं, 27 मासखमण, 300 अठाइयों, 2100 तेले, 300 शीलव्रत, 318 लोच, 15 रंगी सामायिक, प्रत्येक रविवार को दया एवं विभिन्न शिविरों के भव्य आयोजनों के साथ ऐतिहासिक बना

अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी एवं प्रवचन पंडाल, प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई, भीलवाड़ा।

सोए मन को राह मिली,
थके मन को चाह मिली।
भाग्य सिकंदर तेज ऐसा कि
तिरने को गुरु राम की नाव मिली।।

अनूकूल-प्रतिकूल प्रसंग पर मन विचलित न हो
- आचार्य भगवन्

कभी किसी से डरना नहीं और ना ही किसी को डराना
- उपाध्याय प्रवर

प्राणिमात्र का कल्याण करने वाले, युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-24 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-48 का **शिखर महोत्सव चातुर्मास** अनेकानेक उपलब्धियों के साथ ऐतिहासिक, अलौकिक, अविस्मरणीय रहा। उभय गुरु-भगवंतों व चारित्रात्माओं के शुद्ध, उच्च साधना, तप-तेज, संयम, आगमसम्मत जीवन निर्माणकारी प्रभावशाली प्रवचन एवं जिज्ञासा-समाधान से सकल जैन व जैनेतर समाज अत्यंत प्रभावित हुआ।

भीलवाड़ा क्षेत्र के सौभाग्य से हुक्म संघ परंपरा में प्रथम बार नवम पट्टधर आचार्य भगवन् का चातुर्मास भीलवाड़ा में संपन्न हुआ। जीतो एपेक्स समग्र जैन समाज की संस्था ने उभय गुरु-भगवंतों की पावन प्रेरणा से प्रत्येक वर्ष 9 अप्रैल को विश्व नवकार दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इस पर चहुँओर हर्ष की लहर दौड़ गई। इस चातुर्मास में 12 दीक्षाएँ, 27 मासखमण, 300 अठाइयाँ, 2100 तेले, 300 शीलव्रत, 318 लोच, 15 रंगी सामायिक, प्रत्येक रविवार को दया एवं विभिन्न शिविरों के आयोजन सहित अनेकानेक कार्यक्रम संपन्न हुए। साथ ही अन्य कई दीर्घ तपस्याओं के भी प्रत्याख्यान हुए।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के

राष्ट्रीय अधिवेशन एवं महत्तम महोत्सव के अंतर्गत अभिनव कार्यक्रम सानंद संपन्न हुए। समता युवा संघ द्वारा देशभर के 90 स्थानों पर आयोजित रक्तदान शिविर में 10453 यूनिट रक्तदान हुआ। भीलवाड़ा में 306 यूनिट रक्तदान हुआ। नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर में 108 लोग एवं नि:शुल्क नेचुरोपैथी शिविर में 90 लोग लाभान्वित हुए, जो कि मानव सेवा के क्षेत्र में मिसाल बन गए। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। इस चातुर्मास में संत वर्ग में सबसे अधिक तपस्याएँ हुईं। इस चातुर्मास को सफल बनाने में भीलवाड़ा के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, अरिहंत भवन, महावीर सेवा समिति, सुभाषनगर जैन स्थानक व सकल जैन समाज का योगदान अत्यंत ही सराहनीय रहा।

मिथ्यादर्शन और मोह संसार में रुलाने वाले हैं

1 नवंबर 2024। प्रात:कालीन मंगलमय बेला में भगवान महावीर की स्तुति की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **''मिथ्या मोह का तिमिर सबसे घातक है, जो संसार में रुलाने वाला होता है। इस मोह के अंधकार में व्यक्ति तत्त्व-अतत्त्व का ज्ञान नहीं कर पाता। वीर प्रभु ने मिथ्या मोह तिमिर को हटाया। जैसे-जैसे अध्यवसाय पवित्र होते हैं, वीरता जगती है। हस्तिपाल राजा ने अपने स्वप्नों का फल भगवान महावीर से जाना।**

प्रथम स्वप्न के अनुसार, मदोन्मत हाथी निरंकुश चल रहा था, जो इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में क्षणिक ऋद्धि में अधिकांश श्रावक मदोन्मत होकर धर्म से स्खलित हो जाएँगे।

द्वितीय स्वप्न में बंदर की उछल-कूद इस बात का प्रतीक है कि आने वाले समय में कमजोर मन आगे नहीं बढ़ने देगा। कम को कमजोर बना लिया तो कुछ नहीं होने वाला। साधना से अपनी आत्मा को भावित किया जा सकता है।

तृतीय स्वप्न के अनुसार, कल्पतरु पर धुल चढ़ी हुई थी। इसका अर्थ है कि श्रावक धीर, वीर, गंभीर कल्याणमित्र होता है, लेकिन भविष्य में लोग थोड़ी-सी प्रशंसा करेंगे तो श्रावक उससे भ्रमित हो धर्म से विमुख हो जाएँगे और शुद्ध संयम पालने वालों के लिए काँटे बिखेरेंगे।

भगवान ने चौथे स्वप्न के बारे में बताया कि स्वप्न में कौए को देखने का अर्थ कि कौआ स्वभाव से चंचल होता है। अत: राजन्! आने वाले समय में कई साधु संप्रदाय, संघ को त्यागकर अन्य गच्छ का आश्रय स्वीकार करेंगे। व्यक्ति जहाँ होता है वहाँ वह अतृप्ति ही महसूस करता है। मन भागता रहता है कि वहाँ अच्छा होगा। यह विचार कर मुनि मान-प्रतिष्ठा के पीछे डोलायमान होते रहेंगे। श्रावक मजबूत होंगे तो सहसा साधु गलत नहीं बनेंगे।

पाँचवें स्वप्न के विवेचन में सिंह के संदर्भ में फरमाया कि सिंह धर्म के समान है। जैसे सिंह की गर्जना कम पड़ गई है, वैसे ही धर्मसंघ की आवाज कम पड़ जाएगी। धर्मसंघ में लोग कीड़े आदि के समान अपने आप ही कट-कट करेंगे। धर्म की जाहोजलाली नहीं रहेगी। अन्य मतों का बोलबाला रहेगा।

छठे स्वप्न के विषय में बताया कि जैसे कमल पानी में उगता है, लेकिन तुमने उकरड़ी पर उगते हुए देखा है। इसी प्रकार आने वाले समय में संस्कारी धर्म से विमुख होंगे। हम वीतराग भगवान की संस्कृति में जी रहे हैं। हमारी संगत किन लोगों के साथ है, यह चिंतन का विषय है।

सातवें स्वप्न के विषय पर फरमाया कि स्वप्न में जैसे किसान अच्छी किस्म के बीजों को ऊसर भूमि में डाल रहा था वैसे ही लोग नाम के लिए दान देंगे। दान देकर भूल जाएँ उसकी महिमा होती है।

आठवें स्वप्न में कुंभ के दृष्टांत में बताया कि अच्छे साधुओं की उपेक्षा होगी और स्वच्छंद समझौतावादियों का बोलबाला होगा। भगवान की देशना 16 प्रहर तक चली। आज आराधना का दिवस है। भगवान महावीर की आज्ञा को लक्ष्य बनाएँगे तो दीपावली मनाना सार्थक होगा। जहाँ प्रेम हो, नारियों की पूजा होती हो, जहाँ शांति-समाधि हो, वहाँ लक्ष्मी रहेगी।''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव के दर्शन से रोम-रोम खिल जाते हैं, लेकिन हमने ऐसा कितनी बार अनुभव किया? हमें सोचना चाहिए कि हमारा आचरण किसी को प्रसन्न करने वाला है या पीड़ा पहुँचाने वाला है। हमारा विनय कैसा है? इसका हमें परीक्षण करना चाहिए। विनीत शिष्य गुरु के निर्देशों का पालन करने वाला होता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

सम्यक् दर्शन दुर्लभ है

2 नवंबर 2024। मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में भगवान महावीर की अमृतदेशना से जन-जन के हृदयों को अमीय शीतलता प्रदान करते हुए आगममर्मज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में '***महावीर भगवान देना सद्ज्ञान जी***' गीत के साथ फरमाया कि **''सम्यक् दर्शन दुर्लभ है। सम्यक् दर्शन की प्राप्ति हो जाए तो जीवन की भोर है। सब कुछ चला जाए, पर सम्यक् दर्शन बचा रहे तो मोक्ष प्राप्त करने में देर नहीं लगेगी। आचार्य सुधर्मा स्वामी आज के दिन आचार्य पद पर आसीन हुए थे। आचार्य सुधर्मा स्वामी का महान उपकार है कि उनके द्वारा रचित द्वादशांगी उपलब्ध है। जंबू स्वामी की वचनावली में ये आचार्य परंपरा हम तक पहुँच पाई। इस प्रकार जिनशासन में उत्थान वाले बनें, पतन वाले नहीं। आज वीर संवत् का नया वर्ष शुरू हो रहा है। इस अवसर पर आप क्या नया करेंगे? श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का पहला अध्ययन अर्थ सहित करना है। हम जिनकी पूजा-भक्ति करते हैं, उनका आचार-विचार मालूम होना चाहिए। इससे धन्य-धन्य बनेंगे, रसायन बनेंगे और सुलभबोधि होंगे। परिवार में, समाज में उतार-चढ़ाव हो जाता है, तनाव आ जाता है। उस स्थिति को कितने समय रखना? रात को सोने से पूर्व खमतखामणा करके सोना चाहिए, जिससे हमारा सम्यक् दर्शन सुरक्षित रहे। संवत्सरी को भी वैर-विरोध बना रहा तो सम्यक् दर्शन सुरक्षित नहीं रहेगा। न तो वैर-विरोध बढ़े और न ही सम्यक् दर्शन घटे। कितने प्रत्याख्यान किए यह महत्त्वपूर्ण नहीं, पर सम्यक् दर्शन नहीं हो तो त्याग का महत्त्व नहीं। हमारे आराध्य का निर्वाण हो चुका है। उनका आदर्श सम्मुख रखते हुए ऐसा लक्ष्य बनाना है कि 'मेरा वह दिन धन्य होगा जब आठ कर्मों से मुक्त बनूँगा। मेरे अंदर शत्रुता का भाव नहीं पनपना चाहिए।' ऐसा अभ्यास नए साल से शुरू करें।''**

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का मूल पाठ व पठन श्री रामसुमन मुनि जी म.सा. ने फरमाया तथा 36वें अध्ययन का वाचन आचार्य भगवन् ने खड़े होकर फरमाया।

सम्यक् बोध जीवन को नई दिशा देता है

3 नवंबर 2024। '***मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान***' भक्ति भजन की मधुर पंक्तियों के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि पूर्व में हमने चाहे कैसे भी कर्म किए हों, लेकिन भगवान की वाणी, भगवान का सान्निध्य हमको तिराने वाला है। भगवान की वाणी सुनकर रोहिणेय चोर का मन बदल गया। जहाँ आवश्यकता होती है, वहाँ बोलने से आपकी बात सब ध्यान से सुनेंगे। किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक चीज जरूरी है। वह यह कि हमें बोध होना चाहिए कि मैं कहाँ गलत हूँ। गलती का बोध होना हमें आगे की दिशा देता है। भगवान की वाणी ने लाखों लोगों को संसार से पार लगाया है।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मुनि याचना परीषह को जीतने वाला होता है। चिकित्सा, मुनि के लिए 52 अतिचार में से एक है। मन शंकाग्रस्त नहीं हो, इसके लिए गुरु से समाधान प्राप्त करना चाहिए। चाहे कैसी भी परिस्थिति आ जाए, मुनि को चिंतित नहीं होना चाहिए। जब हम स्थानक या धार्मिक स्थानों पर जाएँ तो साज-सज्जा से नहीं अपितु विवेक से जाएँ। चाहे कोई कितनी ही प्रशंसा करे, हमारे अंदर अहं भाव पैदा नहीं होना चाहिए। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

भगवान की वाणी जीवन परिवर्तनकारी होती है

4 नवंबर 2024। धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान की वाणी हमारे लिए सीढ़ी है, जिसके सहारे हम ऊपर चढ़ सकते हैं। भगवान महावीर की सभा में सभी कुल, जाति का प्रवेश खुला है। संयम जीवन को देखने मात्र से बहुत प्रेरणा मिलती है। भगवान की वाणी जीवन बदलने वाली होती है। यदि हम जिनवाणी को जीवन में उतार लेंगे तो चारों गतियों से बचाव हो जाएगा। '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' के अंतर्गत संयति राजा चारित्र भाग का सुंदर वर्णन आपश्री जी ने फरमाया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवनभर चोरी करने वाले रोहिणेय चोर का मन भगवान के वचनों को श्रवण करने के बाद बदल गया। इससे प्रेरणा लेकर सोचें कि हम जीवनभर धर्मात्मा कहलाने वाले कैसे-कैसे काम कर रहे हैं। मनुष्य होना दुर्लभ नहीं है। मनुष्यत्व आना अतिदुर्लभ है। हमने इस संसार में बहुत भ्रमण कर लिया, किंतु आज तक हासिल कुछ नहीं किया।

महिला मंडल ने '***जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है***' गीत की प्रस्तुति दी। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। 108 अठाई के आह्वान से प्रेरित होकर कई भाई-बहन लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

शरीर नहीं, आत्मा को देखें

5 नवंबर 2024। मंगलमय प्रार्थना से दिन के शुभारंभ से आत्मतृप्ति के पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्म का मर्म समझाते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने '***चार दिन की जिंदगानी पंछी, जब जब उड़ा अकेला उड़ा***' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि भगवान की वाणी संसार सागर से पार लगाने वाली है।

आपसे पहले बहुत सारे लोग पार हो चुके हैं और आज के बाद व आपके बाद भी बहुत सारे लोग ऐसे होंगे जिन्होंने आपसे बढ़कर काम किया। जीवन को व्यर्थ बिताने से आत्मा कलुषित होती है और साधु बनने से आत्मा हलकी होकर भवभ्रमण सीमित होता है। जैसा हम सोचते हैं वैसा हमारा जीवन बन जाता है। बच्चों को दिए गए संस्कार व्यर्थ में नहीं जाते। सारे लक्ष्यों में से एक लक्ष्य होना चाहिए कि हमने शरीर, परिवार, समाज के लिए बहुत कुछ किया, किंतु अब अपनी आत्मा के लिए कुछ करें। यदि आपने अन्यों के लिए बहुत कुछ किया, किंतु आत्मा के लिए कुछ नहीं किया तो वास्तव में आपने कुछ भी नहीं किया। निरंतर किया गया कार्य परिणामदायक होता है। सांसारिक गतिविधियाँ हमारा कल्याण नहीं करेंगी। आध्यात्मिक गतिविधियाँ हमारा कल्याण करने वाली हैं। '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' चारित्र भाग का सुंदर वर्णन आपश्री जी ने फरमाया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब तक शरीर का अंत न हो, तब तक सम्यक् आराधना करने वाले बनें। हमें सोए हुए जीवों के बीच में रहते हुए भी जागृत रहना चाहिए। महिला मंडल ने भक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री व समता युवा संघ अध्यक्ष ने त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। लंदन से नीतू जी चोपड़ा सहित सैकड़ों गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु देशनोक संघ ने भावभरी विनती प्रस्तुत की।

ज्ञान पंचमी ज्ञान का प्रकाश फैलाएँ

6 नवंबर 2024। '***मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान***' की सामूहिक प्रार्थना से संपूर्ण माहौल भक्तिमय हो गया। राजकीय प्राथमिक विद्यालय परिसर में आयोजित प्रवचन सभा में धर्मपिपासु गुरुभक्तों को धर्म का अमृत प्रदान करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी में -

है ज्ञान पंचमी ज्ञान प्रकाश फैलावें।
अज्ञान तिमिर को दूर हटा ज्ञान विकसावें।।

गीत के पश्चात् फरमाया कि "**गुरु कौन है? जो ज्ञान का प्रकाश देते हैं। जो वस्तु जैसी है वैसी बताने वाले गुरु हैं। ज्ञान की शक्ति मात्र सीखने तक सीमित नहीं रहती। ज्ञान वह शक्ति है, जो दु:ख का भेदन करने वाली है। ज्ञान तो प्रकट हुआ, पर मोह कम नहीं हुआ तो दु:ख पैदा होगा। ज्ञान का उद्देश्य मोह का विनाश है। ज्ञान से मोह पैदा हो रहा है तो वह ज्ञान नहीं अज्ञान है। ज्ञान पंचमी की आराधना ज्ञान बढ़ाने हेतु करें। इसमें प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष की पंचमी को उपवास करना होता है। उपवास के दिन नमो नाणस्स की 21 माला, 21 णमोत्थु णं, 51 लोगस्स का ध्यान करना है। यह परिपाटी 5 साल 5 महीने में पूरी होती है।**"

1 जनवरी से 21 जनवरी 2025 तक 14 वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित बालक-बालिकाओं का '**तत्त्व अवगाहन शिविर**' के माध्यम से तत्त्वज्ञान प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है। प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम सैकड़ों भाई-बहनों ने लिया।

धर्म जीवन का प्राण है

7 नवंबर 2024। मंगल प्रभात के पावन क्षणों में भक्ति से भरपूर प्रार्थना के स्वर मुखरित हुए। प्रवचन

सभा में स्थानीय सकल जैन समाज सहित देशभर से पधारे सैकड़ों गुरुभक्त गुरुमुख से निसृत होने वाले अमृत वचनों से अपने जीवन को पावन करते हुए लालायित थे। इस धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**सुख की कामना करने वाला जीव कभी भी सद्गति को प्राप्त नहीं करता। साधु को हर परिस्थिति में सम रहना चाहिए। श्रावकों को भी अनुकूलता में खुश और प्रतिकूलता में दुःखी नहीं होना चाहिए। हमें यह विचार करना चाहिए कि मेरे से कम सुविधा वाले लोग भी हैं। जिस मोती का पानी उतर गया हो, उसकी कोई कीमत नहीं होती। उसी प्रकार जीवन से धर्म चला गया तो उस जीवन की कोई कीमत नहीं होती। धर्म हमारा प्राण है। धर्म के लिए ही जीना है और धर्म के लिए ही मरना है।**''

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आपको वैभव पाना हो तो बाहरी पदार्थों से किनारा करना होगा। जिंदगी क्षणभंगुर है। कब क्या हो जाए, कहा नहीं जा सकता। समय रहते हम जागृत हो जाएँ।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत फरमाया। जीतो के चेयरमैन पृथ्वीराज जी कोठारी, ललित जी डांगी, सेक्रेटरी जनरल कमलेश जी सहित संघ के कई गणमान्यजनों ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के दर्शन-वंदन का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। जीतो (समग्र जैन समाज की संस्था) ने आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की प्रेरणा से हर वर्ष 9 अप्रैल को '**विश्व नवकार दिवस**' के रूप में मनाने का संकल्प लिया।

अपनी पहचान करो

8 नवंबर 2024। भोर की पावन बेला में '***तू सांचो, थारो सांचो है दरबार रे***' गीत की पावन शब्दावली कर्णगोचर हुई तो जन-जन का मन पावन हो गया। सभी ने इस भजन का सामूहिक उच्चारण कर अपने भावों को धर्म में रँग लिया। प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संसार की असारता से अवगत कराते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**अपना कौन है और पराया कौन, इसकी समीक्षा हमें धर्म सिखाता है। अपनी पहचान करो और तुम्हारा क्या है, उसे पहचानो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' संपूर्ण संसार को एक कुटुंब के समान समझना चाहिए और प्राणिमात्र को अपना मानना चाहिए। धर्म कहता है कि तुम्हारा शरीर भी तुम्हारा नहीं है, जिसको भी आप मेरा कह रहे हो, वो भी कभी आपका नहीं बना। जो हमारा है वो हमारे से कभी अलग नहीं होगा, भले ही हमने उसको भुला दिया हो। हमारा ज्ञान, दर्शन, चारित्र तो है ही, उस पर हमारा ध्यान नहीं जा रहा। जो हमारा नहीं है, उसको हम अपना बनाने की कोशिश करते रहते हैं। शरीर छूटने वाला है और आत्मा रहने वाली है।**''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य भव मिला है। मन, वचन, काया के व्यापार में हमने कितना उपकार किया है। संसार का लाभ लिया है या अध्यात्म का? कितना लाभ लिया है, चिंतन करें। साध्वी श्री अविरल श्री जी म.सा., साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '***ओ मेरे राम गुरु***' भक्ति गीत प्रस्तुत किया। दो दिवसीय थोकड़ों के शिविर में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने मार्गदर्शन दिया। अ.भा. श्वेतांबर नानक श्रावक समिति प्राज्ञ जैन संघ के अध्यक्ष संपतराज जी चपलोत ने गुरुदर्शन, सेवा का लाभ लिया।

एकमात्र आत्मानुभूति में जीएँ

9 नवंबर 2024। प्रात:कालीन प्रार्थना में '***नवम् पट्टधर प्यारा रे, राम गुरु म्हारा रे***' भक्ति भजन का सामूहिक संगान सभी ने भावातिरेक होकर किया, जिससे हर कोई गुरु राम के रंग में सराबोर नजर आया। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल राजकीय प्राथमिक विद्यालय परिसर में आयोजित धर्मसभा में कषायों से तप्त हृदय स्थलों को धर्म की शीतलता से पावन करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हमारा व्यवहार तीन प्रकार का है– हेय, ज्ञेय, उपादेय। पदार्थ का ज्ञान करना, जानना, उसमें यह समझना कि कौनसा पदार्थ छोड़ने योग्य है और कौनसा स्वीकार करने योग्य। जानने के लिए बहुत सारे विषय हो सकते हैं। उनमें हमारे लिए उपयोगी क्या है उसको ग्रहण करना और जो उपयोगी नहीं है उसको छोड़ना। सामान्यतया व्यक्ति सुख के साधन चाहता है। भौतिक सुख स्थायी सुख देने वाले नहीं हैं, इनमें क्षणिक सुखाभास है। बाहर के जितने भी पदार्थ हैं वे आत्मा को सुख देने वाले नहीं हैं। धर्म हमें बताता है कि किसे ग्रहण करना और किसे छोड़ना है। संपत्ति साथ में जाने वाली नहीं है। माया है तो भय लगेगा और माया से मुक्त हो गए तो भय नहीं लगेगा। यदि धन के प्रति लगाव नहीं है तो कोई विपत्ति खड़ी नहीं होगी। संसार में, घर में, परिवार में, समाज में बहुत कुछ किया। अब क्या करना बाकी है, उस पर चिंतन करें। जो करना था वह नहीं किया। आनंद श्रावक ने मन को टटोला कि साधु तो नहीं बन सकता, किंतु घर का त्याग करना संभव है। एकमात्र आत्मानुभूति में जीना है। मुझे अब साधना में समय लगाना है। आत्मिक शांति समाधि के लिए आगे बढ़ना है।**'' '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' चारित्र भाग का सटीक विवेचन आपश्री जी ने फरमाया।

विहार सेवाकर्मी प्रशिक्षण शिविर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने विश्व नवकार दिवस 9 अप्रैल को नवकार मंत्र की नौ माला फेरने की प्रेरणा दी। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. एवं श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने का मार्गदर्शन दिया। श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने गोचरी के नियम संबंधी कई जानकारियाँ दीं। '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' अभियान के अंतर्गत राजकीय उच्च माध्यमिक शाला, सांगानेर में संस्कार जागरण व्यसनुमक्ति कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सम, संवेग, निर्वेद से शांति व समाधि की प्राप्ति

10 नवंबर 2024। रविवार का अवकाश और दयानिधि, कृपानिधान, परम कृपालु आचार्य भगवन् का पावन सान्निध्य, ये दोनों ही संयोग भक्तों को आह्लादित करने वाले हैं। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त '**रविवारीय समता शाखा**' के अंतर्गत आज के पावन दिवस पर सैकड़ों गुरुभक्तों ने एक साथ समता आराधना कर जीवन को धर्म के मार्ग पर और दृढ़ किया।

रविवारीय समता शाखा में आराधना पश्चात् संयम सुमेरु आचार्य भगवन् के पावन मुखारविंद से भगवान महावीर की अमृतवाणी श्रवण करने का सौभाग्य धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को प्राप्त हुआ। महत्तम शिखर महापुरुष आचार्यदेव ने अपनी पावन अमृतवर्षिणी वाणी में फरमाया कि ''**सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्था से सराबोर जीवन सत्य, सापेक्ष, शांति व समाधि देने वाला होता है। सभी झंझावात दूर हो जाते हैं। कोई कितना भी आक्रोश करे, लेकिन हमारे मन में विपरीत विचार पैदा नहीं होने चाहिए। क्षमाभाव बनाए रखें। क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उपकार। बड़प्पन रखना, छोटापन नहीं रखना। समभाव व समता की**

आराधना करनी होगी। समभाव जितना गहरा होगा उतना ही आनंद रहेगा। आत्मभाव में रहना है और मैं कौन हूँ इसकी पहचान करनी है। 'तूँ सो प्रभु, प्रभु सो ही तूँ है'। दुकान से व्यक्ति वही वस्तु लेता है जो उसे चाहिए। स्वयं के पास धर्म-ध्यान, सामायिक, थोकड़ों आदि का जो खजाना है उसका भान नहीं है। दुनिया का सारा धन मिलने पर भी मन शांत नहीं होने वाला। बस अंतर् में शांति रहनी चाहिए। भीतर की ताकत बहुत बड़ी है। जिनका जीवन सधा हुआ है उनके लिए जीवन की एक तरंग भी बहुत मूल्यवान होगी। जिसका जीवन सत्य से ओत-प्रोत होता है उसके विचार गलत नहीं हो सकते। भक्ति में, आत्मभावों में लीन रहना चाहिए। बाहर की संपत्ति को लूट सकते हैं या वो चोरी हो सकती है। आंतरिक वैभव, सामायिक, प्रतिक्रमण, थोकड़ों की संपत्ति कोई लूट नहीं सकता। संसार के पुद्गलों में रस नहीं है। आत्मवृत्तियों की तरफ दृष्टि बन जाए तो संसार की वस्तुएँ रस वाली नहीं लगतीं। संयति मुनि के जैसे संयम में रमण करना चाहिए। वीर पुरुष घबराते नहीं, अपितु चुनौतियों को स्वीकार करते हैं।'' '***पैसो प्यारो रे दुनिया में लागै मोहनगारो रे***' भजन जैसे ही आचार्यदेव के श्रीमुख से उच्चरित हुआ संपूर्ण सभा भावविभोर हो गई। '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' द्वारा धर्मसभा को बोध दिया। प्रवचन पश्चात् अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए एवं आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया। समवसरण-सा अद्भुत ठाठ देखने को मिला।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अहं भाव त्यागकर गुरुवंदन का लक्ष्य रखें। श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मोह, ममत्व संसार में भटकाता है। हमें अपने शरीर की ओर नहीं, अपनी आत्मा की ओर देखना है। आत्मा को जीतने वाला सच्चा वीर है। साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य 36 गुणों के धारक होते हैं। आचार्य का गुणगान करना शास्त्रों में महान पुण्य का हेतु बताया है। साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा., साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '***गुरुवर देशाणे वाले, सबको तारने वाले***' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ सहमंत्री एवं महेश नाहटा ने 15 रंगी सामायिक व 112 अठाई पूर्ण होने की जानकारी दी। महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत हजारों भाई-बहनों ने 9 फरवरी तक 9 नवकार, 9 लोगस्स एवं 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना करने का नियम लिया।

15 रंगी सामायिक के अनूठे आयोजन में भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। जयपुर एवं नागौर संघ ने आगामी दीक्षा प्रसंग, चातुर्मास, महत्तम महोत्सव, होली चातुर्मासिक पर्व की भावभरी विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। परम गुरुभक्त सोहनलाल जी पिछोलिया (रतलाम) के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेश जी गोधा, कार्यकारिणी सदस्यों एवं अग्रवाल, माहेश्वरी, ब्राह्मण सहित अन्य अनेक समाज के धर्मप्रेमियों ने गुरुदर्शन कर प्रवचन श्रवण का लाभ लिया।

निरंतरता से लक्ष्य की प्राप्ति

11 नवंबर 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में '***मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान***' एवं '***श्री राजेश मुनि को वंदन-अभिनंदन है***' की मधुर ध्वनि के साथ देव, गुरु, धर्म को समर्पित प्रार्थना से गुणानुवाद किया गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान की आराधना दु:ख से मुक्त करने वाली है। प्रत्येक कार्य निरंतरता की मांग करता है। निरंतरता से

किया गया कार्य फलदायक होता है। फल की कामना करते हैं, लेकिन निरंतरता को बरकरार नहीं रखने से वह निष्पत्ति तक नहीं पहुँच पाता। जिंदगी में हमेशा वह नहीं जीतता जिसकी स्पीड अच्छी होती है, जीतता तो वह है जो निरंतरता से जुटा रहता है। आप कभी भी असफल नहीं होते। या तो आप सफल हो जाते हैं या सीखते हैं। शिखर पर पहुँचना कठिन नहीं, शिखर पर बने रहना कठिन होता है। नेतृत्व वह नहीं है, जो तीव्रता से मंजिल प्राप्त करता है। सफल नेतृत्व वह है, जो अपने अनुयायियों को साथ लेकर चलता है। '**सबका साथ सबका विकास**' के ध्येय के साथ निरंतर पुरुषार्थ करते रहें तो सफलता मिलेगी ही।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समयमात्र का भी प्रमाद मत करो। जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है।

धर्म की महिमा अपरंपार

12 नवंबर 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में प्रभु भक्ति पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में भक्तों के भगवान की एक झलक पाने हेतु अपार जनसमुदाय उमड़ पड़ा। इस धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म की महिमा अपरंपार है, जिसका कोई पार नहीं पाया जा सकता। धर्म से ही सूर्य टिका हुआ है। धर्म से ही धरती ठहरी हुई है। यहाँ तक बताया जाता है कि जब लवण समुद्र से तरंगें उठती हैं तो हजारों देव उस पानी को दबाने की कोशिश करते हैं कि वह पानी जंबूद्वीप में प्रवेश न कर पाए। भगवान से पूछा गया कि क्या देव इस पानी को रोकने में समर्थ होते हैं या और कोई कारण है? भगवान ने बताया कि जब तक धर्माराधना करने वाले शीलवंत नर-नारी जंबूद्वीप में मौजूद हैं तब तक उनके तप, अहिंसा, सत्य के प्रभाव से वह पानी जंबूद्वीप में प्रवेश नहीं कर पाता। उस अदृश्य शक्ति का हम अनुभव नहीं कर पाते। वह शक्ति हमें दिख नहीं पाती। रेडिएशन की किरणें हमें अपनी आँखों से नहीं दिखतीं, किंतु उनका प्रभाव होता है। मोबाइल चलता है तो तरंगें नजर नहीं आतीं। वैसे ही धर्म का महत्त्व है। वह अदृश्य है, हमें मालूम नहीं पड़ता। धर्म का प्रभाव हमें अनुभूत होना चाहिए।**

धीरज, धर्म, मित्र और नारी, आपत्ति काल परखिए चारी।

धर्म की परीक्षा विपत्ति के समय, कठिनाई के क्षणों में होती है। कठिनाई के समय हमारा धर्म और धैर्य बना रहा तो हम कह सकते हैं कि हमारे भीतर धर्म की शक्ति कारगर है। मान-सम्मान मिले तो घमंड नहीं करना और कोई अपमान, तिरस्कार करे तो मन खिन्न नहीं होना चाहिए। ये ज्ञान हमें धर्म सिखाता है। चातुर्मास में आपने अपने आपको कितना स्थिर किया? चंचल चित्त को कितना शांत बनाया? कितना धैर्य आया या छोटी-छोटी बातों में अधीर बन गए?'' '**वैराग्य ज्योति को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' चारित्र भाग का सुंदर विवेचन आपश्री जी ने फरमाया एवं प्रेरणाएँ दीं।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इंद्रिय आसक्ति में रहने वाले को ज्ञान जल्दी नहीं चढ़ता। इंद्रियों का निग्रह करना चाहिए। साध्वी श्री मृणाल कँवर जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुकृपा से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। देव, गुरु, धर्म के प्रति हमारी अटूट आस्था होनी चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री एवं सहमंत्री ने 3 दिसंबर की दीक्षा हेतु विनती प्रस्तुत की। दोपहर में अरिहंत इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने कभी किसी से नहीं

डरने, कभी किसी को नहीं डराने, कभी किसी की हँसी नहीं उड़ाने की प्रेरणा दी।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने भगवान पर अटूट श्रद्धा और आस्था रखने एवं अपने नियम में मजबूत रहने की प्रेरणा दी। श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने साधु जीवनचर्या की जानकारी दी। विद्यार्थियों ने व्यसनमुक्ति के साथ माह में 4 दिन रात्रि भोजन का त्याग और किसी भी परिस्थिति में आत्महत्या न करने का संकल्प लिया।

पूर्व न्यायाधीश प्रकाश जी पगारिया (उदयपुर) ने दर्शन-वंदन का लाभ लिया। सिरकाली संघ ने चातुर्मास की विनती प्रस्तुत की। आज सामूहिक दया का आयोजन किया गया।

आत्मा की बीमारी राग-द्वेष व कषाय

13 नवंबर 2024। मंगलमय प्रार्थना में '***मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान***' भजन के साथ अपूर्व भक्ति का आनंद लेने के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति से नयनाभिराम दृश्य अवलोकित हो रहा था। उच्च पाट पर विराजित आचार्य भगवन् के पावन दर्शनों से तृप्त हृदयों में धर्म का बीज वपन करते हुए व्यसनमुक्ति के प्रणेता, सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने उपस्थित जनसमूह को अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि '' **हमारे अधीन शांति है। शांति स्वाधीन है और अशांति पराधीन। जब हम अपने में होते हैं तो शांत, समाधिस्थ एवं स्वस्थ होते हैं, लेकिन जब हम दूसरे में प्रवेश करते हैं तो अशांत हो जाते हैं। अनादिकाल से पुद्गल के साथ हमारा संबंध जुड़ा हुआ है। पौद्गलिक विषयों के प्रति हमारा अनुराग बना रहता है। ये ही हमें अशांत और अस्वस्थ बनाते हैं। धर्म की आराधना हमें स्वस्थ बनाने वाली है। आत्मा की बीमारी क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष हैं। जब हम दूसरों की तरफ देखते हैं तो क्रोध पैदा होता है। वो ऐसा कर रहा है, वो ऐसा नहीं कर रहा, उसे ऐसा करना चाहिए था, आदि विचार आत्मा को मलिन करते हैं। यदि किसी दूसरे को नहीं देखें तो क्रोध पैदा नहीं होगा। जब तक दूसरों के दोषों को देखते रहेंगे, दूसरों की कमियों को देखते रहेंगे तब तक हमारा अहंकार बना रहेगा। माया है दूसरों से छिपाना। अपनों से कुछ छिपाया नहीं जा सकता। जो प्राप्त नहीं है उसे प्राप्त करने की इच्छा करना लोभ है। जैसे-जैसे लाभ बढ़ता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है। जो बंधनों से मुक्त होकर अपने आपको जीत लेता है, वह वीर है।**''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सच्चा शिष्य वो है जो लुकाव, छिपाव नहीं करता, चंचलता रहित होता है और गुरु के इंगित इशारों पर चलता है। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक वक्ताओं ने महापुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त किए। रतलाम, भीम, चिकारड़ा, कालियास आदि संघों ने विनती प्रस्तुत की। ओम शांति सेवा संस्थान वृद्धाश्रम के बहन-भाइयों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर दर्शन लाभ लिया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री राजन मुनि जी म.सा. ने स्वाध्याय की प्रेरणा दी। दिगंबर आचार्य श्री सुंदरसागर जी महाराज, मुनि श्री शुभम्कीर्ति जी महाराज, श्री सुगमसागर जी महाराज, श्री सुलक्ष्यसागर जी महाराज, श्री अज्ञेयसागर जी महाराज, श्री सुज्ञानसागर जी महाराज ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से विभिन्न विषयों पर चर्चा की। पक्खी प्रतिक्रमण करने का नियम कई भाई-बहनों ने सभा में आचार्य भगवन् के मुखारविंद से ग्रहण किया।

अच्छाई की शुरुआत स्वयं से होती है

14 नवंबर 2024। सूर्योदय के साथ ही मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरु आराधना की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्क्रांति प्रदाता, महत्तम महापुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में

फरमाया कि ''**मान व अपमान दोनों को एक समान गिनना चाहिए। कोई मान करे तो भला, कोई अपमान करे तो उसका भी भला। मान-सम्मान मोह कर्म की प्रकृतियाँ हैं। हम मान में फँसते हैं तो भी नुकसान और अपमान में फँसते हैं तो भी नुकसान है। फायदा तो केवल समभाव में है। तुम्हारे साथ कोई कितना ही बुरा करे, बुरा बोले, किंतु तुम उसे जवाब मत दो और मन में भी उथल-पुथल नहीं होने देना। कभी भी मन में उथल-पुथल हो तो भी मुँह से गाली नहीं देना।**

देता गाली एक है पलटे होत अनेक। जो गाली पलटे नहीं, रहे एक ही एक।।

दूसरों को उपदेश देना बहुत आसान है। अपने आपको आदेश देना और समझना बहुत कठिन काम होता है। जो अपने आपको समझा लेता है वह दुनिया में सुखी है। अच्छाई की शुरुआत स्वयं से होती है। भगवान महावीर ने पहले स्वयं को समझा लिया, तब उन्होंने दूसरों को उपदेश देना प्रारंभ किया।'' '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' संयति राजा चारित्र भाग का सुंदर वर्णन करते हुए आपश्रीजी ने अनेक प्रेरणाएँ दीं।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य में मिथ्यात्व व अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता महिला मंडल ने विदाई गीत प्रस्तुत किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेंद्र जी गांधी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह चातुर्मास ऐतिहासिकता से परिपूर्ण है। '**समता सर्व मंगल**' एवं '**समता प्रभातम्**' आयाम से जुड़कर अपना जीवन धर्म मार्ग पर अग्रसर करें। स्थानीय संघ मंत्री एवं सहमंत्री ने चातुर्मास की उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। पाँच विगय में से प्रतिदिन एक विगय का 9 फरवरी तक त्याग करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। बोहेड़ा संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में रखी। आर.सी.एम. ग्रुप के चेयरमैन प्रकाशचंद जी छाबड़ा, निरी नागपुर से भारत सरकार के विशिष्ट साइंटिस्ट डॉ. रितेश विजय जी एवं इंजी. अमित जी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

देव, गुरु, धर्म जीवन के आधार हैं

15 नवंबर 2024। हृदय स्पंदित करने वाली प्रार्थना की पंक्तियों का सामूहिक उच्चारण कर सभी जन आनंद विभोर हो गए। आज चातुर्मास का अंतिम दिवस होने से प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों की विशेष उपस्थिति परिलक्षित हो रही थी। संपूर्ण प्रवचन पंडाल खचाखच भरा था। इतनी विशाल जनमेदिनी के बाद भी चारों तरफ पूर्णत: शांति थी। हर कोई अपने कर्णकुहरों को गुरुवचनों से पावन करने हेतु अतिउत्साहित दिख रहा था। सभी के मन के एक ही भाव धड़कने बढ़ा रहा था कि अपूर्व सौभाग्य से मिला चातुर्मास अब अपने अंतिम चरण में पहुँच चुका है और कल इस स्थल पर आचार्य भगवन् की पावन अमृतदेशना श्रवण करने का लाभ नहीं मिल पाएगा। हर कोई आचार्य भगवन् के पावन वचनों को हृदयांगम कर अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध करने की ओर अग्रसर था।

आज की धर्मसभा में अपनी पतित पावनी वाणी से धर्म गंगा का अमृतपान कराते हुए दयानिधान, कृपानिधि, महत्तम महापुरुष, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने -

चातुर्मास अब पूर्ण हुआ है, मुनिगण करे विहार।
मित्रों रखना धर्म से प्यार।।

भजन के साथ फरमाया कि ''**प्रारंभ व पूर्णता प्रत्येक कार्य के साथ जुड़े हुए हैं। चातुर्मास प्रारंभ हुआ और अब पूर्णता की ओर है। अभी उपाध्यायश्री जी फरमा गए कि 'किसी भी पदार्थ का हमारे जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव होना चाहिए।' इसकी गहराई को समझें। क्षमता को कभी भुलाना नहीं चाहिए। धर्म की आराधना का अर्थ क्या है? समत्व भाव को हमने अपने भीतर स्वीकार किया है। क्षमता को हमने बढ़ाया है। वह क्षमता हमारे भीतर निरंतर बनी रहनी चाहिए। जीवन में मन के अनुकूल व प्रतिकूल प्रसंग आएँगे, पर उस समय हमारा मन विचलित नहीं होना चाहिए। निंदा व प्रशंसा दोनों स्थितियों में मन में ऊहापोह नहीं होना चाहिए। यह चातुर्मास की उपलब्धि होगी। साधुओं की संगति हमारे जीवन को आनंदित करने वाली हो। नहीं तो चातुर्मास आया और चला गया, लेकिन अर्थ कुछ नहीं निकला। अपनी क्षमता को खूब बढ़ाएँ। इतना बढ़ाएँ कि हम आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा की श्रेणी को प्राप्त कर सकें। यह सामर्थ्य हम में मौजूद है। कोई भी आत्मा ऐसी नहीं है जो महात्मा और परमात्मा नहीं बन सकती। चातुर्मास के बाद निरंतर स्थानक में आने से ज्ञात होगा कि हमारी निरंतरता क्या है? वीतराग हमारे देव हैं, गुरु निर्ग्रंथ हैं और धर्म हमारा अहिंसा प्रधान है। देव, गुरु, धर्म मेरे जीवन के आधार हैं। फिर जीवन में कहीं पर भी कोई कठिनाई नहीं आएगी। अगर आई भी तो हमारा रास्ता नहीं रोक पाएगी।**''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**किसी भी पदार्थ का प्रभाव दीर्घकालिक होना चाहिए। जीवन में जो सकारात्मक परिवर्तन आए वह लंबे समय तक टिका रहे, तभी चातुर्मास की सार्थकता है। संघ सेवा और संघ विकास में आगे हम और क्या कर सकते हैं, इस पर चिंतन करते हुए निरंतर भागीरथी पुरुषार्थ करें।**''

साध्वी श्री जयघोषा श्री जी म.सा. ने भीलवाड़ा के सफलतम चातुर्मास पर सुंदर काव्य रचना फरमाई। साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु से बढ़कर संसार में कोई नहीं।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. ने फरमाया कि सकारात्मक सोच और ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप से सिद्धि मिलती है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने प्रेरक उद्‌बोधन दिया। समता युवा संघ के सदस्यों ने अपनी भावाभिव्यक्ति में '***काहे मेरी नगरी से जाते हो गुरुवर, मन की नगरी में हमको रखना सदा***' के भक्तिभाव प्रस्तुत किए। संघ अध्यक्ष, मंत्री, सहमंत्री, चातुर्मास संयोजक, परिवहन समिति सदस्यों, अरिहंत भवन अध्यक्ष सहित अनेक वक्ताओं ने अपने भाव रखते हुए अविनय, असातना के लिए क्षमायाचना की।

संघ मंत्री व महेश नाहटा ने चातुर्मास की उपलब्धियों का जिक्र किया। संपूर्ण सभा ने महापुरुषों के प्रति अहोभाव से पूरित होते हुए सदैव कृपादृष्टि बनाए रखने की विनती की। समता युवा संघ, बहू मंडल, बालिका मंडल ने समता शाखा के साथ प्रत्येक रविवार को स्वाध्याय करने एवं कई भाई-बहनों ने वर्ष में 100, 200, 300, 500 सामायिक करने का संकल्प लिया। बीकानेर, सवाई माधोपुर संघों एवं अन्य समाज के प्रमुखों ने आगामी चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा, साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '***हुक्मसंघ की राम राम, गुरु महाराज आपकी जय हो***' गुरुभक्ति की आत्मविभोर प्रस्तुति दी।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री इभ्य मुनि जी म.सा. — 9 उपवास (इस चातुर्मास में 9वीं अठाई पूर्ण)

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	कांतिलाल जी ज्योति देवी ओस्तवाल–शिलोड़, पारस जी बोहरा–शिलोड़, ताराचंद जी बाघमार–सूरत, दौलत जी सुधा देवी सिंघवी–उदयपुर, लालाराम जी कोटड़िया–मेड़ता सिटी, दीपक जी चंदा जी रुणवाल–वरणगाँव, गोवर्धनलाल जी परमार–भाटीसूड़ा, रतनलाल जी परमार–नागदा जंक्शन, मनोज जी कविता जी कांकरिया–बेंगलुरु, शांतिलाल जी मीना देवी संचेती–भानपुरी फरसागुड़ा, मदन जी जैन–गढ़ हिम्मतसिंह, भगवान सिंह राठौड़–जोधपुर, लालाराम जी माली–छोटी सादड़ी, जिनेंद्र जी स्नेहलता जी भंडारी–कजाड़ा, रतनलाल जी परमार–नागदा जंक्शन, श्याम जी तिवारी–बांदा, धर्मचंद जी शशिकला जी बोथरा–गंगाशहर, हेमंत जी पोरवाल–चौथ का बरवाड़ा, हर्षाली जी हंसमुख जी दापोली, अमृतलाल जी संतोष जी नलवाया–बड़ीसादड़ी, सुरेश जी सूर्या–उदयपुर, महावीर प्रसाद जी शर्मा, मांगीलाल जी हिंदल, मांगीलाल जी धोबिया–नदेवासी, तेजमल जी सुराणा–कालियास, ओम जी जैन–मावली, गजानन जी रमा देवी शर्मा–कांकरोली, भानीराम जी सालवी–नागदा
गाथा का स्वाध्याय	**4 लाख –** चंदनमल जी सिंघी–नागदा
	1 लाख – सरला देवी नवलखा–मुंबई
वर्षीतप	राजकुमारी जी मारू, अलका जी सेठिया–जावरा, किरण जी चोपड़ा–रायपुर
उपवास	**74 –** किरण जी कोठारी–कांकरोली (82 के प्रत्याख्यान)
	31 – मोनिका जी सेठिया
	15 – शीतल जी भूरा
	9 – शांता जी संखलेचा, हिम्मत सिंह जी मुरड़िया, स्नेहलता जी मुरड़िया
	अठाई – माना देवी भूरा, विमल जी नाहटा–सूरत, विनीता जी संखलेचा, विमला जी भूरा, रतन जी देसरला, रमेश जी सेठिया–सूरत, कुसुम जी नागौरी, सीमा जी बाँठिया, रतन जी देसरला, ललिता जी लोसर, नयना देवी कुकड़ा, ममता जी देसरला, ललिता जी देसरला
एकासन	**24वाँ मासखमण –** रमेश जी बोहरा–अक्कलकुआ
संवर	**50 –** सुनील जी पगारिया–रतलाम (आजीवन चौविहार)
नवकारसी	**आजीवन –** लक्ष्मी जी श्रीश्रीमाल–कवर्धा

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा

विचारों के अनुसार ही जीवन के स्वरूप का सृजन होता है- ऐसी जैन दर्शन या कर्म सिद्धांत की निश्चित मान्यता है। वास्तव में तो वर्तमान काल के विचार ही भावी जीवन निर्माण की रूपरेखा बनाते हैं। अत: इस संदर्भ में विचारों की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है कि आज के विचार, आचार ही कल के जीवन की नींव रखेंगे। **-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.**

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को '**महत्तम शिखर वर्ष**' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनका जीवन चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चित्रण 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से प्रारंभ हुआ है। इसके अंतर्गत आचार्यदेव का संपूर्ण जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन किया जाएगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव के रूप में **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

आचार्यश्री जी द्वारा प्रदत्त आयामों की महक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के नायक, परमागम रहस्यज्ञाता, उत्क्रांति संप्रेरक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के जीवन को जानने का अवसर हमें इस धारावाहिक के माध्यम से प्राप्त हो रहा है। अब तक हम आचार्यश्री जी की बाल्यावस्था, वैराग्यावस्था, दीक्षा एवं मुनि अवस्था, मुनि प्रवर अवस्था, युवाचार्य अवस्था आदि की विभिन्न झलकियों का चित्रण शब्द रूप में पढ़ चुके हैं।

संयमी जीवन में आचार्य प्रवर का चिंतन चहुँमुखी रहा है। स्व-कल्याण के साथ-साथ आचार्य प्रवर पर-कल्याण हेतु भी सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। जन-जन के विकास व आत्मकल्याण हेतु आचार्य प्रवर ने समय-समय पर अद्भुत आयाम प्रदान किए हैं, जो समाज को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। समय और उद्देश्य का संगम हो जाए तो मनुष्य कुछ भी कर गुजरता है। इस सोच के चलते श्रावक समाज को धर्म की ओर अग्रसर करने हेतु पूर्व में आचार्य प्रवर प्रत्येक वर्ष को धर्माराधना के उद्देश्य से एक नाम देते और उस नाम के अनुसार उस वर्ष में आराधना पर चारित्रात्माओं व श्रावक-श्राविकाओं का विशेष जोर रहता था। घोषित वर्षों के नाम इस प्रकार हैं-

वर्ष	नाम	स्थान
1997	सामायिक प्रतिक्रमण वर्ष	ब्यावर
1998	समता स्वाध्याय वर्ष	उदयपुर
1999	जप-तप-नियम वर्ष	उदयपुर
2000	संघ समर्पणा वर्ष	जयपुर
2001	संस्कार समीक्षा सुधार वर्ष	गंगाशहर-भीनासर
2002	उपासना विशुद्धि वर्ष	सरदारशहर

2003-2004	श्रमणोपासक वर्ष	चित्तौड़गढ़, बड़ीसादड़ी
2005	ज्ञान चेतना वर्ष	अमरावती
2006	आत्मनिर्भर वर्ष	इंदौर
2007	ज्ञान आराधना वर्ष	रायपुर
2009	साधुमार्गी संकल्प वर्ष	दुर्ग
2010	संकल्प शाखा संयोजन वर्ष	राजनांदगाँव
2012	गुणोत्कीर्तन वर्ष	मदुरांतकम्

आचार्य प्रवर ने समय की रफ्तार को पीछे छोड़कर कई ऐसे अद्भुत कार्य किए हैं, जो इतिहास में आपश्री द्वारा प्रदत्त उनकी अनुपम देन बन गए हैं। आचार्य प्रवर ने अपने अभी तक के संयमी जीवन में भारत के 16 राज्यों में विचरण किया है। इनमें से 8 ऐसे राज्य हैं, जिनमें हुक्मसंघ की परंपरा में प्रथम बार विचरण हुआ है। ये हैं- **1. झारखंड, 2. तमिलनाडु, 3. पश्चिम बंगाल, 4. कर्नाटक, 5. आंध्रप्रदेश, 6. पुडुचेरी, 7. तेलंगाना, 8. दमन एवं दीव।**

इतना विहंगम दुर्गम क्षेत्र फिर भी संयमी जीवन के किसी एक भी नियम से समझौता स्वीकार्य नहीं था आचार्य प्रवर को। ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में दृढ़ संयम का पालन करते हुए आचार्य प्रवर ने धर्म की अलख जगाई। युवाचार्य अवस्था से अब तक आचार्य प्रवर द्वारा किए गए विचरण व कार्यों के बारे में चिंतन करें तो प्रतीत होता है कि उन्होंने समय की गति को भी मात देकर सभी कार्यों को संपन्न किया है।

आचार्य प्रवर के शासन में वर्तमान में कुल 484 चारित्रात्माएँ हैं, जिनमें 80 संत व 404 महासतियाँ हैं। इनमें से 411 दीक्षाएँ आचार्य प्रवर के सान्निध्य में संपन्न हुई हैं।

कई बार विशिष्ट दीक्षाओं के बारे में भी सुनने में आता है। राठौड़ परिवार के बेटे-बहू ने करोड़ों की संपत्ति और 3 साल की नन्हीं बच्ची को छोड़कर संयम की राह पकड़ ली। इस विशिष्ट दीक्षा प्रसंग से शायद कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। ऐसे अचंभित करने वाले अनेकानेक अवसर उपस्थित हुए हैं। जैसे दो बार चलते प्रवचन में दीक्षा का प्रसंग बना। पहला दुर्ग में एवं दूसरा रतलाम में। इन प्रसंगों पर श्री श्रीचंद मुनि जी म.सा., श्री इभ्य मुनि जी म.सा. एवं श्री ब्रह्मऋषि मुनि जी म.सा. की दीक्षाएँ संपन्न हुईं। और भी ऐसे कई प्रसंग हैं जिनकी गिनती कर पाना आसान नहीं है। एक साथ 17 दीक्षाएँ गंगाशहर में, एक साथ 15 दीक्षाएँ उदयपुर में एवं एक साथ 10 दीक्षाएँ जावद में संपन्न हुईं। एक साथ बड़ी संख्या में होने वाली ये दीक्षाएँ थीं।

आचार्यश्री के रोम-रोम में मानवीयता के प्रत्येक गुण की धारा बहती है। उनके वचन कल्याणकारी होते हैं। उनका चिंतन जनहित, संघहित व राष्ट्रहित में होता है। उनका पुरुषार्थ स्वयं से समग्र की ओर बढ़ता है। उनकी दृष्टि दोषों के निवारण हेतु शीघ्र संचरित हो जाती है। उनके उपदेश स्वयं का अनुभव है तो उनकी अलौकिकता अनुभव का परिणाम है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर के संयमी जीवन यात्रा को विस्तृत रूप से जानने के लिए, अपने क्षेत्र में आगे बढ़ने के

लिए, चुनौतियों को झेलने की क्षमता प्राप्त करने के लिए, असफलताओं में भी ऊर्जावान बने रहने के लिए, सोचने के तरीकों को तराशने के लिए पढ़िए '**अभिरामम्**'।

प्रश्नावली

संक्षिप्त में उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1. आचार्य प्रवर ने एक साथ कितनी दीक्षाएँ व कहाँ प्रदान कीं?

प्रश्न 2. आचार्य प्रवर का पुरुषार्थ किससे किसकी ओर होता है?

प्रश्न 3. करोड़ों की संपत्ति व तीन साल की बच्ची को छोड़कर किस परिवार के दंपत्ति ने दीक्षा ग्रहण की?

प्रश्न 4. आचार्य प्रवर के शासन में वर्तमान में कितने साधु-साध्वी हैं?

प्रश्न 5. आचार्य प्रवर का चिंतन कितने मुखी रहता है?

प्रश्न 6. आचार्य प्रवर द्वारा दिए ऐसे वर्ष का नाम व वर्ष बताइए जिसमें संस्कारों की समीक्षा पर जोर दिया गया है।

प्रश्न 7. आचार्य प्रवर ने भारतवर्ष के कुल कितने राज्यों में विचरण किया है?

प्रश्न 8. चलते प्रवचन में कितनी बार दीक्षा प्रसंग बना? दीक्षित चारित्रात्माओं के नाम भी बताइए।

प्रश्न 9. अभिरामम् पढ़ने के चार कारण लिखिए।

प्रश्न 10. आचार्य प्रवर ने किसकी गति को मात दी है?

प्रश्न 11. साधुमार्गी संकल्प वर्ष की घोषणा किस वर्ष के अंतर्गत हुई?

प्रश्न 12. 'श्रावक नाममात्र का श्रावक न होकर सच्चा श्रमणोपासक बने।' ऐसा आचार्य प्रवर ने किस वर्ष की घोषणा करते हुए फरमाया?

उत्तर भिजवाने हेतु WhatsApp No. : 9314055390
Email : shramanopasak @sadhumargi.com

अंतिम तिथि
25 दिसंबर 2024

संस्कारों से पोषित पूर्वी जारोली

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की अनुकंपा से वडोदरा की दस वर्षीय बालिका पूर्वी सुपौत्री मोहनलाल जी जारोली एवं सुपुत्री नितिन जी जारोली ने इस अल्पवय में सामायिक सूत्र विधि सहित, प्रतिक्रमण सूत्र विधि सहित, दशवैकालिक सूत्र का एक अध्ययन, भक्तामर की गाथाएँ, जैन सिद्धांत बत्तीसी 21 बोल तक, 25 बोल, स्तवन एवं प्रार्थनाएँ तथा अनेक छोटे प्रत्याख्यान कंठस्थ कर लिए हैं। नन्हीं पूर्वी ने जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 4 तक उत्तीर्ण कर अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। ऐसी प्रतिभाएँ समाज के लिए अनुकरणीय हैं। हमें भी अपने बच्चों को जैन संस्कार पाठशाला में भेजना चाहिए। होनहार बालिका के अभिभावकों को बहुत-बहुत साधुवाद।

- राष्ट्रीय संयोजक, समता समता पाठशाला

विविध समाचार

राम चमकते भानु समाना

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

बड़ीसादड़ी। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में अभिरामम् आनंदम् 2.0 एक दिवसीय मेवाड़-मालवा क्षेत्रीय युवा-युवती शिविर 17 अक्टूबर को समता प्रवचन हॉल में आयोजित हुआ, जिसमें 29 क्षेत्रों से 345 शिविरार्थियों उत्साह के साथ ने भाग लिया। श्री आदित्य मुनि जी म.सा. द्वारा '**द विजनरी**', '**परिपक्वता**', '**उपलब्धियाँ**' आदि विभिन्न विषयों पर बहुत ही प्रेरणास्पद मार्गदर्शन प्रदान किया गया। श्री अटल मुनि जी म.सा. ने ध्यान करवाया। श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने '**एनर्जी बुस्टर**' विषय पर सेशन लिया। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने सफलता के पाँच सूत्रों के बारे में बताया। महेश जी नाहटा ने महत्तम दैनिक आराधना एवं सभी प्रकल्पों के बारे में बताया। आपने विवेकानंद स्कूल, गर्ल्स स्कूल एवं मॉडल स्कूल आदि में व्यसनमुक्त जीवन जीने एवं पटाखे नहीं फोड़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के समापन में समता युवा संघ द्वारा महापुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए शिविरार्थियों व कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया गया।

आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश पदारोहण दिवस आयंबिल दिवस के रूप में 20 अक्टूबर को मनाया गया। इस अवसर पर 180 आयंबिल हुए। महिलाओं का दो दिवसीय '**सिद्धांतों से उभरते स्वरूप**' शिविर का आयोजन किया गया। गुरु पुष्य नक्षत्र एवं अष्टमी को सामूहिक एकासन के आयोजन में 215 एकासन हुए। 23 अक्टूबर को महिलाओं का चार दिवसीय '**दैनिक चर्या/दैनिक क्रिया**' शिविर एवं बच्चों के '**मैजिक ऑफ मैरिट फोर बैचलर**' शिविर में 123 बालक-बालिकाओं ने उत्साह से भाग लिया। मुमुक्षु बहन करिश्मा जी लुणिया का चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ आगमन होने पर एक अलग कार्यक्रम में भावभीना अभिनंदन किया गया। 6 नवंबर को ज्ञान पंचमी आराधना शिविर में 150 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस चातुर्मास में 13 मासखमण, 16 की एक, 15 की दो, 11 की दो, 9 की 23, अठाई 26, पंचोले 35, तेले 293 सहित 220 पौषध व संवर हुए।

- राजमल भंडारी, नरेंद्र रांका

निकुंभ। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में समता भवन में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत पाँच दिवसीय '**पराक्रम समता संस्कार**' शिविर का आयोजन 2 से 6 नवंबर को किया। शिविर में 32 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। साध्वीवर्याओं द्वारा बच्चों को मार्गदर्शन एवं प्रेरणा के साथ ज्ञानार्जन करवाया गया। संस्कारित जीवन की ओर अग्रसर हो बच्चों ने उत्साह का प्रदर्शन किया।

- महावीर सिंह मेहता

भूपालपुरा, उदयपुर। जुहार जैन भवन में शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मास धर्माराधना के साथ पूर्णता की ओर गतिमान है। साध्वीवृंद के सान्निध्य में 6 अक्टूबर को '**लीडरशिप**

डवलपमेंट' विषयक वर्कशॉप '**शासक सुंदर शोभता**' **(द लीडरशिप टेस्टामेंट)** का आयोजन किया गया, जिसमें सकल जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों व जन प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पूज्य साध्वीवर्या जी ने विभिन्न रोचक गतिविधियों के माध्यम से प्रायोगिक उदाहरण द्वारा नेतृत्वकर्ता के विभिन्न गुणों व विशेषताओं के बारे में विवेचना की। सभी प्रतिभागियों को प्रभावना स्वरूप आचार्य श्री रामेश के नवीन साहित्य पुस्तक '**नो शॉर्टकट प्लीज**' प्रदान की गई।

आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश का आचार्य पदारोहण दिवस श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामूहिक आयंबिल तपाराधना के साथ मनाया गया। दीपावली अवकाश में 4 दिवसीय शिविर का आयोजन 27 से 30 अक्टूबर को साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में किया गया। 180 से अधिक बच्चों को आयु अनुसार तीन वर्गों में विभक्त कर रोचक गतिविधियों सहित ज्ञानार्जन करवाया गया। भूपालपुरा संघ की ओर से शिविरार्थियों को पारितोषिक प्रदान किया गया। शिविर समापन समारोह में श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

वीर निर्वाण दिवस पर तेला तप आराधना की गई एवं 2 नवंबर को भगवान महावीर की अंतिम देशना श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया गया। दैनिक धार्मिक कार्यक्रमों में अच्छी उपस्थिति रही। प्रत्येक रविवार को धार्मिक कक्षा का आयोजन निरंतर हुआ।

- यशवंत कटारिया

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

गंगाशहर-भीनासर। समता मनीषी आचार्य श्री नानेश का पुण्यस्मृति दिवस एवं परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में साधना दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने द्वय महापुरुषों के विभिन्न गुणों पर प्रकाश डाला।

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज 20वीं सदी के महान आचार्य श्री नानेश की पुण्यतिथि एवं वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस है। आचार्य श्री नानेश की यादें युगों-युगों तक स्मृतिपटल में स्वर्णांकित रहेंगी।

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम हमारे आचार्यदेवों का गुणगान करें, यह अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इससे भी बड़ी विशेषता है कि अन्य संप्रदाय के लोग हमारे आचार्य भगवंतों का गुणगान करें। आचार्य श्री नानेश ने हर परिस्थिति में समता का परिचय दिया। आचार्य श्री रामेश शासन की भव्य जाहोजलाली कर रहे हैं। इसमें निरंतर अभिवृद्धि हो, यही मंगलकामना है।

इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने गुणानुवाद के भाव रखे। विजय कुमार जी सांड के 27, शुभकरण जी संचेती के 20 एवं धर्मचंद जी भूरा के 13 उपवास तप की अनुमोदना की गई। भाई-बहनों ने 180 आयंबिल, उपवास एवं 5-5 सामायिक आदि आराधना करके श्रद्धा-भक्ति का परिचय दिया।

भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर श्री विनय मुनि जी म.सा. ने धनतेरस एवं रूप चतुर्दशी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए अंतर् ज्योति जलाने की प्रेरणा दी। दीपमालिका के प्रसंग पर हस्तिपाल राजा के 8 स्वप्नों का सांगोपांग विवेचन एवं 2 नवंबर को उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन आपश्री जी ने फरमाया।

ज्योतिर्धर जवाहराचार्य की जयंती 300 सामूहिक एकासना के साथ मनाई गई। संतवृंद ने श्री जवाहराचार्य का जीवन वृत्तांत प्रस्तुत करते हुए उन्हें बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी बताया। श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने उनको क्रांतिकारी आचार्य निरूपित किया।

ज्ञान पंचमी पर श्री विनय मुनि जी म.सा. ने दृष्टांत सहित महत्त्व विवेचित किया। श्री गौतम मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में दीपावली अवकाश के प्रसंग पर 5 दिवसीय

शिविर में 180 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। लगभग 60 बच्चों ने पटाखे नहीं जलाने का त्याग किया। अनेक बच्चों ने रात्रिभोजन त्याग का संकल्प लिया।

चातुर्मास में अठाई एवं अधिक की तपस्या करने वाले तपस्वियों का तपाभिनंदन 10 नवंबर को श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में बहू मंडल ने मंगलाचरण व महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अध्यक्ष द्वारा आभार ज्ञापन किया गया। इस अवसर पर संघ में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए जेठमल जी सेठिया, विशाल जी बाँठिया, मगन जी सुराणा, पुष्पा देवी दफ्तरी, निधि जी सेठिया का भी बहुमान किया गया।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 30 अक्टूबर को पुरुष वर्ग के लिए अमावस्या स्वाध्याय साधना में युवा साथियों सहित लगभग 100 भाइयों ने भाग लिया। 14 नवंबर को धर्मचक्र कार्यक्रम में लगभग 55 भाई-बहनों ने बेले तप की आराधना की, साथ ही तेले तप की भी आराधना की गई।

चातुर्मास के दौरान श्री विनय मुनि जी म.सा. ने जैन तत्त्व निर्णय का कोर्स करवाया, जिसमें युवा साथियों सहित सभी भाई-बहनों ने मनोयोगपूर्वक भाग लिया। महिलाओं के शिविर में लगभग 170 महिलाओं ने भाग लिया। श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने गोचरी संबंधी नियमों सहित विशेष जानकारियाँ दी। श्री जयेश मुनि जी म.सा. ने अनेक थोकड़े समझाए। **- चंचल कुमार बोथरा**

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास धर्मोल्लास के साथ पूर्णता की ओर गतिमान है। साध्वीवृंद के सान्निध्य में आचार्य श्री नानेश का पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश पदारोहण दिवस तप-त्याग, धर्म-ध्यान के साथ मनाया गया। साध्वीवर्याओं ने द्वय महापुरुषों का गुणानुवाद करते हुए उनके द्वारा प्रदत्त आयामों का विवेचन फरमाया। चातुर्मास काल में बच्चों के लिए 4 एवं महिलाओं के लिए दो शिविर आयोजित हुए। एकासना एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। 10 नवंबर को रणजीत आंचलिया अतिथि भवन में आयोजित सम्मान समारोह में चातुर्मास काल में तपस्या करने वालों - कुमकुम जी बोथरा-31, निर्मल जी संचेती-12, तुलसीराम जी सुराणा-11, जयश्री जी मरोठी एवं आराधना जी सुराणा-9, एकता जी कातेला, सरोबती सरकार, लक्ष्य बुच्चा, गौरव बुच्चा, मयंक भूरा-अठाई सहित कक्षा 8, 10 व 12 में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने वाले बच्चों, पटाखा नहीं फोड़ने का प्रत्याख्यान लेने वालों एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ के वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों तथा गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। बच्चों ने अभिरामम् पुस्तक एवं सचित्त-अचित्त विवेक विषय पर प्रस्तुति दी।

शासन दीपिका साध्वीश्री जी के सान्निध्य में 11 अक्टूबर को आयोजित चार दिवसीय बालक-बालिका शिविर में 55 बच्चों ने भाग लिया। साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. ने 18 पापों के विवेचन सहित अनेक कषायों आदि के बारे में बताया। साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. ने नरक गति की वेदनाओं के बारे में ज्ञानार्जन कराया। शिविर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता घोषित किए गए। शिविर अवधि में सभी बच्चों ने कुल 350 सामायिक कीं। सभी शिविरार्थियों को प्रभावना वितरित की गई। **- आशीष बुच्चा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। समता भवन में पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा., पर्याय ज्येष्ठ श्री प्राणेश मुनि जी म.सा., शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं कांकरिया देहलान स्थानक में शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास का ठाठ लगा हुआ है। प्रतिदिन प्रवचन शृंखला में सैकड़ों जन उपस्थित होकर अपना

जीवन धन्य बना रहे हैं। शरद पूर्णिमा पक्खी दिवस पर महिलाओं व पुरुषों में 110 प्रतिक्रमण एवं 50 महिलाओं ने 15-15 सामायिक आदि धर्म-ध्यान किया।

आचार्य श्री नानेश का 25वाँ पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश का पदारोहण दिवस आयंबिल दिवस के रूप में गुणानुवाद के साथ मनाया गया। दिवस का शुभारंभ नवकार मंत्र, नानेश चालीसा एवं समापन रामेश चालीसा के साथ हुआ।

शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम सब में जो संस्कार हैं, वे महापुरुषों की देन हैं। नाना गुरुवर ने थोड़े समय में ही संघ को स्थिरता प्रदान कर दी। आपश्री जी के सान्निध्य में चतुर्विध संघ आगे बढ़ा। हमें अपना जीवन गुरुमय बनाना है।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने *'गुरुदेव हमारे हैं, जन-जन के प्यारे हैं'* भजन के साथ फरमाया कि आज महापुरुषों का दिन है। आचार्य श्री नानेश युगपुरुष थे। उनका जीवन शांति व समता से भरा हुआ था।

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों का जितना गुणगान करें उतना ही कम है। महापुरुष गुणों के भंडार हैं।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि मेरा सौभाग्य है कि मेरी दीक्षा नाना गुरु के मुखारविंद से हुई। वे संयम में पूर्ण सजग थे। जो वृक्ष नाना गुरु ने लगाया उसे आज राम गुरु हरा-भरा बनाने में लगे हैं।

आज के पावन अवसर पर आनंद भवन में 70 श्रावक-श्राविकाओं ने आयंबिल तप किया। अनेक वक्ताओं ने गद्य-पद्य में भावाभिव्यक्ति देते हुए द्वय महापुरुषों का गुणानुवाद किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव पर समता भवन में फरमाया कि भगवान महावीर जैसा बनना है तो आध्यात्मिकता की साधना करके अपने आठ कर्मों से रहित बनें और तेला तप कर कर्मों को क्षय करें। राजा हस्तिपाल के आठ स्वप्नों के उत्तर भगवान महावीर ने पावापुरी में अंतिम धर्मदेशना में बताए। प्रातःकाल उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन एवं पंचमी तक नंदी सूत्र का वाचन किया गया। लगभग 20 तेला तप एवं लगभग 40 पौषध, संवर की आराधना हुई

- नोरतमल बाबेल

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

बालाघाट। शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला जी म.सा. आदि ठाणा-3 का ऐतिहासिक चातुर्मास श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ में तप-त्याग एवं धार्मिक आराधनाओं के साथ संपन्न हुआ। चातुर्मास प्रारंभ से ही धर्माराधना का अपूर्व ठाठ लगा रहा। दो मासखमण, 15, 11, 9, अठाई, दो बार सामायिक की पचरंगी, तेला, उपवास, तेले की लड़ी आदि तप हुए।

साध्वी श्री श्रुतशीला जी म.सा. द्वारा वीर स्तुति एवं साध्वी श्री प्रतिक्षा श्री जी म.सा. द्वारा बड़ी साधु वंदना पर प्रवचन फरमाए। प्रातःकाल थोकड़ों की कक्षा में अच्छी उपस्थिति रहती थी। दो बार आयोजित सामूहिक संवर में 63 संवर हुए। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के पुण्य स्मरण दिवस एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस पर 105 आयंबिल हुए।

श्री श्वेतांबर जैन संघ के तत्त्वावधान में 27 अक्टूबर को ए-1-9 एकासन का आयोजन किया गया, जिसमें 9 नवकार, 9 मिनट में 9 आइटम की मर्यादा के साथ 100 सामूहिक एकासन मांगलिक भवन में संपन्न हुए। खिरकिया, छींपावड़, चारूवा एवं कालधड़ के श्रद्धाशील गुरुभक्तों ने देव, गुरु, धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा व समर्पणा का परिचय दिया।

- आशीष समदड़िया, मयंक आवड़, जितेंद्र वेद

रतलाम। महत्तम वर्ष एवं आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के पुण्यस्मरण दिवस पर मध्य प्रदेश अंचल

द्वारा संघ एवं समता युवा संघ, रतलाम के सहयोग से 13 अक्टूबर को अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सक प्रशांत जी जैन के मार्गदर्शन में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन समता भवन में किया गया। शिविर में 12 विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा लगभग 234 मरीजों का परीक्षण कर दवा वितरित की। इस अवसर पर संघ शिखर सदस्य, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, रतलाम संघ अध्यक्ष सहित गणमान्य जन उपस्थित थे। शिविर संयोजक ने बताया कि पारुल हॉस्पिटल के सहयोग से समता अतिथि भवन में नियमित ओ.पी.डी. लगेगी।

इसी क्रम में दोपहर में दिलीप नगर स्थित छात्रावास में भी ओ.पी.डी. का शुभारंभ किया गया। अतिथि के रूप में धर्मपाल प्रवृत्ति संयोजक विशेष रूप से उपस्थित थे। यहाँ पर दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक नियमित ओ.पी.डी. संचालित कर मरीजों को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की जाएँगी। **- अंचल राष्ट्रीय मंत्री**

✧✧✧ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ✧✧✧

धमतरी। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में 27 से 29 सितंबर तक '**महिला दिशाबोध**' शिविर का आयोजन किया गया। संतवृंद ने बहुत ही सरल भाषा में लगभग 50 शिविरार्थी बहनों को अध्ययन कराया। सभी शिविरार्थी बहनों को पारितोषिक प्रदान किया गया। समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के चादर प्रदान दिवस पर श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने आचार्यश्री जी के जीवन पर विवेचना फरमाते हुए उन्हें महान साधक बताया एवं उनके गुणों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। सामूहिक एकासना कार्यक्रम में 70 भाई-बहनों ने एकासना किया। एकासना, बियासना, उपवास तथा तेले की तपस्या जारी रही।

पूज्य म.सा.श्री के सान्निध्य में श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में 7 से 10 अक्टूबर को आयोजित '**लक्ष्यवेध**' शिविर में लगभग 53 बच्चों ने भाग लेकर उत्साह के साथ लाभ लिया। शिविर समापन कार्यक्रम राखेचा भवन में संपन्न हुआ, जिसमें स्थानीय गणमान्यजन व पदाधिकारियों सहित लगभग सभी गुरुभक्तों की उपस्थिति रही। समता बहू मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। शिविर अध्यापक द्वारा शिविर प्रतिवेदन के माध्यम से विवरण प्रस्तुत किया गया। सभी शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया। म.सा.श्री जी ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि जीवन में व्यसनों से दूर रहें। आपस में प्रेमभाव बनाए रखें और नवकार मंत्र का प्रतिदिन स्मरण करें। शिविर में आने से सुखद भविष्य का निर्माण होता है। आपश्री जी ने अन्य अनेक प्रेरणाएँ दीं।

- दीपक बाफना

✧✧✧ कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ✧✧✧

मैसूर। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में समता भवन में चातुर्मास का ठाठ लगा हुआ है। आपश्री जी की पावन प्रेरणा से चातुर्मास में **मासखमण-** करण जी देसरला, दिलखुश जी डूंगरवाल, दिलीप जी नंदावत, चंचल जी कोठारी, **17-** चंद्रा बाई गन्ना, **16-** अमृतलाल जी सालेचा, **15-** अनिल जी पोरवाड़, आशा जी पोखरना, हिमांशी जी दक, लता जी नंदावत, पिंकी जी नंदावत, **13-** अनिल जी कोठारी, 11 की 12, 9 की 29, अठाई 17, तेला 225, बेले का धर्मचक्र 2, संवर का धर्मचक्र 1, लगभग 1100 संवर, पौषध लगभग 800, सहित अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ एवं धर्मचक्र आदि की आराधना की गई। चातुर्मास काल में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण पूर्ण किया तथा अब भी ज्ञानार्जन जारी है।

विजयपुर से विभिन्न संप्रदायों के लगभग 50 गुरुभक्तों का साध्वीवर्याओं के दर्शनार्थ आगमन हुआ। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा. का वर्ष 2020 का चातुर्मास विजयपुर में हुआ था। सभी ने प्रवचन, दर्शन व सेवा का लाभ लिया।

- अनिल पोरवाड़, दिलीप जैन

✧✧✧✧✧ मुंबई-गुजरात अंचल ✧✧✧✧✧

अहमदाबाद। शासन दीपिका साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञा जी म.सा. आदि ठाणा-3 के चातुर्मास में धर्म-ध्यान, तप-त्याग का अनुपम ठाठ लगा रहा। राजस्थान स्थानकवासी जैन संघ के स्थानक में साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारंभ से ही तेले आदि की लड़ी गतिमान रही। इस दौरान लगभग 300 तेले, 100 अठाई, 5 मासखमण, सिद्धि तप सहित अनेक तपाराधनाएँ संपन्न हुईं। दोपहर में ज्ञानचर्चा, परीक्षाएँ एवं धार्मिक कक्षाओं का संचालन होता। महिलाओं, बच्चों एवं युवाओं के लिए 3 दिवसीय अलग-अलग शिविर लगाए गए, जिनमें साध्वीवृंद ने विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन फरमाया। रविवारीय समता शाखा में साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञा जी एवं साध्वी श्री मुदितप्रज्ञा जी म.सा. द्वारा प्रेरणास्पद ऊर्जा प्रदान की गई। देश के अनेक क्षेत्रों से दर्शनार्थियों का आवागमन रहा। मुमुक्षु बहन करुणा जी गुलेच्छा के आगमन पर संघ द्वारा उनका बहुमान किया गया।

- सुरेंद्र भूरा

✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

वरणगाँव। शासन दीपिका साध्वी श्री ऋजुता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में युवाओं के '**श्रावक समाचारी की यात्रा**' शिविर में लगभग 18 युवाओं ने, बालिका मंडल के '**संस्कारित जीवन**' शिविर में लगभग 20 बालिकाओं ने, महिलाओं के '**आलोचना से भव पार**' एवं '**लक्ष्मणा साध्वी**' शिविर में लगभग 17 महिलाओं ने भाग लिया। चातुर्मास में साध्वीवर्याओं की प्रेरणा से 51, 21, 15, अठाई एवं 15 तेले सहित लगभग 25 लोगों ने षट्रस तप व एक बहन ने चंद्रकला तप किया। आचार्य श्री नानेश के पुण्यस्मृति दिवस पर 11 मिनट में 11 आइटम एवं 11 नवकार मंत्र के साथ लगभग 20 एकासन हुए।

- दर्शन संचेती

समीक्षण ध्यान योग शिविर आयोजित

आचार्य श्री नानेश के अवदान समीक्षण ध्यान से जन-जन को लाभान्वित करने के उद्देश्य से -

3 से 15 सितंबर तथा 4 से 7 अक्टूबर को.. भीलवाड़ा
19 से 25 सितंबर को..... बालाघाट
1 से 3 अक्टूबर को..... मोरवन
11 से 15 अक्टूबर को..... मुंबई
16 से 18 अक्टूबर को..... सूरत
7 से 9 नवंबर को..... रतलाम
10 से 12 नवंबर को..... मंदसौर

आदि क्षेत्रों में समीक्षण ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। सभी स्थानों पर सैकड़ों महानुभावों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षक डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने शरीर शिथिलीकरण, श्वास, देह, चैतन्य केंद्र एवं कषाय समीक्षण, आसन, प्राणायाम आदि का अभ्यास करवाया। बालाघाट में डॉ. आभाकिरण गांधी ने भी प्रशिक्षण दिया एवं दोपहर में एक्यूप्रेशर द्वारा उपचार किया गया। सभी स्थानों पर स्थानीय संघ मंत्री एवं प्रमुखगणों ने आभार ज्ञापित किया। उदयपुर केंद्र में प्रतिदिन लगभग 20 साधक-साधिकाएँ लाभान्वित हो रहे हैं।

- डॉ. सत्यनारायण शर्मा

स्थानीय संघ में नवीन मनोनयन हेतु सूचना

सम्माननीय स्थानीय संघ (इकाई) अध्यक्ष/मंत्रीगणों से विशेष निवेदन है कि जिन संघों में काफी समय से मनोनयन प्रक्रिया नहीं हुई है अथवा अध्यक्ष/मंत्री का संघ विधान के अनुसार दो वर्ष से अधिक समय से मनोनयन नहीं हुआ है, तो यथाशीघ्र ही मनोनयन प्रक्रिया करवाकर नवीन कार्यकारिणी गठन करने का कष्ट करें। संघ विधान के अनुसार पदाधिकारियों का मनोनयन दो वर्षीय कार्यकाल के लिए किया जाता है और उस कार्यकाल को आगामी दो वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है अर्थात् कोई भी पदाधिकारी 4 वर्ष (दो कार्यकाल) से अधिक अवधि के लिए एक ही पद पर नहीं रह सकता। आगामी मार्च 2025 तक जिन संघों के पदाधिकारियों (अध्यक्ष/मंत्री) के मनोनयन को अधिकतम 4 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण हो रहा है, उन सभी स्थानीय संघों में नवीन मनोनयन करने का लक्ष्य रखें।

प्रत्येक स्थानीय संघ (इकाई) में आगामी 2 वर्ष के कार्यकाल के लिए आमसभा द्वारा मनोनयन प्रक्रिया दिनांक 15 दिसंबर 2024 से 14 जनवरी 2025 तक संपन्न हो जाए एवं 15 जनवरी 2025 से नवीन पदाधिकारी कार्यभार ग्रहण कर लेवें तथा 26 जनवरी 2025 तक नवीन पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हो जाए, ऐसा सुनिश्चित करें।

नोट - यदि किसी स्थानीय इकाई में विगत वर्ष ही मनोनयन प्रक्रिया संपन्न हुई हो तो वहाँ नवीन मनोनयन प्रक्रिया दो वर्ष का कार्यकाल संपन्न होते ही अपनानी होगी। नवीन मनोनयन की सूचना केंद्रीय कार्यालय के नंबर 9116109777 पर अवश्य भिजवायें। अन्य किसी प्रकार की जानकारी एवं सहायता के लिए भी उपरोक्त नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

स्थानीय संघों में नवीन मनोनयन संबंधी दिशा-निर्देश

1. मनोनयन अवकाश के दिन या ऐसे समय होना चाहिए, जब अधिकतम सदस्यों को सुविधा हो।
2. मनोनयन प्रक्रिया की शुरुआत से ही दो मनोनयन अधिकारी नियुक्त किए जाने चाहिए, जो स्थानीय अथवा बाहर के साधुमार्गी संघ के वरिष्ठ, सूझ-बूझ के धनी, न्यायप्रिय एवं अविवादित श्रावक/श्राविका हों।
3. मनोनयन आमसभा में हो, जिसकी सूचना कम से कम 21 दिन पूर्व लिखित प्रति सर्वमान्य तरीके से डाक अथवा व्यक्तिगत आमंत्रण से साधुमार्गी संघ के सभी घरों में दी जानी चाहिए।
4. मनोनयन में पद या व्यक्ति नहीं बल्कि संवैधानिक पारदर्शी प्रक्रिया का अनुपालन किया जाना महत्त्वपूर्ण है। यदि वर्तमान कार्यकारिणी को ही दोबारा निर्वाचित करना अथवा अल्प संशोधन करना हो तो भी मनोनयन प्रक्रिया का अनुपालन हो। श्री साधुमार्गी जैन संघ में गौरवमयी मनोनयन (Nomination) की परंपरा है।

5. किसी भी दशा में प्रमुख पदों पर (अध्यक्ष, महामंत्री) एक ही व्यक्ति निरंतर दो कार्यकाल अथवा चार वर्ष से अधिक नहीं रह सकेगा।

6. संविधान के अनुसार, आमसभा द्वारा इस वर्ष नवमनोनीत पदाधिकारियों का कार्यकाल 15 जनवरी 2025 से शुरू होकर 14 जनवरी 2027 को स्वत: ही समाप्त हो जाएगा। इसी तरह यह क्रम प्रतिवर्ष आगामी दो वर्ष के लिए चलता रहेगा।

7. एकरूपता के उद्देश्य से स्थानीय श्रीसंघ का नाम श्री साधुमार्गी जैन संघ (शहर/ग्राम का नाम) रहेगा।

8. आमसभा एवं मनोनयन प्रक्रिया की संपूर्ण कार्यवाही का विवरण बैठक रजिस्टर में समय व तिथि के साथ दर्ज किया जाएँ व उपस्थित सभी सदस्यों के मोबाइल नंबर सहित हस्ताक्षर लिए जाएँ। मनोनयन प्रक्रिया संबंधी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसका कारण सहित विवरण दर्ज किया जाना चाहिए।

9. मनोनयन प्रक्रिया संबंधी किसी भी गंभीर त्रुटि की शिकायत राष्ट्रीय संयोजक आबद्धता एवं मनोनयन अभियान समिति से की जा सकती है। शिकायत सही पाए जाने पर संघ समाधान समिति से परामर्श कर पुन: विचार किया जा सकता है।

10. मनोनयन संपन्न होने के पश्चात् संघ प्रपत्र में निर्वाचित पदाधिकारियों का विवरण लिखकर 31 जनवरी 2025 तक प्रधान कार्यालय - समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) पर भिजवावें।

- राष्ट्रीय महामंत्री

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक** से **मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना व संयमी जीवन, संघ के प्रति आचार्य भगवन् का चिंतन, संघ समर्पणा क्यों आवश्यक, महत्तम आरोग्यम्** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अत: हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

- श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

सज्झायं

भगवान महावीर की अंतिम शिक्षा पर करें अनुप्रेक्षा

विषय पर आधारित

ओपन बुक परीक्षा

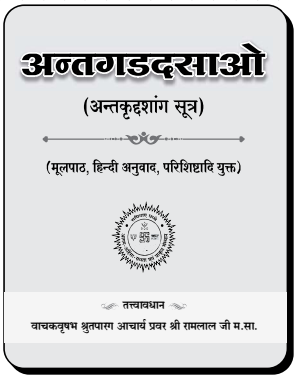

तृतीय चरण - अंतकृद्दशांग सूत्र (केवल तृतीय वर्ग)

कुल अंक - 50

नाम ..... पिता/पति का नाम .....

जन्म दिनांक ..... गाँव/शहर .....

जिला ..... राज्य ..... अंचल .....

रोल नं. ..... मोबाइल नं. .....

अंतिम स्वाध्याय सेवा वर्ष ..... स्वाध्याय सेवा शहर का नाम .....

परीक्षा के नियम :- (1) सभी प्रश्नों के उत्तर का आधार '**अंतगडदसाओ (अंतकृद्दशांग सूत्र)' पुस्तक (प्रकाशक- आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर) (केवल तृतीय वर्ग पेज 24 से 72 तक)** ही रहेगा। (2) प्रश्नों के उत्तर में पुस्तक के साथ स्वयं का उपयोग लगाना भी अपेक्षित है। (3) प्रश्न पत्र बनाने में सावधानी रखी गई है, फिर भी त्रुटि होने पर सहयोग प्रदान करें। (4) उत्तर नीली या काली स्याही से ही लिखें। (5) उत्तर साफ-सुथरे अक्षरों में बिना काट-छाँट के लिखें। (6) परीक्षा में केवल वर्तमान स्वाध्यायी और निकट भविष्य में स्वाध्यायी सेवा देने की अभिलाषा रखने वाले श्रावक/श्राविकाएँ ही भाग ले सकते हैं। (7) **प्रश्न पत्र भेजने का पता - श्री गणेश जैन ज्ञान भंडार, समता भवन, नौलाईपुरा, रतलाम, 457001 (मध्य प्रदेश)। हेल्पलाइन नं. 9669010541** प्रश्न पत्र भेजने की अंतिम तिथि **20 जनवरी 2025** तक निर्धारित स्थान पर पहुँचाना परीक्षार्थी की जिम्मेदारी होगी। ***नोट -*** *उत्तर के साथ पुस्तक का पेज नंबर लिखना अनिवार्य है।*

:::::::::::: प्रश्न-पत्र ::::::::::::

प्र.1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। **10 × 0.5 = 5 अंक**

(i) गजसुकुमाल के ..... होने के कारण यह चर्चा नहीं की। पेज नं.: .....

(ii) चित्तमाणंदिया पीईमाणा ..... हरिसवसविसप्पमाण हियया। पेज नं.: .....

(iii) ..... पडिलेहित्ता उच्चारपासवण भूमिं पडिलेहेइ पहिलेहित्ता। पेज नं.: .....

(iv) तएणं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे .....। पेज नं.: .....

(v) उव्विग्गे संजायभए ठियए चेव ..... कालं करेइ, करित्ता। पेज नं.: .....

(vi) ..... विणिहायमावण्णे दारए करयलसंपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता। पेज नं.: .....

(vii) संचित कर्मों की ..... कराते हुए बहुत कर्मों की निर्जरा की। पेज नं.: .....

(viii) जहा ..... जाव फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं ..... विहरइ। पेज नं.: .....

(ix) वे दर्भ के फूल के सामान ..... यानी ..... थे। पेज नं.: .....

(x) ..... भत्तपाणं णो। लभंति णो चेव णं ताइं ताइं। पेज नं.: .....

प्र.2) अंताक्षरी पूरी कीजिए। 10 × 1 = 10 अंक

(i) अणगारों ने प्रथम प्रहर में क्या किया? पेज नं.: .....

(ii) पचास कन्याओं के साथ विवाह कब हुआ? पेज नं.: .....

(iii) कौनसे पुरुष को मार्ग पर ईंट लेकर घर में प्रवेश करते देखते हैं? पेज नं.: .....

(iv) गजसुकुमाल को वेदना उत्पन्न हो गई। पेज नं.: .....

(v) कालवत्तिणिं ..... मुण्डे जाव पव्वइए। पेज नं.: .....

(vi) कितने सिंघाड़ों में भिक्षाचर्या हेतु भ्रमण करना चाहते हैं? पेज नं.: .....

(vii) देवकी महारानी कहाँ उतरती है? पेज नं.: .....

(viii) देवकी महारानी किस पर मुँह रखकर आर्त्त ध्यान करने लगी? पेज नं.: .....

(ix) ..... सरस पारिजातक-तरुण दिवाकर। पेज नं.: .....

(x) सूर्योदय के समय अध्यवसाय किसे उत्पन्न हुआ? पेज नं.: .....

प्र.3) सही तथा गलत बताइए। 10 × 0.5 = 5 अंक

(i) दारूक कुमार के माता-पिता वासुदेव तथा धारिणी थे। ( ) पेज नं.: .....

(ii) गौतम अणगार की वाणी से वैराग्य उत्पन्न हुआ। ( ) पेज नं.: .....

(iii) मैं एक रात्रि की महाप्रतिमा स्वीकार करके विचरना चाहता हूँ। ( ) पेज नं.: .....

(iv) पद्म के फूल के समान लाल-लाल खैर की लकड़ी को उठाता है। ( ) पेज नं.: .....

(v) ये पुत्र तुम्हारे ही है, सुलसा गाथापति के नहीं। ( ) पेज नं.: .....

(vi) आप खिन्न होकर रौद्रध्यान मत करो। ( ) पेज नं.: .....

(vii) ब्राह्मण हवन की सामग्री के लिए पहले से ही द्वारिका नगरी के बाहर निकला था। ( ) पेज नं.: .....

(viii) भारत वर्ष में अन्य कोई माताएँ वैसे पुत्रों को जन्म नहीं देंगी। ( ) पेज नं.: .....

(ix) हमारा यह पुत्र गज के तालु के समान है। ( ) पेज नं.: .....

(x) रैवतक पर्वत पर सुमुख कुमार सिद्ध हुए। ( ) पेज नं.: .....

प्र.4) शब्दों को जोड़कर नया शब्द बनाइए। 10 × 1 = 10 अंक

उदाहरण- एक लेश्या + कीचड़ में खिलता है = नीलकमल

(i) आहार + घर ..... पेज नं.: .....

(ii) पैर + तिक्खुत्तो के पाठ से होती हैं ..... पेज नं.: .....

(iii) वंश + दीप ..... पेज नं.: .....

(iv) बड़ा + मूर्ति ..... पेज नं.: .....

(v) समस्त + पल ..... पेज नं.: .....

(vi) गज + शील क्या है ..... पेज नं.: .....

(vii) हार का विलोम + मित्र का विलोम ..... पेज नं.: .....

(viii) जैसा + काल ..... पेज नं.: .....

(ix) खौफ + दीवार ..... पेज नं.: .....

(x) एक विशेषण + भगवान की करते हैं + सामायिक किससे पच्चक्खते हैं ..... पेज नं.: .....

प्र.5) शब्दों को सही करके शब्द लिखिए। 10 × 1 = 10 अंक

(i) या ए णं रा भि से .....। पेज नं.: .....

(ii) दा सी न उ .....। पेज नं.: .....

(iii) ए वं पा द य .....। पेज नं.: .....

(iv) व ण र नि रा .....। पेज नं.: .....

(v) जा ए य सं भ .....। पेज नं.: .....

(vi) मा ता य लु ग णं स .....। पेज नं.: .....

(vii) मे रू य अ या वे .....। पेज नं.: .....

(viii) बे ल कु र न .....। पेज नं.: .....

(ix) णं भे इ ठि ए .....। पेज नं.: .....

(x) दा क प इ र .....। पेज नं.: .....

प्र.6) उलट-पुलट हुए वाक्यों को सही करके लिखिए। 10 × 1 = 10 अंक

(i) रासी से अणेगेहिं अणुप्पवेसिए समाणीए बहिया पुरिससएहिं रत्थापहाओं महालए अंतोधरंसि इट्ठगस्स।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(ii) याचना को करते आत्मा से अवग्रह तप हुए करके ग्रहण करने भावित वहाँ रुकने संयम विराजे यानि की स्थान से योग्य।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(iii) उत्कृष्ट रूप, थी और अत्यंत शरीर, यौवन दृष्टि वह और लावण्य उत्कृष्ट की से वाली।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(iv) सहोदरे णं मम णमंसामि जं गयसुकुमाले कहि कणीयसे वंदामि भंते से भाया अणगारे णं।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(v) तच्चस्स महावीरेणं तेरस अंगस्स अंतगडदसाणं भगवया पण्णत्ता, अट्ठमस्स वग्गस्स अज्झयणा।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(vi) सामने में वह गया। नगरी ठीक सोमिल हो करते समक्ष प्रवेश समय उनके आमने।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(vii) वासुदेवे पासित्ता करेइ पायग्गहणं करित्ता देवइं देवीए पासइ कण्हे देविं देवईए देवइं देविं।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(viii) आश्वस्त कहकर महारानी से ऐसा हैं मनोज्ञ करते देवकी इष्ट को, वचनों।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(ix) स्वीकार विचरण को दोनों महाप्रतिमा रात्रि हैं। साथ एक की करते पैरों को करके मिलाकर।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

(x) पुरिसे सिद्धे अणगारं आसुरूत्ते णं पासइ एगे तएं तं जाव पासित्ता गयसुकुमालं।

उत्तर .....

..... पेज नं.: .....

आयोजक :

समता प्रचार संघ

अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)

अक्टूबर–नवंबर माह में केंद्रीय पदाधिकारियों द्वारा तीन अंचलों के सघन प्रवास से उत्साह एवं उमंग के साथ गुरुभक्त सेवा की ओर अग्रसर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, प्रवास अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री एवं प्रवृत्ति संयोजकों सहित कार्यसमिति सदस्यों आदि का 11 से 13 अक्टूबर तक मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल, 20 से 25 अक्टूबर तक मेवाड़ अंचल एवं 7 से 10 नवंबर तक महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल में सघन संघ प्रवास के अंतर्गत प्रवास स्थलों के अध्यक्ष, मंत्री व सदस्यों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रवास क्षेत्रों में संघ आबद्धता, महत्तम महोत्सव, अभिरामम्, संघ आजीवन सदस्यता, इदं न मम, विहार सेवा संयोजन तथा संघ प्रभावक व महाप्रभावक सदस्यता, श्रमणोपासक, समता भवन निर्माण एवं महत्तम शिखर सहित अन्य प्रवृत्तियों की पुरजोर प्रभावना कर संघ के प्रत्येक सदस्य को इससे जुड़ने की अपील की गई। अनेक क्षेत्रों में चातुर्मासार्थ विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का प्रवासी दल ने अभूतपूर्व लाभ लिया।

मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई. अंचल में प्रवास के दौरान अहमदाबाद सहित वडोदरा, नवसारी, बारडोली, चिखली, वापी, सेलंबा, वलसाड आदि 8 क्षेत्रों ने संघ आबद्धता ग्रहण की। चिखली में नवीन संघ का गठन एवं वापी में नवीन अध्यक्ष का मनोनयन किया गया। सूरत, वासदा, अंकलेश्वर सहित सभी स्थानीय संघों के साथ आयोजित बैठकों में सभी ने विचार-विमर्श एवं सहभागिता के साथ आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प लिया।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ
- संघ महाप्रभावक सदस्य – 6
- संघ प्रभावक सदस्य – 7
- महत्तम महोत्सव सहयोग – 1
- इदं न मम सदस्य – 23
- विहार सेवा संयोजन सदस्यता – 2
- संघ आबद्धता – 8
- नया संघ गठन – 1
- मनोनयन – 1

- आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

मेवाड़ अंचल में 20 से 25 अक्टूबर को आयोजित प्रवास में संघ पदाधिकारियों के साथ दानपेटी योजना के राष्ट्रीय संयोजक, इदं न मम के आंचलिक संयोजक आदि ने चित्तौड़गढ़, भदेसर, सांवलियाजी (मंडफिया), मोरवन, चिकारड़ा, निकुंभ, आवरीमाता (असावरा), लसड़ावन, निम्बाहेड़ा, बाड़ी, बिनोता, बड़ीसादड़ी, बोहेड़ा, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़, धरियावद, दलोट, कानोड़, बंबोरा, उदयपुर सेक्टर-5, भड़भूजा घाटी, भूपालपुरा, वल्लभनगर, नाई, कांकरोली, गंगापुर, कपासन इत्यादि क्षेत्रों में संघ विकास हेतु प्रभावना की।

प्रवासी दल द्वारा स्थानीय संघों के साथ बैठकों में विचार-विमर्श एवं प्रेरणा के पश्चात् अनेक महानुभावों ने विभिन्न सदस्यता एवं सहयोग हेतु स्वीकृति प्रदान की। चित्तौड़गढ़ संघ के साथ बैठक में महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा की विशेष उपस्थिति रही।

प्रवास के दौरान शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. आदि ठाणा-7, शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री पावन श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा-5, शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले) आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-6, शासन दीपिका साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-10, शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. (चिकारड़ा वाले) आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-8, शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले) आदि ठाणा-5, शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का सौभाग्य
- इदं न मम सदस्य – 64
- संघ प्रभावक सदस्य – 1
- संघ आबद्धता – 5
- संघ आजीवन सदस्यता – 1
- श्रमणोपासक सदस्यता – 1
- नवमनोनयन – 1
- नया संघ गठन – 2
- नए क्षेत्र घोषित – 2

- आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल

में 7 से 10 नवंबर तक आयोजित क्षेत्रीय प्रवास में जलगाँव, वरणगाँव, धरणगाँव, सिलोड़, अमलनेर, शिरूड़, धुलिया, फागणा, शिंदखेड़ा, नरडाणा, शिरपुर, शहादा आदि क्षेत्रों के स्थानीय संघों के साथ बैठकों का आयोजन कर सभी विभिन्न प्रकल्पों व प्रवृत्तियों के सहयोग हेतु आगे आने का आह्वान किया गया। प्रवास के दौरान दो महानुभावों ने महाप्रभावक सदस्यता हेतु घोषणा की। धरणगाँव, शिंदखेड़ा में नवीन संघ का गठन, सिलोड़ को संघ का नया क्षेत्र घोषित किया गया। पाँच स्थानीय संघों– धरणगाँव, शिंदखेड़ा, जलगाँव, शिरपुर, धुलिया को केंद्रीय संघ से आबद्धता ग्रहण की। महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर दानपेटियाँ वितरित की गईं। पराक्रम शिविर हेतु छह संघों ने स्वीकृति प्रदान की।

प्रवास के अंतिम दिवस शहादा में क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में संघ प्रवृतियों के विकास हेतु अनेक सम्माननीय जनों ने अपने विचार साझा किए। संघ के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने विशेष मार्गदर्शन दिया। इस भव्य समारोह में स्थानीय एवं अंचल के गुरुभक्तों सहित मुंबई संघ के पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रही।

प्रवास के क्रम में शासन दीपक श्री सुमित मुनि

जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा आदि ठाणा-2, शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री ऋजुता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोध प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्श प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का सौभाग्य
- महाप्रभावक सदस्य – 2
- संघ आबद्धता – 5
- इदं न मम – 6
- श्रमणोपासक सदस्य – 2
- साहित्य सदस्य – 1
- नया संघ गठन – 2
- नया संघ क्षेत्र – 1

- आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

पूर्वोत्तर अंचल प्रवास

पूर्वोत्तर अंचल संघ एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों व कार्यसमिति सदस्यों द्वारा 15 अक्टूबर को अंचल के करीमगंज, पथारकांदी, लाला बाजार, बदरपुर आदि क्षेत्रों में एक दिवसीय प्रवास के दौरान महत्तम महोत्सव, इदं न मम एवं दानपेटी योजना सहित विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई। इसी के साथ अभिरामम् आनंदम् प्रतियोगिता की जानकारी देकर ज्यादा से ज्यादा रजिस्ट्रेशन करवाने व रक्तदान शिविर लगाने का अनुरोध किया। पथारकांदी में समता युवा शाखा का नवीन गठन व लाला बाजार में समता युवा संघ का पुनर्गठन किया गया।

- आंचलिक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, समता युवा संघ

मैं वर्तमान से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहता हूँ। वर्तमान युग में मीडिया का प्रभाव तेज रफ्तार से बढ़ रहा है। उसकी शक्ति और प्रभावशीलता के गुण बहुत गाए जा रहे हैं। प्रचार-प्रसार का वह एक प्रभावी माध्यम है। इसलिए कई भाई कहते हैं- महाराज! आधुनिक प्रचार-प्रसार के साधनों को स्वीकार करें, अन्यथा पिछड़ जाओगे। तो क्या इसीलिए मीडिया के विभिन्न साधनों का उपयोग या प्रयोग आरंभ कर दें? स्वीकार कर लें? क्या टी.वी. पर आ जाने से शांति मिल जाएगी? पक्की बात है? यदि अपनाने से शांति मिलने वाली नहीं, तो फिर उसे अपनाने की आवश्यकता कहाँ पड़ गई? हम मूल लक्ष्य से हट गए हैं। सत्य तो यह है कि मूल्य ही समाप्त हो गए हैं। मूल्यों का आधार ही समाप्त हो जाए तो आगे की अवस्था परिष्कृत कैसे रह सकती है? आगे से आगे बदलाव आए तो क्या हम बदलते चले जाएँ? बदलते-बदलते कहाँ पहुँच जाएँगे, यह सोचा है कभी? पहले के जमाने में धोती पहनने वालों की बहुलता थी। अंग्रेजों के संपर्क में आ गए तो बात बदल गई। आज सूट-सफारी आ गई है। पहले जमीन पर गादी बिछाकर बैठते थे और सामने बाजोट होता, जिस पर थाली परोसी जाती थी। अकेले भोजन की परंपरा कम थी, परिवार के साथ बैठकर भोजन करते थे। पर बदलाव आ गया और कुर्सी-डाइनिंग टेबल आ गई। पहले हाथ से खाते थे, अब चम्मच, छुरी-काँटे से खाते हैं। भोज्य पदार्थों में भी परिवर्तन हो गया। पर क्या इस परिवर्तन से चित्त में शांति आ पाई? संतोष आ पाया? यदि सर्वे किया जाए तो लगेगा कि 50 वर्ष पहले व्यक्ति जितने सुखी-संतोषी थे, उतने आज नहीं हैं। जितनी संपत्ति बढ़ी है, उतनी ही साथ में हाय-हाय भी बढ़ी है। फिर परिवर्तन से क्या लाभ मिला? यदि पुराने को छोड़ नया अपनाना है तो पहले देखो कि नए में भी शांति है या नहीं? जो नएपन में जी रहे हैं, क्या वे शांति पा रहे हैं? यदि नहीं, तो परिवर्तन से क्या सुख मिलेगा? जब तक मूल पर ध्यान केंद्रित नहीं होगा, तब तक शांति मिल नहीं सकती।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

श्रुत आरोहक
Treasure Hunt

1. तिर्यंच में कौनसे योग नहीं होते?
2. अयोगी भी हूँ, अलेशी भी हूँ, पर न संसारी हूँ, न मेरा कोई गुणस्थान है, लेकिन उपयोग गुण से सहित हूँ मैं, बताओ कौन हूँ?
3. स्वर्ण जड़ित नौलखा हार में कौनसा गुणस्थान एवं लेश्या होगी?
4. सर्प काल कर अयोगी सिद्ध बने तो उसमें उपयोग, योग और गुणस्थान कौनसा होगा?
5. भव में रहे हुए जीव क्या कहलाते हैं?
6. नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक में किस ज्ञान की नियमा होती है?
7. विहार तपस्यादि में सयोगी केवली भगवान को थकान नहीं आती, यह किस लब्धि के कारण है?
8. जिनको सिद्ध हुए दो, तीन आदि समय हो गए, वे सिद्ध केवलज्ञान के कौनसे भेद में आते हैं?
9. जो दो गति में आते हैं और मोक्ष में ही जाते हैं, वे कौनसे देव हैं?
10. एक साथ एक बार पात्र में पड़े हुए अन्नादि को क्या कहते हैं?
11. बाईस दंडक के जीवों में कितने प्रकार के पच्चक्खाण होते हैं?
12. अपर्याप्त हिंगलु में कितने योग होंगे?
13. सबसे थोड़े सर्वमूल गुण पच्चक्खाणी कौन होते हैं?
14. सामायिक व्रत में पढ़ने से किस आचार की आराधना होती है?
15. किससे मनुष्य आयु की प्राप्ति होती है?
16. मुक्ति रूपी फल देने वाली बुद्धि कौनसी है?
17. कुल का मतलब क्या होता है?
18. सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थंकर भगवान द्वारा प्रणीत आचारांगादि बारह अंग सूत्रों को क्या कहते हैं?
19. निम्न को सही क्रम में लिखिए?
    (1) ति मा यं य स (2) णु सा दो या ग (3) हा व ण वं उ
    (4) लु इ लो ए अ (5) भं हि ला बो (6) रि य आ य
20. चारित्राचरित्र लब्धि में कितने ज्ञान हो सकते हैं?

इस प्रतियोगिता के हल भेजने के संबंध में पेज नं. 51 पर दी गई सूचना का अवलोकन करें।

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

महत्तम महोत्सव

ग्रैंड समर्पणा दिवस

संपूर्ण भारत में महत्तम महोत्सव की लहर छाई हुई है। विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से देशभर के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया है। 12 अंचलों के लगभग सभी सदस्यों ने किसी न किसी प्रकल्प से जुड़कर अपनी समर्पणा का परिचय दिया है। महत्तम शिखर जल्द ही अपने अंतिम पड़ाव में प्रवेश कर रहा है, जिसमें 9 फरवरी 2025 तक पहुँचने हेतु 50 दिनों का काउंटडाउन 22 दिसंबर 2024 से उत्सव रूप में मनाया जाना है। इस महत्त्वपूर्ण दिवस को '**ग्रैंड समर्पणा दिवस**' के रूप में मनाने का संकल्प हम सभी को करना है और आचार्यश्री के गुणों की महक से जन-जन को सुवासित करना है। कोई भी क्षेत्र, परिवार, सदस्य इस दिवस में शामिल होने से वंचित न रहे इसकी जिम्मेदारी स्थानीय समन्वय समिति सक्रियता से समझते हुए कार्य को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर है।

ग्रैंड समर्पणा दिवस की रूपरेखा

22-12-2024 एकासन दिवस के रूप में मनाना है

प्रात: 8:30 से 9:00	समता शाखा	
प्रात: 9:00 से 9:30	नवकार मंत्र जाप	
प्रात: 9:30 से 10:15	**जहाँ आचार्य श्री रामेश के आज्ञानुवर्ती संत-सती विराज रहे हैं-**	**जहाँ चारित्रात्माएँ नहीं विराज रहे हैं-**
	व्याख्यान	सभी को भवन में एकत्रित करते हुए वन-डे इवेंट की जानकारी देवें कि आज हम सभी क्यों उपस्थित हुए हैं और इस इवेंट का क्या महत्त्व है।
प्रात: 10:15 से 10:30	महत्तम महोत्सव यात्रा	
प्रात: 10:30 से 10:50	वीर परिवार सम्मान (आचार्य श्री रामेश के सान्निध्य में वर्तमान में संयमरत चारित्रात्माओं के परिजन)	
प्रात: 10:50 से 11:10	धार्मिक प्रतियोगिता इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के श्रावक-श्राविकाएँ एवं बच्चे भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता पश्चात् स्थानीय स्तर पर ही प्रश्नोत्तरी आदि जाँच करने होंगे। प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार (प्रभावना) का पूर्णाधिकार समन्वय समिति का ही रहेगा।	

प्रात: 11:10 से 11:40 महत्तम महोत्सव प्रतिभागियों का अभिनंदन

प्रात: 11:40 से 12:00 प्रतिभागी अपने अनुभवों को साझा कर सकते हैं

महत्तम महोत्सव के प्रकल्प से जुड़े प्रतिभागी अपने अनुभव रखना चाहते हैं तो 4-5 प्रतिभागी रख सकते हैं।

प्रात: 11:00 से 12:00 कौन बनेगा अभिरामम् प्रतियोगिता!

(समानांतर इवेंट) (6-11 वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिए)

स्थानीय टीम द्वारा आभार ज्ञापन, सामूहिक एकासन एवं स्वामी वात्सल्य के साथ कार्यक्रम संपन्न

आचार्य भगवन् के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी

- आपको कुछ डी.टी.पी. और फ्लेक्स के डिजाइन भेजे जाएँगे, जिन्हें आपको प्रदर्शनी के माध्यम से इवेंट साइट पर लगवाने हैं।
- स्थानीय लेवल पर मॉड्यूल्स, स्क्रैप बुक, चार्ट्स आदि आमंत्रित करें।
- बच्चों अथवा श्रावक-श्राविकाएँ भी चार्ट्स आदि रख सकते हैं।

विषय

- श्रमण भगवान महावीर स्वामी
- आचार्य भगवन् के जीवन पर आधारित
- महत्तम महोत्सव की प्रवृत्ति और प्रकल्पों पर आधारित

नोट **–** वरिष्ठ व ज्ञानवान श्रावक-श्राविका के मार्गदर्शन में संघ की धारणाओं के अनुरूप मॉड्यूल्स आदि प्रदर्शित किए जाएँ।

एकरूपता की गूँज

- महत्तम शिखर के अंतिम 50 दिवस के शुभारंभ की एकरूपता की गूँज को स्थानीय संघ के नेतृत्वकर्ता को देशभर में एक साथ पहुँचाना है।
- स्थानीय संघ/क्षेत्र का कोई भी परिवार एवं सदस्य इस कार्यक्रम से वंचित न रहें, यह संकल्प हमें करना है।
- सकल जैन समाज के पदाधिकारियों को उनकी संपूर्ण टीम के साथ आमंत्रित करें।

गणवेश की एकरूपता

- वरिष्ठ सदस्य – सफेद वस्त्र
- युवा – समता युवा संघ गणवेश
- श्राविकाएँ – महिला समिति गणवेश

(सामायिक के समय सामायिक गणवेश)

अंतिम 50 दिन का काउंटडाउन प्रारंभ

22 दिसंबर 2024 से 9 फरवरी 2025 तक - कुल 8 रविवार

स्थानीय स्तर पर **प्रत्येक रविवार को आयाम** - आचार्यश्री के संयम जीवन की खुशबू बिखेरते हुए स्थानीय क्षेत्रों में कार्यक्रमों के आयोजन

22 दिसंबर 2024 ⟶ ***ग्रैंड समर्पणा दिवस***

29 दिसंबर 2024
05 जनवरी 2025
12 जनवरी 2025
19 जनवरी 2025
26 जनवरी 2025
02 फरवरी 2025
⟶ ***6 ग्रैंड रविवार***

09 फरवरी 2025 ⟶ ***ग्रैंड फिनाले***

आचार्य भगवन् के उत्कृष्ट संयम जीवन के कम से कम 50 गुणों की महक जन-जन तक पहुँचानी है।

गुण एवं दृष्टांत तथा उनसे मिली सीख को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनें - 1. ऑरेटर, 2. वर्कशॉप्स, 3. नाटिका, 4. प्रतियोगिताएँ (इन प्रकल्प का प्रारूप केंद्रीय टीम द्वारा भेजा जाएगा)।

आंचलिक स्तर पर प्रत्येक अंचल में 1 कार्यक्रम प्रकल्पों के आधार पर आगे बढ़ाना है। (कार्यक्रम का प्रारूप केंद्रीय टीम द्वारा भेजा जाएगा)

स्थानीय संघ के कार्यक्रमों में ध्यान रखने योग्य ध्यातव्य बिंदु

- आचार्य भगवन् अथवा किसी भी साधु-साध्वी के जीवन पर आधारित कोई डिजिटल डिस्प्ले, डी.टी.पी., पोस्टर, ऑडियो, नाच-गाना, संगीत, वाद्ययंत्र, स्टेज शो या अन्य कोई प्रेजेंटेशन नहीं हो। बिना वाद्ययंत्रों के भजन गायन हो सकता है।
- स्वागत गीत, मंगलाचरण, भक्ति संगीत, भजन, नाटक आदि के कार्यक्रम में नृत्य नहीं होना चाहिए।
- स्टेज पर लगातार रनिंग लाइट, रिफ्लेक्शन लाइट, डिस्को लाइट आदि नहीं होनी चाहिए।
- स्टेज पर स्मोक आदि भी नहीं होना चाहिए।
- कोई भी फंक्शंस में फायर क्रैकर्स, कलर बॉम्ब्स आदि अनावश्यक जीव हिंसा के कार्य कदापि नहीं करने।
- संघ के कोई भी कार्यक्रम हरी घास वाले लॉन या पार्क में नहीं होने चाहिए।

ट्रेजर हंट एक्टिविटी के परीक्षार्थियों हेतु सूचना

महत्तम शिखर का आ गया समा, ज्ञान ध्यान में मन को लो रमा।
श्रुत आरोहक ट्रेजर हंट का, रंग दो जमा।।

सिर्फ तृतीय वर्ष की फाइनल परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिए '**श्रुत आरोहक ट्रेजर हंट**' एक्टिविटी 29-30 नवंबर 2024 के श्रमणोपासक अंक में पहला 20-20 का प्रश्न-पत्र प्रकाशित हुआ है, जो कि प्रथम, द्वितीय, तृतीय तीनों श्रुत आरोहक की पुस्तकों में से आएँगे। आपको 15 दिसंबर 2024 तक इनके उत्तर मो.नं. 8817183900 पर भेजने हैं।

विविध भेंट मार्फत

01 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है -

संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

20,00,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

2,20,000/- कांतिलाल जी छाजेड़, रतलाम
2,20,000/- अरुण कुमार जी मालू, कोलकाता
2,20,000/- अजीत कुमार जी कांकरिया, सूरत
2,20,000/- भागीचंद जी डागा, कोलकाता

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

21,00,000/- राजेश जी रांका, भीलवाड़ा
11,00,000/- गुप्तदान, दिल्ली
11,00,000/- राजेंद्र कुमार जी मनीष कुमार जी माणक जी प्रवीण जी बोथरा, बेंगलुरु/नोखा
11,00,000/- बजरंग जी संतोकचंद जी सिपानी, बेंगलुरु
7,00,000/- माणिकचंद जी नाहर, उदयपुर
5,00,000/- अतुल जी पगारिया, जावरा
3,00,000/- पुखराज जी अमित कुमार जी निश्चय जी बोथरा, अहमदाबाद/गुरुग्राम/अलाय
3,00,000/- अमृत कुमारी जी उगमराज जी मूथा, चेन्नई
1,50,000/- अनिल कुमार जी सांखला, जोधपुर
1,00,000/- पीयूष जी बैद, कोलकाता

51,000/- गुप्तदान, कोलकाता
51,000/- श्वेता जी बच्छावत, कोलकाता
51,000/- कमलचंद जी हंसराज जी पिरोदिया, रतलाम
21,000/- प्रदीप जी सोनावत, दिल्ली
11,000/- माणकचंद जी जैन, चेन्नई

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

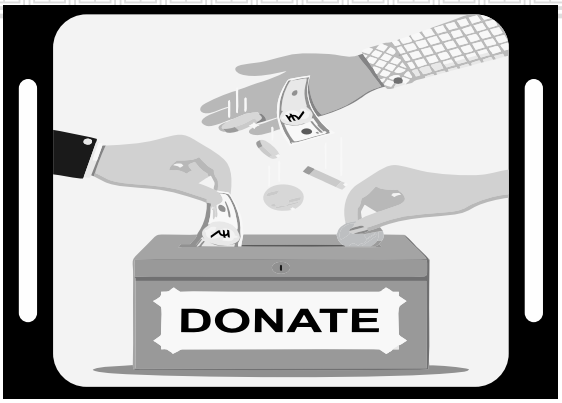

31,95,000/- गुप्तदान

समता भवन, हावड़ा

2,50,000/- समता युवा संघ, हावड़ा

समता भवन, संगरिया

2,00,000/- सुरेश जी जैन, गुरुग्राम

इदं न मम

51,000/- गुप्तदान, उज्जैन
50,000/- बाबूलाल जी हनुमानमल जी लुणावत, नोखा/दिल्ली
38,500/- शांतिलाल जी महेश जी चोपड़ा, बेंगलुरु
30,000/- नागराज जी संजय जी गुणधर, संबलपुर
21,000/- प्रमोद जी चोपड़ा, संबलपुर
21,000/- लाभचंद जी बी. जैन, मलाड़
21,000/- गुप्तदान
21,000/- मोहिनी देवी सांड, करीमगंज
15,000/- अनिलचंद जी कोठारी, चेन्नई
14,200/- अरुण जी कन्हैयालाल जी खुरड़िया, अहमदाबाद
11,000/- मोतीलाल जी जवाहरलाल जी कोठारी, खाचरोद
11,000/- निर्मल जी हुक्मीचंद जी जैन, खिरकिया

11000/– मुणत परिवार, रतलाम (श्री अमृतलाल जी मुणत की पुण्यस्मृति में)
11,000/– छत्तरमल जी बरड़िया, सरदारशहर
11,000/– मोतीलाल जी महेश कुमार जी सांखला, ईरोड
11,000/– वैभव जी मूथा, वापी
11,000/– उत्तमचंद जी बोथरा, पथारकांदी
10,200/– प्रेमचंद जी बोथरा, पथारकांदी
9,000/– टोडरमल जी सुराणा, लाला बाजार
6,200/– जतनलाल जी भूरा, लाला बाजार
5,100/– नेमीचंद जी राहुल जी चोपड़ा, बालोतरा
5,100/– माणकलाल जी प्रवीण कुमार जी जैन, बालोतरा
5,100/– भागीरथ जी पीयूष कुमार जी गोलछा, बायतु
5,100/– महेंद्र जी निपुण जी चोपड़ा, बायतु
5,100/– किशोर कुमार जी गौतमचंद जी सालेचा, बायतु
5,100/– प्रकाश जी मानवेंद्र जी जैन, बायतु
5,100/– अशोक कुमार जी खटोड़, दल्लीराजहरा
5,100/– प्रदीप कुमार जी जैन, मेरठ
5,100/– राजेश जी सत्यम जी टाटिया, बालोद
5,100/– सुबुद्धि जी बरड़िया, सरदारशहर
5,100/– धनराज जी श्यामसुखा, पथारकांदी
5,000/– दूलीचंद जी टाटिया, अर्जुनी
5,000/– सुधीर कुमार जी लुणावत, नरसिंहपुर
5,000/– सुशील कुमार जी बंब, देवली
5,000/– महावीर प्रसाद जी दुगड़, गुवाहाटी/नोखा
5,000/– विमल कुमार जी नाहटा, सरदारशहर
5,000/– सुनील कुमार जी सेठिया, सरदारशहर
5,000/– मोहनलाल जी मनोहरलाल जी बंब, लसड़ावन
5,000/– नंदा जी विमल जी मेहता, मंदसौर
5,000/– बिनॉय जी बोथरा, पथारकांदी
4,400/– राजकरण जी डागा, काठमांडू
4,400/– संतोष कुमार जी रांका, लाला बाजार
3,110/– गुप्तदान
3,100/– संपत देवी श्रीश्रीमाल, जयपुर
3,100/– शुभकरण जी बोथरा, पथारकांदी
3,100/– प्रेम सिंह जी पंकज कुमार जी धीरज कुमार जी सरूपरिया, फतेहनगर/उदयपुर
3,100/– सुजीत जी बोथरा, पथारकांदी
2,500/– सुनीता जी विमल जी कोटेचा, हैदराबाद

2,200/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुजानमल जी मनीष कुमार जी यश कुमार जी पोखरणा, मंगलवाड़ चौराहा, सोमेंद्र कुमार जी बंब, देवली, पारसमल जी वीरेंद्र कुमार जी सोनावत, भीनासर, जेठमल जी रांका, लाला बाजार, डॉ. सुभाष जी रांका, निम्बाहेड़ा

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– कमलचंद जी भूरट, बेलडांगा, मूलचंद जी महेंद्र जी गोलेछा, बालोतरा, खेतमल जी नाहटा, सोलंकियातला, गजराज जी बाबूलाल जी नाहटा, सोलंकियातला, मयूर जी संजय जी रांका, औरंगाबाद, लालचंद जी बाघमार, मेरठ, देवीचंद जी अमित जी चोपड़ा, बालोद, अनिल जी ओरा, नागदा जंक्शन, वकीलचंद जी जैन, मेरठ, संजय कुमार जी जैन, मेरठ, पारसमल जी दौलतराज जी बाघमार, पाटोदी, मीठालाल जी नागराज जी सालेचा, पाटोदी, कांतिलाल जी मोहनलाल जी कांकरिया, पाटोदी, राजेंद्र कुमार जी मोहनलाल जी कांकरिया, पाटोदी, लूणचंद जी अमोलकचंद जी संकलेचा, पाटोदी, पीयूष जी मांडोत, पुणे, सुरेश जी आशीष जी अतीत जी सहलोत, निम्बाहेड़ा, रूपचंद जी बरड़िया, सरदारशहर, डॉ. राजेंद्र कुमार जी जैन, नगरी, किशोर कुमार जी जैन, नगरी, सुनील कुमार जी जैन, नगरी, सुनील कुमार जी झेलावत, नगरी, कल्पतरु जी डालचंद जी लूणिया, सूरत, अमित कुमार जी मारू (जैन), फतेहनगर, शांतिलाल जी जारोली, सेंती, बसंतीलाल जी कदमलिया, चित्तौड़गढ़, सागरमल जी जीवनलाल जी बंब, लसड़ावन, कमलेश कुमार जी फतेहलाल जी चावत, लसड़ावन, बाबूलाल जी जारोली, लसड़ावन, दिनेश कुमार जी मनोहरलाल जी बंब, लसड़ावन, विजय सिंह जी अमर सिंह जी मेहता, बड़ीसादड़ी, प्रकाशचंद जी मदनलाल जी धींग, बोहेड़ा, सुभाष जी शुभम जी नाहटा, जानेफल

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रकाश जी छिपानी, रतलाम, गुप्तदान, पुणे, गुप्तदान, विल्लुपुरम, सुरेश जी कृतेश जी सालेचा, देवकर

1,500/– सुनीता जी तुषार जी बरमेचा, एलंदुरपेट

1,500/– विनीत जी हेमंत जी पितलिया, रतलाम

1,121/– गुप्तदान

1,110/– कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– हीरालाल जी गांधी, पेटलावद, महेंद्र जी चोपड़ा, सेलंबा, रुचि जी कांकरिया, सिलचर, चार्वी जी कांकरिया, सिलचर, हेमचंद जी सुराणा, लाला बाजार, मुन्नालाल जी निर्मल जी सेठिया, सरदारशहर, किशनलाल जी भंडारी, बोहेड़ा, गुप्तदान, **मेरठ से–** सुधीर कुमार जी जैन, अनिल कुमार जी जैन, विजेश जी जैन, देवेंद्र कुमार जी जैन, सत्येंद्र कुमार जी जैन, शांतिप्रसाद जी जैन, सुनील कुमार जी जैन, अजय कुमार जी जैन, शिखरचंद जी जैन, **निम्बाहेड़ा से–** लालचंद जी मट्ठा, गजेंद्र कुमार जी नवलखा, अशोक कुमार जी कुशल जी डूंगरवाल, संदीप जी धर्मेंद्र जी जितेंद्र जी नागोरी, निलेश कुमार जी मेहता, रोशनलाल जी मनीष जी भरत जी खैरोदिया, कानमल जी वीरेंद्र जी अभाणी, बलवंत सिंह जी डांगी, मिट्ठूलाल जी सुशील जी लोढ़ा, पारस जी पंकज जी छाजेड़, मुकेश कुमार जी नागोरी, रतनलाल जी पोरवाल, वीरेश कुमार जी चपलोत, गजेंद्र जी अशोक जी चौधरी, दिलीप कुमार जी नागोरी, सत्यमेव जी सेठिया, सागरमल जी सालेचा, विमल कुमार जी कोठारी, मनीष कुमार जी जारोली, पार्थ जी रांका, अरुण कुमार जी अशोक जी अनिल जी मारू, चंद्रेश जी खैरोदिया

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– जयचंदलाल जी गेलड़ा, चास (बोकारो), राजेंद्र जी प्रताप सिंह जी किमती, पिपलियामंडी, संजय कुमार जी सुआलाल जी दक, बारडोली, भरत कुमार जी ढेलावत, निम्बाहेड़ा, मंजुला जी कांकरिया, सिलचर, धीरज कुमार जी कांकरिया, सिलचर, आशीष जी सोनी, निम्बाहेड़ा, बृजमोहन जी तातेड़, सरदारशहर

501/– गौतम जी चोरड़िया, रायपुर

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मधु जी शीतल कुमार जी भानावत, उदयपुर, अभिषेक जी बोथरा, पथारकांदी, धर्मचंद जी मेहता, बड़ीसादड़ी, प्रकाश जी मेहता, बड़ीसादड़ी, सुंदर देवी नाहर, बेगूँ, सुषमा जी नाहर, बेगूँ, **निम्बाहेड़ा से–** अंशुल जी चेलावत, हिम्मत सिंह जी भाणावत, आशीष कुमार जी नागोरी, धर्मचंद जी मनीष जी मुर्डिया

******* दानपेटी योजना *******

38,000/– जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु

14,500/– धूड़मल जी माणिकचंद जी डागा, बेंगलूरु

5,200/– कैलाशचंद जी दक, कुशलनगर

5,200/– जीवराज जी चंदा देवी बाँठिया, गंगाशहर

5,100/– विजय कुमार जी दिनेश कुमार जी राजेंद्र कुमार जी सिपानी, उदयरामसर

5,100/– अरुण जी मनीष जी कोठारी, छोटी सादड़ी

5,000/– संजय जी सिपानी, बेंगलुरु

3,100/– विजय सिंह जी प्रवीण कुमार जी, गंगाशहर

3,100/– अनिल जी लक्ष्मीचंद जी बोथरा, गंगाशहर

3,000/– डॉ. सुभाष जी रांका, निम्बाहेड़ा

2,551/– निर्मल कुमार जी भूरा, गंगाशहर

2,501/– बीकानेर ट्रेडिंग कंपनी, गंगाशहर

2,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– धर्मचंद जी लक्ष्मीचंद जी बंबकी, बेंगलुरु, राजकरण जी पुगलिया, गंगाशहर, सुरेश जी आशीष जी अतीत जी सहलोत, निम्बाहेड़ा, विमलचंद जी नाहटा, सरदारशहर, सुशील कुमार जी मोहन जी सुराणा, गंगाशहर, धीरेंद्र जी विशाल जी बाँठिया, भीनासर, जीतमल जी धारीवाल, गंगाशहर

2,200/– सुशील कुमार जी सेठिया, गंगाशहर

2,140/– गुप्तदान

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– ज्ञानेश कुमार जी बाफना, बेंगलुरु, सुभाषचंद जी ऋषभ जी सिंघवी, बेंगलुरु, सुबुद्धि जी बरड़िया, सरदारशहर, शांतिलाल जी दुगड़, भीनासर, जेठमल जी सेठिया, रायपुर,

सुमतिलाल जी आदर्श जी बाँठिया, भीनासर, महेंद्र कुमार जी सोनावत, भीनासर, **छोटी सादड़ी से–** सुशील कुमार जी डूंगरवाल, नेमीचंद जी डूंगरवाल, पीयूष कुमार जी तेजीवत, अनिल कुमार जी प्रतीक जी नागोरी, राकेश जी मुर्ड़िया, **गंगाशहर से–** संतोकचंद्र जी सिपानी, मूलचंद जी गणेशमल जी बोथरा, पुखराज जी ऋषभ जी सुराणा, पवन कुमार जी सोनावत, मोहनी देवी कन्हैयालाल जी छल्लाणी

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– अशोक कुमार जी महादेव जी भंसाली, गंगाशहर, संजय जी श्रीमाल, चामराजनगर, कन्हैयालाल जी श्रीमाल, चामराजनगर, राजकुमार जी देसरला, मैसूर, अशोक कुमार जी बोहरा, पेरियापटना, रामलाल जी कोठारी जी होलेनरसिपुर, महावीर जी कोठारी, होलेनरसिपुर, लोकेश जी कोठारी, होलेनरसिपुर

1,600/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पानी बाई मेहता, बेंगलुरु, शांतिलाल जी बोथरा, गंगाशहर, पारसमल जी चंदनमल जी मुर्ड़िया, छोटी सादड़ी

1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– कुशालचंद जी दफ्तरी, भीनासर, किरण कुमार जी श्रीमाल, चामराजनगर, अभय कुमार जी कोठारी, होलेनरसिपुर, अभय कुमार जी ललित जी मुर्ड़िया, निम्बाहेड़ा, भरत कुमार जी ढेलावत, निम्बाहेड़ा, अगरचंद जी विमल कुमार जी सेठिया, भीनासर, **गंगाशहर से–** प्रेमचंद जी धर्मेंद्र जी सेठिया, सूरजमल जी किशनलाल जी बोथरा, पाल जी लालानी, डूंगरमल जी विकास जी सेठिया, धूड़मल जी जीतमल जी डागा, निर्मल कुमार जी विनीत जी सेठिया, छगनमल जी माणकचंद जी सोनावत, मूलचंद जी हनुमानमल जी सुराणा, नवरतन जी धीरज कुमार जी बोथरा

1,200/– किशनलाल जी बोथरा, गंगाशहर

1,200/– किरण देवी बाँठिया, भीनासर

1,171/– जतनलाल जी दीपक जी पुगलिया, गंगाशहर

1,151/– सुंदरलाल जी सिपानी (बीकानेर स्वीट्स), बेंगलुरु

1,133/– कन्हैयालाल जी अशोक जी डागा, गंगाशहर

1,124/– संतोषचंद जी सुराणा, गंगाशहर

1,114/– मदनलाल जी डागा, गंगाशहर

1,111/– शिखरचंद जी मनीष जी सुराणा, गंगाशहर

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सीमा जी मेहता, बेंगलुरु, प्रकाशमल जी संचेती, शोभना, मदनलाल जी गन्ना, होलेनरसिपुर, मनीष कुमार जी गांधी, होलेनरसिपुर, सुरेशचंद बंबकी, कामराजपेट, मदनलाल जी कोठारी, कामराजपेट, मुन्नालाल जी निर्मल जी सेठिया, सरदारशहर, दूलीचंद जी कांकरिया, नोखा/भीनासर, गुप्तदान, गुप्तदान, गौतमचंद जी नमन जी कोटड़िया, संबलपुर, **गंगाशहर से–** हनुमानमल जी चोरड़िया, जतनलाल जी जय कुमार जी पींचा, मूलचंद जी रेखचंद जी धनराज जी सेठिया, मूलचंद जी रेखचंद जी अमरचंद जी सेठिया, पूनमचंद जी सेठिया, केशरीचंद जी सेठिया, मूलचंद जी रेखचंद जी शिखरचंद जी सेठिया, भीखमचंद जी महेंद्र कुमार जी बोथरा, पदमचंद जी वीरेंद्र जी सुराणा, वीरेंद्र कुमार जी सेठिया, अमित कुमार जी बुच्चा, चंदनमल जी चोरड़िया, प्रकाशचंद जी दुलीचंद जी बैद, विनय सिंह जी छाजेड़, चैनरूप जी बैद, पंकज कुमार जी बरड़िया, करणीदान जी सुंदरलाल जी बोथरा, पारसमल जी सेठिया, आसकरण जी महेंद्र जी सोनावत, खुमचंद जी सोनावत, ताराचंद जी राजकरण जी सोनावत, नवरत्न जी कुशल जी संचेती, करणीदान जी सुराणा, पारसमल जी भूरा, निर्मल कुमार जी छाजेड़, सुरेंद्र कुमार जी संदीप जी सुराणा, तोलाराम जी प्रकाशचंद जी सुराणा, पूरणमल जी प्रकाशचंद जी बोथरा, महावीर जी बोथरा, मूलचंद जी शिखरचंद जी धारीवाल, मांगीलाल जी पदमचंद जी बैद, आसकरण जी बैद, सुशील कुमार जी पुगलिया, सुंदरलाल जी पानमल जी सुराणा, सुरेंद्र कुमार जी चोपड़ा, प्रकाशचंद जी भूरा, धूड़चंद जी विजयराज जी बाँठिया, दिलीप कुमार जी बाँठिया, बालचंद जी महेंद्र कुमार जी बोथरा, मूलचंद जी कमलचंद जी सिपानी, सुभाषचंद जी डागा, गंगाराम जी दिनेश कुमार जी लुणावत, माणिकचंद जी सुराणा, नथमल जी विनोद कुमार जी बोथरा, गोवर्धनलाल जी विमलचंद जी सुराणा, नवरतन

जी विकास कुमार जी बोथरा, खेमचंद जी सज्जन कुमार जी छल्लानी, मोतीलाल जी विमला देवी पींचा, छगनलाल जी विनोद कुमार जी भंसाली, इंद्रचंद जी संदीप जी भूरा, **निम्बाहेड़ा से–** लालचंद जी कमलेश जी मट्ठा, गजेंद्र कुमार जी नवलखा, देवीलाल जी कोठारी, कानमल जी वीरेंद्र जी अभाणी, संदीप जी धर्मेंद्र जी जितेंद्र जी नागोरी, निलेश कुमार जी मेहता, रमेश जी ललित जी पोरवाल, अतिसुंदर जी कुदाल, सुभाष जी लोकेश जी कंठालिया, सागरमल जी सालेचा, विमल कुमार जी कोठारी, मनीष कुमार जी जारोली, पार्थ जी रांका, अरुण कुमार जी अशोक जी अनिल जी मारू, चंद्रेश कुमार जी खैरोदिया, सुरेश कुमार जी खैरोदिया, रोशनलाल जी मनीष जी भरत जी खैरोदिया, बलवंत कुमार जी डांगी, मिट्ठूलाल जी सुशील जी लोढ़ा, पारसमल जी पंकज जी छाजेड़, चंद्र सिंह जी सरूपरिया, मुकेश कुमार जी नागोरी, रतनलाल जी पोरवाल, वीरेश कुमार जी चपलोत, गजेंद्र जी अशोक जी चौधरी, रमेशचंद्र जी शंकरलाल जी कुदाल, विमल कुमार जी चपलोत, प्रकाशचंद्र जी चपलोत, **छोटी सादड़ी से–** अशोक कुमार जी डूंगरवाल, खुशाल जी डूंगरवाल, सुमति कुमार जी चावत, राजमल जी पंकज जी मुर्ड़िया, लक्ष्मीलाल जी कोठारी, सुजानमल जी तेजीवत, जसवंत जी कासमा, विमल कुमार जी शीतल जी नलवाया, विमल कुमार जी कोठारी, सौभाग सिंह जी मेहता, संजय कुमार जी मुणोत, **भीनासर से–** महेंद्र कुमार जी सेठिया, रतनलाल जी मोतीलाल जी सेठिया, शांतिलाल जी लालाणी, करणीदान जी सुनील कुमार जी सेठिया, भंवरलाल जी कोचर, गुप्तदान, अगरचंद जी कमलचंद जी सेठिया, अगरचंद जी धनराज जी सेठिया, राजेश जी बच्छावत, **उदयरामसर से–** किशनलाल जी सिपानी, हरिमोहन जी सिपानी, नवरतनमल जी सिपानी

1050/– मनोज कुमार जी अंकुर जी भंसाली, गंगाशहर

1,011/– अभिषेक जी अशोक जी बाँठिया, भीनासर

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– विमल कुमार जी सेठिया, सरदारशहर, सुनील कुमार जी सेठिया, सरदारशहर, **निम्बाहेड़ा से–** अशोक कुमार जी महावीर जी सिंघवी, अशोक जी कुशल जी डूंगरवाल, सागरमल जी पारसमल जी सांड, दीपचंद जी वडारा, आशीष जी नागोरी, अशोक जी पिछोलिया, दिलीप कुमार जी नागोरी, सत्यमेव जी सेठिया, रोशनलाल जी चपलोत, आशीष जी सोनी, **गंगाशहर से–** लोचन कुमार जी दुगड़, दूलीचंद जी महेंद्र कुमार जी चोरड़िया, राजेश कुमार जी बोथरा, जेठमल जी सुराणा

900/– प्रकाशचंद जी डागा, गंगाशहर

800/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मूलचंद जी सेठिया, भीनासर, **गंगाशहर से–** राजकरण जी बैद, मांगीलाल जी भूरा, माणकचंद जी सुरेंद्र कुमार जी पूनमचंद जी बाँठिया, रतनलाल जी मोली देवी सुराणा

780/– सुंदर देवी बुरड़, गंगाशहर

710/– रामलाल जी शुभकरण जी बोथरा, गंगाशहर

700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– इंद्रचंद जी बोथरा, गंगाशहर/देशनोक, प्रकाश जी शैलांदु जी गांग, **गंगाशहर से–** शांति कुमार जी लूणिया, नवरतन जी हितेश जी बेगानी, रावतमल जी सुशील कुमार जी संचेती, माणकचंद जी विनीत कुमार जी बैद, विमलचंद जी जय कुमार जी कोचर, सोहनलाल जी बरड़िया, झंवरलाल जी राकेश जी बरड़िया, शांतिलाल जी बैद, राजेंद्र जी बाँठिया, ममोल देवी जयचंदलाल जी सेठिया, नंदकिशोर जी सांड, पूनमचंद जी चंदनमल जी बैद, उदयचंद जी सोहनलाल जी बरड़िया, लूणकरण जी अशोक कुमार जी डागा, शिखरचंद जी बोथरा, करणीदान जी भूरा, गुलाबचंद जी अशोक कुमार जी सुराणा, मूलचंद जी डागा, गुलाबचंद जी बोथरा, विमलचंद जी बोथरा, बजरंगलाल जी बोथरा, शिखरचंद जी बोथरा, सोहनलाल जी रणजीत कुमार जी भूरा, जतनलाल जी आशा देवी मरोटी, रतनलाल जी भूरा, मीनू जी बाँठिया, विजयचंद जी सुराणा, **भीनासर से–** पांचीलाल जी धीरज कुमार जी बैद, सुशील कुमार जी सोनावत, नरेंद्र कुमार जी विकास कुमार जी बुच्चा, इंद्रचंद जी वीरेंद्र जी सेठिया, जयचंदलाल जी सेठिया, जिनेंद्र कुमार

जी बाँठिया, पत्रकार प्रकाश जी पुगलिया, मेघराज जी बोथरा, कोडामल जी संदीप जी बोथरा, पन्नालाल जी बोथरा, राजकरण जी लोकेश जी बोथरा, मांगीलाल जी बाबूलाल जी बोथरा, गौतमचंद जी बोथरा, लहरचंद जी विजय जी पींचा, हड़मानमल जी उत्तमचंद जी पारख, देवेंद्र जी बोथरा, अगरचंद जी तोलाराम जी सेठिया

555/– तिलक जी पुखराज जी सहलोत, निम्बाहेड़ा

551/– राजेश कुमार जी सुखानी, गंगाशहर

550/– गुप्तदान

550/– विनोद कुमार जी सुराणा, गंगाशहर

520/– मोहनलाल जी बुच्चा, भीनासर

511/– सांड परिवार, भीनासर

501/– माणकचंद जी अरिहंत जी सिपानी, गंगाशहर

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– भंवरलाल जी राजकुमार जी, उदयरामसर, अशोक कुमार जी सिपानी, उदयरामसर, पूजा जी लुणिया, नोखा, सरिता देवी लुणिया, नोखा, कमलेश जी बोहरा, पेरियापटना, रूपचंद जी बरड़िया, सरदारशहर, बृजमोहन जी तातेड़, सरदारशहर, अमरप्रकाश जी बरड़िया, सरदारशहर, समता बालिका मंडल, गंगाशहर–भीनासर, अशोक कुमार जी बैद, कानासर, गुप्तदान, धर्मेंद्र जी कोचर, बीकानेर, गुप्तदान, **गंगाशहर से–** तोलाराम जी राजकुमार जी बोथरा, इंद्रचंद जी भंडारी, प्रकाशचंद जी दिलीप कुमार जी सिपानी, हुलासमल जी पींचा, स्नेहलता जी चोपड़ा, पदमचंद जी कमलचंद जी सुराणा, गुप्तदान, मेघराज जी सुरजी देवी डागा, राजेंद्र कुमार जी बोथरा, रतनलाल जी सुराणा, कमलचंद जी सोनावत, खुमानचंद जी पीयूष जी सेठिया, अशोक कुमार जी तुलसीराम जी बोथरा, लक्ष्मी देवी सुराणा, बाबूलाल जी लुणावत, प्रकाशचंद जी सांड, भंवरलाल जी आनंद जी सिपानी, शिवरतन जी पंचारिया, इचिया देवी भूरा, लूणकरण जी डागा, धन्नी देवी सेठिया, राजकुमार जी रवि जी भूरा, हनुमानमल जी दीपक जी डागा, रत्नी देवी बाँठिया, ओमप्रकाश जी मनोज जी बुच्चा, संपतलाल जी सेठिया, पदमचंद जी बोथरा, सुनील कुमार जी सोनावत, शुभकरण जी सेठिया, झंवरलाल जी रतनलाल जी भूरा, जसकरण जी सेठिया, मनोज कुमार जी गांग, कमलचंद जी गिड़िया, इंद्रचंद जी लालानी, संतोकचंद जी महेंद्र जी सेठिया, बच्छराज जी बोथरा, नवरतन जी डागा, शांति देवी इंद्रचंद जी डागा, नथमल जी जतनलाल जी सांड, मदनलाल जी मालू, मोंटू जी दिलीप जी कावड़िया, फूसराज जी प्रेमचंद जी बैद, प्रकाशचंद जी सेठिया, शिवरतन जी श्रीपाल जी भूरा, धर्मचंद जी असलेखा जी सोनावत, मगनमल जी छाजेड़, माणकचंद जी छाजेड़, सुभाष जी बोथरा, केशरीचंद जी नाहटा, दानमल जी सुराणा, संपतलाल जी दिनेश जी सुराणा, विजयचंद जी बरड़िया, भीखमचंद जी प्रमोद कुमार जी सुराणा, गौतम जी लालाणी, पारसमल जी बुच्चा, जयचंदलाल जी प्रदीप जी संजीव जी सांड, शेषकरण जी लालाणी, दुर्गा देवी सिपानी, मूलचंद जी भंवरी देवी सेठिया, दिलीप कुमार जी मंयक जी बोथरा, मोहनलाल जी बोथरा, सुधीर कुमार जी डागा, बालचंद जी कांतिलाल जी संचेती, राजकरण जी रौनक जी डागा, हनुमानमल जी रतनलाल जी सुराणा, शांति देवी भूरा, इंद्रचंद जी छाजेड़, कन्हैयालाल जी विनय कुमार जी सेठिया, प्रकाशचंद जी राखेचा, रतनलाल जी अंकित जी मालू, भोलाराम जी सुराणा, जयचंदलाल जी महेंद्र कुमार जी बोथरा, इंद्रचंद जी विनय जी बोथरा, राजेंद्र कुमार जी छल्लानी, मिलापचंद जी कांकरिया, मुन्नीलाल जी ललित कुमार जी सुराणा, मुन्नीलाल जी माणकचंद जी सुराणा, अशोक कुमार जी बोथरा, सुरेश कुमार जी बोथरा, मेघराज जी डागा, विनोद कुमार जी फलोदिया, हीरालाल जी बाँठिया, जयकुमार जी बंसल, चंपालाल जी बच्छावत, आसकरण जी चंद्रप्रकाश जी बच्छावत, पूनमचंद जी सुराणा, शिखरचंद जी सिपानी, लहरचंद जी सिपानी, रतनलाल जी सिपानी, गुलाबचंद जी लूणिया, नवदीप जी सिपानी, भंवरलाल जी माणकचंद जी सिपानी, रतनलाल जी बोथरा, अशोक जी बोथरा, जेठमल जी नवरतन जी डागा, प्रवीण कुमार जी नाहटा, जितेंद्र कुमार जी बैद, विमलचंद जी डागा,

भंवरलाल जी सुराणा, माणकचंद जी मनोज कुमार जी पुगलिया, जयचंदलाल जी लोकेश जी पींचा, गणेशमल जी भूरा, कमल कुमार जी डागा, नवीन कुमार जी डागा, मुनीलाल जी मोतीलाल जी सुराणा, कमलचंद जी तुषार जी बरड़िया, जुगलकिशोर जी मोहित जी बाँठिया, सुरेंद्र कुमार जी डागा, पूनमचंद जी सुनील कुमार जी बोथरा, झंवरलाल जी नवलखा, भंवरलाल जी नवलखा, मूली देवी चोरड़िया, शांतिलाल जी नवरतन जी पुगलिया, **निम्बाहेड़ा से–** हस्तीमल जी मुकुल जी छाजेड़, अंशुल जी चेलावत, जयेश जी कोठारी, राजेश कुमार जी सोनी, विजय सिंह जी दलाल, सुरेशचंद्र जी कुदाल, नाथूलाल जी जारोली, सूरजमल जी बक्सी, हस्तीमल जी ज्ञानमल जी नाबरिया, विकास जी नाहर, मदनलाल जी अमन जी छाजेड़, राजमल जी चपलोत, माणकलाल जी चपलोत, हिम्मत सिंह जी भाणावत, हीरालाल जी धींग, विनोद जी जारोली, पारसमल जी खटोड़, विनोद कुमार जी सिंघवी, अनिल कुमार जी नवलखा, मान सिंह जी जारोली, पारसमल जी पोखरना, सागरमल जी सहलोत, अशोक जी उज्ज्वल जी कंठालिया, धर्मचंद जी मनीष जी मुर्ड़िया, शौकिन कुमार जी धींग, गणेशलाल जी चपलोत, भैरुलाल जी छाजेड़, दिनेश जी गणेशलाल जी धींग, भंवरलाल जी सोनी, **भीनासर से–** शांतिलाल जी भूरा, चंचल देवी सुराणा, मुल्तानचंद जी पंकज कुमार जी बैद, नवरतन जी सोनावत, कंचन देवी गोलछा, मांगीलाल जी कमल जी सेठिया, कमलचंद जी पटवा, मांगीलाल जी सांड, प्रकाशचंद जी सज्जन देवी लूणावत, रिखबचंद जी ललित जी सेठिया, अगरचंद जी बाबूलाल जी सेठिया, तोलाराम जी सोनावत, भूरचंद जी किशोर कुमार जी गोलछा, तोलाराम जी निर्मल कुमार जी सोनावत, केशरीचंद जी गुलगुलिया, **भदेसर से–** पारसमल जी मोदी, अशोक कुमार जी मोदी, उदयलाल जी खटोड़, शांतिलाल जी खटोड़, माणकलाल जी खटोड़, सुरेश जी सरूपरिया, हीरालाल जी खटोड़, संजय कुमार जी सरूपरिया, विजय जी सरुपरिया, मोहन जी चपलोत, **कोरबा से–** अशोकचंद जी पींचा, मूलचंद जी कोटड़िया, किशोर कुमार जी पींचा, राजकुमार जी धारीवाल, गौतमचंद जी कोटड़िया, कमलचंद जी बोथरा, धर्मेंद्र जी बोथरा, अजय जी बोथरा, उज्ज्वल जी बोथरा, **छोटी सादड़ी से–** राजीव जी सिद्धार्थ जी नलवाया, नरेंद्र कुमार जी श्रेणिक जी नाहर, माणकचंद जी सुराणा, पारसमल जी आशीष जी मुर्ड़िया

********** जीवदया **********

15,000/– चतुर्भुज जी सिपानी, बीकानेर (श्री पंकज जी सिपानी व श्रीमती जयश्री देवी सिपानी की पुण्यस्मृति तथा मीनल जी सिपानी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में)

11,000/– गुप्तदान

10,200/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, खैरागढ़

5,100/– महेश कुमार जी वर्धमान जी जैन, बगुमुंडा (श्रीमती सावित्रीदेवी पत्नी नानूराम जी जैन की स्मृति में)

5,100/– रूपचंद जी कांतिलाल जी गौतम जी नरेश जी बाघमार, बालोतरा

5,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, चारमा

4,100/– झाबरचंद जी सुरेश जी बरड़िया, गीदम (सिद्धेश जी के अठाई तप के उपलक्ष्य में)

4,000/– खेतमल जी अशोक जी विकास जी भंसाली, गीदम

3,111/– गुप्तदान, संगरियामंडी

3,100/– प्रकाशचंद जी वया परिवार, मैसूर (श्री विकास जी वया की पुण्यस्मृति में)

3,100/– लूणचंद जी नरेश जी विमल जी सालेचा, बालोतरा

3,100/– मनोहरलाल जी संदीप जी चोपड़ा, बालोतरा

2,200/– सायर देवी बोथरा, गोलकगंज

2,100/– सरोज देवी बाँठिया, बीकानेर

2,100/– समता महिला मंडल, खैरागढ़

2,100/– मेघराज जी संतोष कुमार जी गोलेछा, बालोतरा

2,000/– मनीष जी बोहरा, बीकानेर

1,501/– दिनेश जी जैन, सवाई माधोपुर

1,500/– गुप्तदान

1,500/– लोचन कुमार जी दुगड़ परिवार, गंगाशहर

1,300/- विजय कुमार जी जसराज जी सुराना, गीदम
1,300/- शांतिलाल जी नीलमचंद जी बुरड़, गीदम
1,300/- जवाहरलाल जी शांतिलाल जी सुराणा, गीदम

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- खेतमल जी अनूपचंद जी, सोलंकियातला, दीपचंद जी कमलेश कुमार जी रायसोनी, गुंडरदेही, जीवनलाल जी टीकमचंद जी चोरड़िया, धमतरी, श्री स्थानकवासी जैन संघ, उल्वे (नवी मुंबई), प्रदीप जी रतनलाल जी जैन, धुलिया, कमलचंद जी डागा, दिल्ली, विमलचंद जी हेमचंद जी सुराना, गीदम, आनंदराज जी दिलीप जी महेंद्र जी गोलछा, गीदम, पारसमल जी रमेश जी सुराणा, गीदम, सुरेंद्र जी जैन, जलगाँव (श्री लाडूलाल जी पोरवाल चेकेरी वालों की पुण्यस्मृति में), सुनील कुमार जी सेठिया, भीनासर, सांड परिवार, धुबड़ी (श्रीमती जतन देवी सांड के देहावसान पर), गौतमचंद जी नमन कुमार जी कोटड़िया, संबलपुर, शारदा जी शांतिलाल जी बोहरा, बेंगलूरु

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- नैनीश कुमार जी जैन, साजापुर, गुप्तदान, गुप्तदान, विल्लुपुरम, **सोलंकियातला से-** गजराज जी लक्ष्मणचंद जी, अमृतलाल जी भंवरलाल जी, मांगीलाल जी लूणकरण जी, मिश्रीमल जी राणीदान जी
870/- महावीर जी सुराणा, गीदम
700/- राकेश कुमार जी गुलेच्छा, रायसर
700/- पुखराज जी ऋषभ जी सुराणा, गंगाशहर

600/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गीदम से- मोतीलाल जी दिनेश जी सालेचा, महावीर जी शांतिलाल जी बुरड़, विजय जी संतोषचंद जी चोपड़ा, मांगीलाल जी ललित जी गोलछा, जवाहरलाल जी अभिषेक जी लोढ़ा
530/- मोहनलाल जी भीमराज जी बुरड़, गीदम

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गजराज जी बाबूलाल जी, सोलंकियातला, मदनलाल जी हर्षित जी बोहरा, उदयपुर, नमन जी नलवाया, सागोद, संतोष जी नागोरी, अहमदाबाद, धनराज जी अभाणी, अहमदाबाद, राजेंद्र जी पुखराज जी बुरड़, वाण्याविहीर, गुप्तदान, धन्नी देवी सेठिया, गंगाशहर, गुप्तदान, **गीदम से-** धनराज जी पवन जी लोढ़ा, राजेंद्र जी लक्ष्य जी बुरड़, गौतम जी शुभम जी नाहटा, तेजमल जी मदनलाल जी छाजेड़, रमेश जी मदनलाल जी गोलेछा, अशोक कुमार जी देवकरण जी बुरड़, भूरचंद जी पीयूष कुमार जी बुरड़, नेमीचंद जी विकेश जी सुराणा, पारसमल जी भंवरलाल जी गोलछा, अरुण कुमार जी देवेंद्र जी सुराणा, जोगराज जी स्वरूपचंद जी सुराणा, गौतमचंद जी बाफना, मगराज जी शुभम जी सालेचा, रावलमल जी हर्ष जी लोढ़ा, माणकलाल जी पलकेश जी भंसाली

श्रुत सहयोगी

51,000/- नवरतनमल जी जैन, भीलवाड़ा
51,000/- अनिलचंद जी कोठारी, चेन्नई

संघ सहयोग

2,000/- पवन जी जैन, सवाई माधोपुर
1,250/- कांतिलाल जी सुजानमल जी पिरोदिया परिवार, रतलाम
500/- मनोज कुमार जी जैन, जयपुर

समता प्रचार संघ

25,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, सिलचर
20,000/- बाबूलाल जी हनुमानमल जी लुणावत, नोखा/दिल्ली
11,111/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखागाँव (पर्युषण पर्व में धर्म आराधना के उपलक्ष्य में)
9,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, गोलकगंज
2,500/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, कंकालेश्वर
1,250/- कांतिलाल जी सुजानमल जी पिरोदिया परिवार, रतलाम
1,000/- खेतमल जी अशोक जी विकास जी भंसाली, गीदम
1,000/- झाबरचंद जी सुरेश जी बरड़िया, गीदम (सिद्धेश जी के अठाई तप के उपलक्ष्य में)

700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गीदम से– विजय कुमार जी जसराज जी सुराणा, शांतिलाल जी नीलमचंद जी बुरड़, जवाहरलाल जी शांतिलाल जी सुराणा, पारसमल जी रमेश जी सुराणा

600/– विमलचंद जी हेमचंद जी सुराणा, गीदम

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गीदम से– मोहनलाल जी भीमराज जी बुरड़, धनराज जी पवन जी लोढ़ा, मोतीलाल जी दिनेश जी सालेचा, महावीर जी शांतिलाल जी बुरड़, रमेश जी मदनलाल जी गोलेछा, अशोक कुमार जी देवकरण जी बुरड़, भूरचंद जी पीयूष कुमार जी बुरड़, विजय कुमार जी संतोषचंद जी चोपड़ा, नेमीचंद जी विकेश जी सुराणा, महावीर जी सुराणा, मांगीलाल जी ललित जी गोलछा, अरुण जी देवेंद्र जी सुराणा, जोगराज जी स्वरूपचंद जी सुराणा, जवाहरलाल जी अभिषेक जी लोढ़ा, गौतमचंद जी बाफना

*** समता सरिता सेवा (विहार सेवा) ***

11,000/– अनिलचंद जी कोठारी, चेन्नई

3,000/– जयचंदलाल जी गेलड़ा, चास (बोकारो)

2,000/– नैनीश कुमार जी जैन, साजापुर

1,250/– कांतिलाल जी सुजानमल जी पिरोदिया परिवार, रतलाम

**** समता साहित्य स्टॉल अनुदान ****

11,000/– गुणवंत जी अलका जी जैन, उदयपुर

5,100/– महेंद्र जी मुकेश जी हेमांश जी कातरेला, विलुप्पुरम

5,100/– राजमल जी सागरमल जी पंवार, कानवन

5,000/– अनिता जी बाफना, लखनपुरी

4,100/– सोहनलाल जी श्रीश्रीमाल, दुर्ग

2,100/– अनिल कुमार जी लुणिया, बदनावर

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– झमकलाल जी अनिल जी चोरड़िया, खाचरौद, कमल जी पिरोदिया, रतलाम, विनोद कुमार जी मेहता, रतलाम, कांतिलाल जी छाजेड़, रतलाम, दुगड़ परिवार, जोरावरपुरा, नैनीश कुमार जी जैन, साजापुर, सुशील जी गोरेचा, रतलाम

1,500/– गुप्तदान

1,100/– मदन सिंह जी रतनलाल जी मेहता, रतलाम

1,100/– निशांत जी बाघमार, भीलवाड़ा

1,100/– शारदा जी शांतिलाल जी बोहरा, बेंगलूरु

1,000/– गुप्तदान, विल्लुपुरम

500/– गौतम जी चोरड़िया, रायपुर

500/– गुप्तदान

**** साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग ****

5,000/– वर्षा जी दक, भीलवाड़ा

2,100/– गुप्तदान

2,100/– इंदरचंद जी रतिलाल जी देसरड़ा, पुणे

500/– जयचंदलाल जी गेलड़ा, चास (बोकारो)

******** समता मिति ********

10,000/– इंदरचंद जी बच्छावत, बीकानेर (श्री भीखमचंद जी तथा श्रीमती चंपा देवी भीखमचंद बच्छावत की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में)

***** समता संस्कार पाठशाला *****

2,000/– मोनिला जी लोकेश जी जैन, रायपुर

1,250/– कांतिलाल जी सुजानमल जी पिरोदिया परिवार, रतलाम

1,000/– गुप्तदान, विल्लुपुरम्

******** श्रमणोपासक भेंट ********

2,000/– श्री वर्धमान श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (मोक्ष द्वार, बेंगलुरु द्वारा)

*** सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति) ***

11,111/– हरि सिंह जी यशवंत बाई कंठालिया, बड़ीसादड़ी (नरेंद्र कुमार जी को बैंक में अधिकारी पद पद पदोन्नत होने तथा पौत्री अरिहा के जन्मोत्सव पर)

1,1000/– गुप्तदान, बीकानेर

1,100/– मान सिंह जी विद्या जी झामड़, इंदौर

* श्री कन्हैयालाल मूलावत शिक्षा दीक्षा निधि *

2,500/– ललित कुमार जी विनीत जी मूलावत, भीलवाड़ा (सूर्यप्रकाश जी मूलावत के भीलवाड़ा चातुर्मास में मासखमण तप के उपलक्षय में)

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता-11, साहित्य सदस्यता-3, संघ आजीवन सदस्यता-2, संघ साधारण सदस्यता-6

:: 1 अप्रैल 2024 से 31 अक्टूबर 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/-	नकद
04.04.24	12,000/-	UPI रौनक
04.04.24	7,000/-	UPI रौनक
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
07.04.24	2,500/-	UPI शरत
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
29.04.24	3,256/-	UPI राजेश
07.05.24	13,000/-	UPI NAKES
13.05.24	5,100/-	नकद
14.05.24	1,100/-	UPI सिंपल
14.05.24	800/-	UPI सचिन
07.06.24	4,000/-	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/-	By Trf.
17.06.24	2,100/-	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/-	UPI रचना
01.07.24	3,133/-	IMPS
20.07.24	3,800/-	UPI महेंद्र इलेक्ट्रिकल्स
01.08.24	3,133/-	UPI विमल कुमार
02.08.24	1,000/-	UPI सुशील संजय जैन
12.08.24	2,375/-	UPI प्रदीप कुमार जैन
16.08.24	2,100/-	TRF
31.08.24	25,500/-	UPI उत्तम ट्रैडर्स
04.09.24	1,101/-	UPI ईश्वर जैन
12.09.24	31,000/-	NEFT उज्ज्वल जैन
18.09.24	8,000/-	UPI रंजना
18.09.24	5,000/-	UPI निकुंज शाह
19.09.24	6,000/-	NEFT राजेंद्र क्लॉथ
20.09.24	9,000/-	UPI ऋषभ जैन
27.09.24	51,000/-	IMPS ऋषभ
27.09.24	5,000/-	UPI जयंत
27.09.24	45,000/-	UPI जयंत
01.10.24	1,000/-	UPI आयुर्षी
02.10.24	25,000/-	IMPS गणेश
03.10.24	21,000/-	UPI प्रदीप
04.10.24	30,000/-	CH.1218 DCB
04.10.24	2,500/-	नकद
07.10.24	8,000/-	UPI हरीश
23.10.24	2,000/-	UPI महावीर
29.10.24	500/-	UPI मीना
30.10.24	10,000/-	UPI सिद्धार्थ

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

विनम्र श्रद्धांजलि

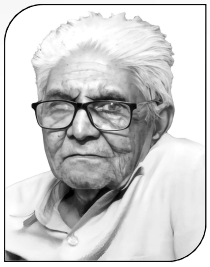

देशनोक/हैदराबाद। सुश्रावक सोहनलाल जी (शास्त्रीजी) सुपुत्र स्व. श्री भैरूदान जी लुणिया का 14 अक्टूबर को हैदराबाद में देवलोकगमन हो गया। आप 55 वर्षों से चौविहार, संवर आदि रखते थे। शास्त्रों के प्रति विशेष रुचि के कारण आपको शास्त्रीजी का संबोधन दिया जाता था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

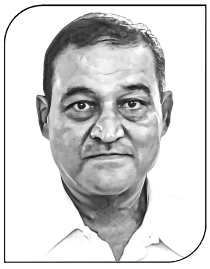

नोखा/बंगईगाँव। सुश्रावक राजेंद्र जी सुपुत्र स्व. श्री संपतलाल जी बैद का 62 वर्ष की आयु में 22 अक्टूबर को निधन हो गया है। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी, हँसमुख व कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे एवं आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश पर पूर्ण श्रद्धा रखते थे। समय-समय पर त्याग-प्रत्याख्यान किया करते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नागदा जंक्शन। सुश्राविका नेत्रदानी कांता बाई धर्मसहायिका स्व. श्री लक्ष्मीचंद जी राठौर का 80 वर्ष की आयु में 24 अक्टूबर को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति गहरी समर्पणा थी। प्रतिदिन लगभग 10 सामायिक, उभयकाल प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि का लक्ष्य रखती थीं। 2 वर्षीतप सहित अनेक तप-त्याग से आपका जीवन सजा हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

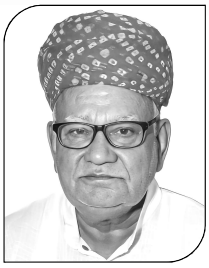

देशनोक। सुश्रावक हनुमानमल जी सुपुत्र स्व. श्री फूसराज जी भूरा, हिंदमोटर प्रवासी का 79 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक 30 अक्टूबर को महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन सादगी, सरलता, मधुरता से प्रेरित था। आप आचार्य भगवन् एवं चारित्रात्माओं के दर्शन-सेवा का लाभ लेते थे। प्रतिदिन सामायिक का लक्ष्य रहता था। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के परमभक्त थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। सुश्रावक दीपक जी सुपुत्र श्री बसंतीलाल जी पुगलिया का 4 नवंबर को देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ संघ समर्पित, निष्ठावान कार्यकर्ता थे। संपूर्ण पुगलिया परिवार आचार्य श्री रामेश के प्रति श्रद्धा समर्पित है। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

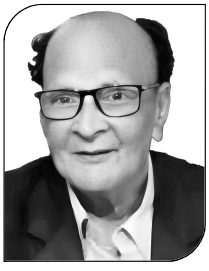

देशनोक/हैदराबाद। सुश्रावक तिलोकचंद जी धारीवाल का 85 वर्ष की आयु में 11 नवंबर को देहावसान हो गया। आप आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के परमभक्त थे। सेवाभावी, मिलनसार धारीवाल जी ने अपना जीवन पूर्ण सादगी व सरलता से व्यतीत किया।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

शूल भी बन जाते फूल

'शूल बन जाते हैं फूल' यह कोई मुहावरा नहीं है। यह जीवन का यथार्थ है। जिंदगी काँटों से भरी हुई है। हर कदम पर शूल चुभते रहते हैं। शूलों से पृथ्वी को मुक्त नहीं किया जा सकता, पर व्यक्ति अपनी समझदारी से उन शूलों से बचाव कर सकता है। जैसे पाँवों में जूते या चप्पल पहनकर पृथ्वी के द्रव्य शूलों से बचाव किया जा सकता है, वैसे ही भावात्मक रूप से प्रतिकूल अवस्थाओं को भी अनुकूल अनुभव किया जा सकता है। अर्जुन अणगार का उदात्त चारित्र सर्चलाइट की तरह है। किसी ने कठोर शब्दों से भर्त्सना की तो किसी ने पत्थर या डंडे से प्रहार भी कर दिया, किंतु उन्होंने उसे सकारात्मक भावों से स्वीकार किया। जब व्यक्ति यह सोच ले, जान ले कि यह मेरे द्वारा बोए गए बीजों का ही परिणाम है, तो वे शूल, फूल बन जाएँगे। अर्जुन मुनि को वे प्रतिकूल परीषह सता नहीं पाए, परेशान कर नहीं पाए। प्रतिकूल स्थिति में व्यक्ति को अध्यात्मपरक चिंतन को उर्वर करना चाहिए। जो प्रतिकूलताएँ पैदा कर रहा हो, उसके लिए वह अनुकूल बना रहे। यथा '***जो ताको काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल***', जो तुम्हारे लिए काँटा बो रहा हो, तुम उसके लिए फूल बोओ। जो प्रतिकूलताएँ पैदा की जा रही हैं, उसे अपना उपकारी समझो। उसे अपना परीक्षक समझो कि यह मेरी परीक्षा ले रहा है।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. (प्रणव)

धार्मिक कार्य

तप–त्याग

:: मेवाड़ अंचल ::	
कांकरोली	**75 –** किरण जी कोठारी (गतिमान है), **36 –** मधु जी पगारिया, **31 –** सुनिता जी भड़कत्या, ऊषा जी वया
बड़ीसादड़ी	**31 –** मीना जी रांका, आशा जी मेहता, रेखा जी रातड़िया **भीलवाड़ा 31 –** मोनिका जी सेठिया
:: छतीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::	
दुर्ग	**71 –** सुनंदा जी पारख **बेरला 24 –** रजनी जी लोढ़ा
:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::	
जलगाँव	**मासखमण –** आभा जी डूंगरवाल, **36 –** साक्षी जी पारख, **23 –** मिताली जी मुणोत, **15 –** ताशी जी गाँधी
नागपुर	**मासखमण –** लीला जी बोरा, आकांक्षा जी श्रीश्रीमाल, **16 –** ट्विंकल जी चौरड़िया

ओली तप

:: मेवाड़ अंचल ::	
चित्तौड़गढ़	सरोज जी सुराणा, अपेक्षा जी सुराणा, रेखा जी बोरड़िया, सोना जी नाहर, कोमल जी नाहर, ममता जी भड़कत्या, रेखा जी चावत, चंदनबाला जी सहलोत, बंसता जी बाबेल, सुरभि जी पोखरना, रीना जी पोखरना, कल्पना जी पटवारी, ललिता जी श्रीश्रीमाल, सुंदर देवी श्रीश्रीमाल
बंबोरा	तारा जी जारोली **उदयपुर** शांता बाई खेमलीवाल
:: छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::	
बालोद	ऋतु जी बाफना, गुंजन जी ललवाणी, नेहा जी ललवाणी, प्रिया जी सांखला, कुसुम जी नाहटा, मीना जी नाहटा, संजना जी चौरड़िया **खैरागढ़** चमेली जी चौपड़ा
धमतरी	लता जी सोनी, वंदना जी चौरड़िया, सारिका जी नाहटा, डिंपल जी बोहरा
चारमा	गंगा जी रायसोनी **गुंडरदेही** वर्षा जी नाहटा
बेरला	महक जी बोथरा, विमला जी लोढ़ा, **40 उपवास** - राखी जी सुराणा
रायपुर	संजना जी मुकीम, मंजूषा जी बरलोट, ममता जी सांखला, सुषमा जी बरड़िया, दुर्गा जी लोढ़ा, वीणा जी पारख, शोभा जी बाघमार, अदिती जी सुराणा
राजनांदगाँव	मंजू जी ओस्तवाल, मनीषा जी ओस्तवाल, ज्योति जी चौरड़िया
दुर्ग	कशिश जी सांखला, रूपल जी सांखला, रुचि जी बाफना, ममता जी सांखला
:: कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ::	
हैदराबाद	दीपिका जी मंडोत, मोनिका जी रांका
:: मुंबई-गुजरात अंचल ::	
सूरत	सुमन जी सांड, स्वाति जी देरासरिया, जूली जी कांकरिया
मुंबई	ममता जी कदमालिया, ज्योति जी सिसोदिया, दीपिका जी जैन, विनीता जी वया, स्नेहलता जी पिपाड़ा, हर्षा जी कावड़िया, मोनिका जी बडाला, संगीता जी परमार, कल्पना जी कोठारी, संगीता जी सेठ, मंजू जी पिपाड़ा, ललिता जी पितलिया, छवि जी कोठारी, संतोष जी वया, उर्मिला जी कोठारी, मधु जी ओस्तवाल, अंजना जी ओस्तवाल, कांता जी ओस्तवाल, किरण जी छाजेड़, कविता जी पालदेचा, सुनीता जी सिसोदिया, आशा जी चौधरी, सुशीला जी जारोली, सोनिया जी गांग
बड़ौदा	वीणा जी जारोली, सीमा जी नागोरी, दिव्या जी नागोरी
:: पूर्वोत्तर अंचल ::	
गुवाहाटी	धनलक्ष्मी जी कोठारी, मुन्नी देवी फलोदिया, सुरजा देवी जी छाजेड़, सायर देवी नाहर, सरला देवी बेगाणी, शकुंतला देवी संखलेचा
:: दिल्ली, पंजाब, हरियाणा व उत्तरी अंचल ::	
चंडीगढ़	रंजू जी भूरा

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	लघुदंडक, गमक का थोकड़ा, विरह का थोकड़ा, अवधिपद का थोकड़ा	धमतरी	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन श्री जी म.सा.
2.	आओ मोक्ष का लाइसेंस कराओ	चित्तौड़गढ़	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा.
3.	घनघोर अंधेरा	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला श्री जी म.सा.
4.	कोऽहम से सोऽहम् की यात्रा, भक्ति के रंग भक्तों के संग	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा.
5.	शासक सुंदर शोभता	भूपालपुरा	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.
6.	सिद्धांत बत्तीसी, जंबूद्वीप	अर्जुनी	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.
7.	अरिहंत बनने के लिए अरिहंत को जानना जरूरी है	बालोद	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.
8.	ज्ञान लब्धि का थोकड़ा, सिद्धांत बत्तीसी	महासमुंद	शासन दीपिका श्री रजतमणि श्री जी म.सा.

सज्झायम्मि रओ सया

(सदा स्वाध्याय में रत रहो)

4 सितंबर 2024 को भीलवाड़ा में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर ने सकल जैन समाज को 32 आगमों में से श्रावकों के वाचन योग्य 26 आगमों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। महापुरुषों की दिव्यवाणी को आत्मसात करते हुए संघ ने दृढ़ता से इस आयाम को शीघ्रातिशीघ्र सकल जैन समाज तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा है। इसके अंतर्गत संपूर्ण 12 अंचलों को 4 जोन (क्षेत्रों) में विभाजित किया गया है –

- **Zone I –** मेवाड़, जयपुर-ब्यावर, दिल्ली-पंजाब-हरियाणा
- **Zone II –** बीकानेर-मारवाड़, बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान, पूर्वोत्तर
- **Zone III –** मध्य प्रदेश, मुंबई-गुजरात, महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश
- **Zone IV –** कर्नाटक-आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़-ओड़िशा, तमिलनाडु

प्रत्येक जोन में प्रतिदिन लगभग 100-100 गाथाओं के माध्यम से 26 आगमों के स्वाध्याय का लक्ष्य रहेगा। 100 गाथाओं की स्वाध्याय पुस्तिका केंद्रीय टीम द्वारा भेजी जाएगी। जिन्होंने पूर्व में आगमभक्ति एवं महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 100 गाथाओं के स्वाध्याय का नियम ले रखा है, उनको पुनः रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है। इन गाथाओं की वाचनी चारित्रात्माओं से लेने का लक्ष्य रखें। जिन क्षेत्रों में चारित्रात्माएँ विराजित नहीं हो, वहाँ वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं से ले सकते हैं। स्वाध्याय के पश्चात् '**आगमे तिविहे**' का पाठ अवश्य करें। अस्वाध्याय के 32 कारणों का भी पालन अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 7231855008 पर संपर्क करें।

आंचलिक पदाधिकारियों की बैठक संपन्न

छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा की अध्यक्षता में 10 नवंबर को धमतरी में कार्यकारिणी तथा मंडल सदस्याओं की उपस्थिति में बैठक आयोजित की गई। राष्ट्रीय उपाध्यक्षा ने 15 दिसंबर 2024 से 15 जनवरी 2025 तक जिन मंडलों में मनोनयन को दो वर्ष पूर्ण हो चुके हैं उनमें नवीन मनोनयन प्रक्रिया करवाने का मार्गदर्शन दिया। राष्ट्रीय मंत्री ने '**सज्झायम्मि रओ सया**' के संदर्भ में बताते हुए अधिकाधिक रजिस्ट्रेशन की प्रभावना की। संघ के कार्यक्रमों में केसरिया गणवेश पहनने, गणवेश के साथ मेकअप न करने एवं नई बहू को पड़ले में केसरिया गणवेश भेंट करने का निवेदन किया। केसरिया कार्यशाला सह-संयोजिका ने आगामी गतिविधि, संगठन सह-संयोजिका जैन सिद्धांत बत्तीसी फाइनल पेपर, परिवारांजलि संयोजिका ने आयामों एवं मोटिवेशनल फोरम संयोजिका आदि ने संदर्भित जानकारी दी। **22 दिसंबर** को होने वाले **ग्रैंड समर्पण दिवस** के बारे में भी जानकारी देते हुए बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की गई। सभा में धमतरी, रायपुर, दुर्ग, अर्जुनी, गुंडरदेही, कोंडागाँव, खरियार रोड, राजिम, डौंडीलोहारा, डौंडी, नरहरपुर, नारायणपुर, गीदम, तोंगपाल, राजा खरियार, बालोद, अर्जुंदा एवं राजनांदगाँव मंडलों की सदस्याओं की उपस्थिति रही। आपसी विचार-विमर्श के साथ जिज्ञासा समाधान किया गया। मुमुक्षु बहन सुश्री युक्ता जी चौरड़िया के सत्कार का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संघ समर्पण गीत के साथ मीटिंग संपन्न हुई।

प्रतिक्रमण प्रश्न मंच 2024

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति मेवाड़ अंचल द्वारा प्रतिक्रमण क्विज़ के चतुर्थ चरण का आयोजन 13 अक्टूबर 2024 को भीलवाड़ा में किया गया। इसके अंतर्गत इस अंचल में 170 जनों ने प्रतिक्रमण कंठस्थ किया। स्थानीय संयोजिकाओं अंजना जी धींग, उदयपुर व साक्षी जी कोठारी, केसुंदा को बेस्ट संयोजिका सम्मान प्रदान किया गया। इसमें प्रथम टीम को ₹5,100/-, द्वितीय टीम को ₹3,100/-, तृतीय टीम को ₹2,100/- एवं तीन सांत्वना पुरस्कार ₹1,100/- से सम्मानित किया गया।

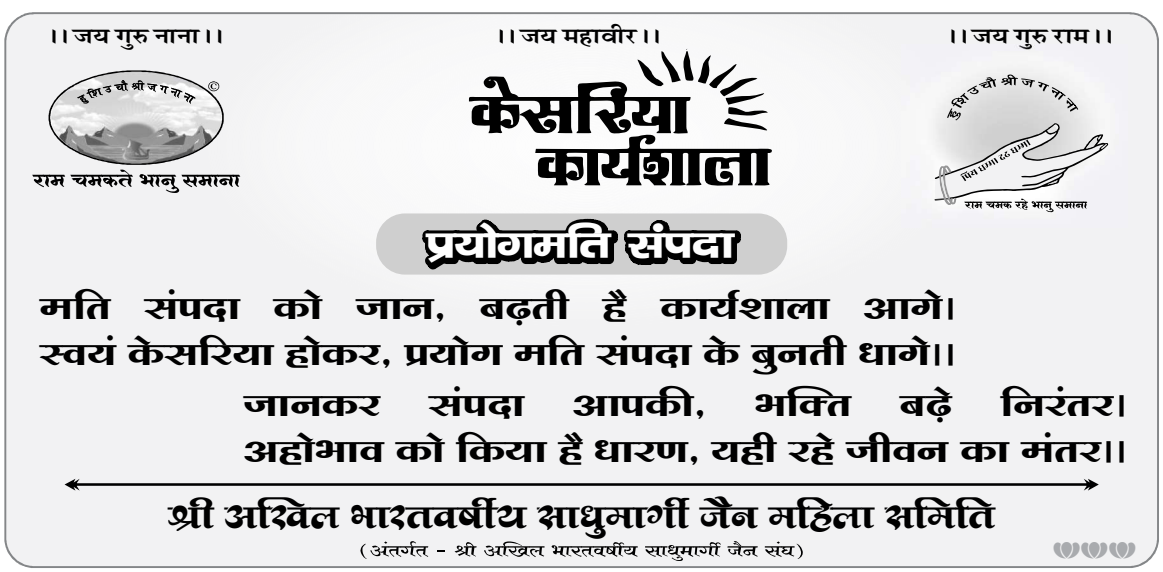

रक्तदानम् एवं आयंबिल दिवस का सफल आयोजन

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा. के 25वें पुण्यस्मृति दिवस एवं परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत स्थानीय संघों में **13 अक्टूबर** को रक्तदान शिविरों में 10,400 यूनिट रक्तदान एवं **20 अक्टूबर** आयंबिल दिवस पर 6,300 आयंबिल सम्पन्न हुए। सभी गुरुभक्तों ने अपूर्व समर्पणा का परिचय देते हुए कीर्तिमान स्थापित किया। सभी सहयोगियों, तपस्वियों एवं रक्तदाताओं को साधुवाद।

क्र.	अंचल	रक्तदान (यूनिट में)		आयंबिल	
		क्षेत्र	रक्तदान	क्षेत्र	आयंबिल
1.	मेवाड़	8	846	53	1581
2.	बीकानेर-मारवाड़	8	1117	8	605
3.	जयपुर-ब्यावर	2	245	10	265
4.	मध्य प्रदेश	14	1094	24	963
5.	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	16	773	36	913
6.	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	5	321	17	426
7.	तमिलनाडु	2	89	2	87
8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	7	4223	9	589
9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	10	668	2	359
10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा	6	544	13	100
11.	पूर्वोत्तर	11	348	11	327
12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	1	185	1	108
	कुल	**90**	**10453**	**186**	**6323**

आतिशबाजी त्याग संकल्प मुहीम

Say No To Firecrackers : भगवान महावीर निर्वाण दिवस के शुभ अवसर पर देशभर में आतिशबाजी त्याग संकल्प मुहीम के अंतर्गत 5 से 25 वर्ष के 800 से अधिक बच्चे, युवा एवं युवतियों ने संकल्प लेकर आतिशबाजी त्याग का संकल्प लिया। इनमें से 196 युवक-युवतियों ने अगले एक वर्ष तक आतिशबाजी नहीं करने का संकल्प लिया। एतदर्थ सभी संकल्पकर्ताओं हार्दिक साधुवाद।

विविध समाचार

'बिजी लाइफ में ईजी धर्म' नामक दो दिवसीय युवा शिविर संपन्न

उदयपुर, 9–10 नवंबर 2024। शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला जी म.सा. के पावन सान्निध्य में दो दिवसीय '**बिजी लाइफ में ईजी धर्म**' युवा शिविर भड़भूजा घाटी स्थित पौषधशाला में आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 30 युवाओं ने भाग लिया। साध्वीवर्या ने फरमाया कि इस बिजी लाइफ में ईजी माध्यम से धर्म किया जा सकता है। दिन का शुभारंभ पाप से नहीं परमात्मा से हो। प्रात: उठते ही नवकार मंत्र का भावपूर्वक स्मरण करें। '**मनुष्य जीवन दुर्लभ है**' लोकोक्ति को तार्किक व शास्त्रसम्मत रूप से समझाया। शिविर समापन पर साध्वीश्री जी के मांगलिक फरमाई। समता शाखा संगान के साथ शिविर संपन्न हुआ।

10 नवंबर 2024। छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल की सत्र 2024-26 की पहली आंचलिक कार्यसमिति मीटिंग धमतरी में आयोजित हुई। इसमें अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के नेतृत्व में आंचलिक प्रवृत्ति संयोजकों, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यों, स्थानीय समता युवा संघ अध्यक्षों, विशेष आमंत्रित पूर्व पदाधिकारियों एवं उपस्थित सभी ने सकारात्मक चर्चा पश्चात् संघ विकास में सहभागिता का संकल्प लिया।

उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। जिन परिवारों में उत्क्रांति के अंतर्गत कार्यक्रम सम्पन्न हुए उनका विवरण इस प्रकार है-

1. उदयपुर निवासी विनोद जी जारोली का नूतन गृह-प्रवेश 6 अक्टूबर को संपन्न हुआ।
2. मैसूर निवासी उत्तमचंद जी दक परिवार में दिवित जी का मुंडन संस्कार 10 अक्टूबर को संपन्न हुआ।
3. मैसूर निवासी लादूलाल जी देसरला का नूतन गृह प्रवेश 12 अक्टूबर को संपन्न हुआ।
4. छोटी सादड़ी निवासी राजमल जी मुर्डिया का नूतन गृह-प्रवेश 13 अक्टूबर को संपन्न हुआ।
5. नोखा निवासी मुंबई प्रवासी नरेंद्र जी बोथरा का नूतन गृह-प्रवेश 3 नवंबर को मुंबई में संपन्न हुआ।

त्रुटि सुधार

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर भीलवाड़ा में समता युवारत्न अलंकरण से सम्मानित व्यक्तित्व विशाल जी बाँठिया, भीनासर का संक्षिप्त परिचय 15-16 नवंबर 2024 के अंक में पेज नं. 59 पर प्रकाशित किया गया था। कृपया इस परिचय में माता-पिता का नाम सुश्रावक स्व. श्री धीरेंद्र कुमार जी-सुश्राविका स्व. श्रीमती पुष्पा देवी बाँठिया पढ़ने का कष्ट करें।

- समता युवा संघ टीम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (अक्टूबर 2024)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	06–10	13–10	20–10	27–10
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	2749	1978	1931	1813
		आंचलिक क्षेत्र	95	95	94	94
2	बीकानेर–मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	752	640	790	684
		आंचलिक क्षेत्र	40	43	45	42
3	जयपुर–ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	379	363	469	403
		आंचलिक क्षेत्र	23	22	25	25
4	मध्य प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	844	838	1178	1152
		आंचलिक क्षेत्र	77	79	82	78
5	छत्तीसगढ़–ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	1646	1483	1884	1759
		आंचलिक क्षेत्र	126	125	134	137
6	कर्नाटक–तेलंगाना–आंध्र प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	310	458	307	271
		आंचलिक क्षेत्र	28	27	29	28
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	202	244	233	251
		आंचलिक क्षेत्र	13	14	14	14
8	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	386	488	464	557
		आंचलिक क्षेत्र	17	24	22	19
9	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	468	486	662	468
		आंचलिक क्षेत्र	51	52	56	55
10	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–	आंचलिक उपस्थिति	262	307	336	329
	झारखंड–आंशिक ओड़िशा	आंचलिक क्षेत्र	31	32	32	31
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	204	206	223	199
		आंचलिक क्षेत्र	30	28	30	29
12	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरी	आंचलिक उपस्थिति	153	266	142	98
		आंचलिक क्षेत्र	9	8	10	9
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	10	14	13	9
		आंचलिक क्षेत्र	4	6	8	5
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		8365	7771	8632	7993
	कुल क्षेत्र		544	555	581	566

जब व्यक्ति अपनी सही छवि देख लेता है, तब उसे अपनी कमियाँ या बुराइयाँ दिखाई दे जाती हैं। तब वह परमात्मा के चरणों का आश्रय लेकर अपने जीवन का परिष्कार कर सकता है। ऐसा यदि तुम करोगे तो अपने जीवन के खोट निकाल कर पवित्र रूप से स्वयं को उपस्थित कर सकोगे। इस प्रकार भगवान के चरणों में उपस्थित होकर अपनी निर्णायक क्षमता को, अपनी मति को श्रेष्ठ बनाएँ तो जीवन के खतरनाक मोड़ों पर भी अपने जीवन को सुरक्षित रख सकेंगे। यह सुरक्षा जीवन की ही नहीं, आत्मा की भी होगी।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

सुधी पाठकों से निवेदन!

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक के 62 वर्ष के सफर में अनेक अवसरों पर विविध विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन किया गया है। इन विशेषांकों में विषय संदर्भित सामग्री को प्रमुखता से प्रकाशित करने के साथ-साथ धर्म-ध्यान, तप-त्याग संबंधी विषय सामग्री को भी प्राथमिकता देते हुए प्रकाशित किया गया है। आप सुधी पाठकों से निवेदन है कि यदि आपके पास इन विशेषांकों की प्रतियाँ सुरक्षित रखी हों तो उन्हें केंद्रीय कार्यालय - **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)** को भिजवाने का कष्ट करें। इस विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए आप **संपर्क सूत्र 9799061990** पर संपर्क कर सकते हैं। आपकी जानकारी के लिए विशेषांकों की सूची इस प्रकार है -

क्र.सं.	विशेषांक का नाम	प्रकाशन वर्ष
1.	**आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. शताब्दी विशेषांक**	**20 सितंबर 1976**
2.	**समता विशेषांक**	**25 अगस्त 1978**
3.	**बाल विशेषांक**	**25 सितंबर 1979**
4.	**धर्मपाल विशेषांक**	**10 मार्च 1984**
5.	**रजत जयंती विशेषांक**	**25 सितंबर 1987**
6.	**संयम साधना विशेषांक**	**25 मार्च 1990**
7.	**युवाचार्य विशेषांक**	**10 दिसंबर 1992**
8.	**दीक्षा विशेषांक**	**मार्च 1992**
9.	**गणपतराज जी बोहरा विशेषांक**	**अगस्त 1999**
10.	**आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक**	**10 व 25 अक्टूबर 2000**
11.	**साध्वी श्री इंदर कँवर जी म.सा. विशेषांक**	**20 फरवरी 2012**
12.	**स्वर्ण जयंती विशेषांक**	**20 नवंबर 2012**
13.	**युवाचार्य पदारोहण विशेषांक**	**20 सितंबर 2017**

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के नेश्राय में सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची

दिनांक : 20-11-2024

1. मेवाड़ अंचल

क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर
1	**परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**	10	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, जीवलिया (आसींद) भीलवाड़ा (राज.)	महेश नाहटा 9406201351, 7977370892 दीपक जी बेताला 9462595676	2	**बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.**	4	आदिनाथ भवन, कांचीपुरम्, भीलवाड़ा (राज.)	महेश नाहटा 9406201351, 7977370892 दीपक जी बेताला 9462595676
3	शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.	2	गणेशलाल जी मेहता का निवास, खेमाणा, भीलवाड़ा (राज.)	गणेशलाल जी मेहता 9461890692	4	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.	5	सुरेंद्र कुमार जी नवीन कुमार जी मेहता का फॉर्म हाऊस, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	राजमल जी भंडारी 9950438223
5	शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा.	2	राजकीय विद्यालय, इरास, भीलवाड़ा (राज.)	धनपत जी नाहर 9414262235	6	शासन दीपक श्री हर्षित मुनि जी म. सा.	8	जैन स्थानक, कंवलियास, भीलवाड़ा (राज.)	धर्मीचंद जी रांका 9414574808
7	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले)	5	अरिहंत कंस्ट्रक्शन (संजय जी डूंगरवाल), 395, आई–1 रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)	मुकेश जी पगारिया 9413286163 प्रकाश जी सुराणा 9414166014	8	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	7	समता भवन, शास्त्री नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	आदित्य जी सेठिया 9829244305
9	शासन दीपिका साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा.	7	जैन मंदिर धर्मशाला, खेरोट, प्रतापगढ़ (राज.)	कमलेश जी मालु 9928587164	10	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले)	5	समता भवन, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कन्हैयालाल जी मोदी 9784170942
11	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.	5	बसंतीलाल जी सूर्या का निवास, नाथद्वारा, राजसमंद (राज.)	लोकेश जी सूर्या 7014157088	12	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, सांवरियाजी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	अशोक जी कोठारी 9460040619
13	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले)	7	गुलाब भवन, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलाल जी पोरवाल 9461273789 सुशील जी नागोरी 9799999595	14	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा.	4	महावीर भवन, भादसोड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रमेश जी पोखरना 9413640682
15	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा.	6	जगदीश जी जाट का निवास, महिनगर, प्रतापगढ़ (राज.)	जगदीश जी जाट 7790875511	16	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. (छ.ग. वाले)	3	ज्ञानप्रकाश जी सांखला का निवास, पार्श्वनाथ, कांचीपुरम्, भीलवाड़ा (राज.)	दीपक जी बेताला 9462595676
17	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला जी म.सा.	8	कोठारियों की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495	18	शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा.	4	ज्ञानप्रकाश जी सांखला का निवास, पार्श्वनाथ, कांचीपुरम्, भीलवाड़ा (राज.)	दीपक जी बेताला 9462595676
19	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा.	4	समता भवन, काशीपुरी, भीलवाड़ा (राज.)	दीपक जी बेताला 9462595676	20	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती जी म.सा.	4	अम्बेश प्रवचन हॉल, सिंहपुर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रंगलाल जी जैन 8104383010

21	शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा.	3	समता भवन, शास्त्री नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	आदित्य जी सेठिया 9829244305	22	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा.	4	वर्धमान स्थानक भवन, हमीरगढ़, भीलवाड़ा (राज.)	संपतलाल जी चौरड़िया 9928037487
23	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा.	4	स्थानक भवन, सुखेड़ा, प्रतापगढ़ (राज.)	ज्ञानचंद जी 9993309903	24	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्षिता श्री म.सा. (बाड़मेर वाले)	3	जैन साहब का मकान, जैन आराधना भवन के पीछे, हाऊसिंग बोर्ड, प्रतापगढ़ (राज.)	अंकित जी चिप्पड़ 8233267777
25	शासन दीपिका साध्वी श्री पावन श्री जी म. सा.	3	करन जी सेठिया का निवास, सैंथी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	आदित्य जी सेठिया 9413161601	26	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. (चिकारड़ा वाले)	4	महावीर भवन, कुंथवास, उदयपुर (राज.)	सोहनलाल जी पितलिया 9636950521
27	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा.	3	मदन जी नागोरी का निवास, आर. के. कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत जी रांका 9829178431	28	शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक, अंबामाता स्कीम, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423
29	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा.	3	ऋषभ भवन, आयड़, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423	30	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा.	4	राजकीय माध्यमिक स्कूल, धुंवाला, भीलवाड़ा (राज.)	धनपत जी नाहर 9414262235
31	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, खैरोदा, उदयपुर (राज.)	सुनील जी कुकड़ा 9414165615	32	शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा.	5	राजकीय माध्यमिक स्कूल, धुंवाला, भीलवाड़ा (राज.)	धनपत जी नाहर 9414262235
33	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.	4	ऋषभ भवन, आयड़, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495	34	शासन दीपिका साध्वी श्री खंतीप्रिया श्री जी म.सा.	4	राजकीय माध्यमिक स्कूल, धुंवाला, भीलवाड़ा (राज.)	धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676
35	शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा.	17	समता भवन, काशीपुरी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतसिंह जी रांका 9829178431 दीपक जी बेताला 9462595676					
2. बीकानेर-मारवाड़ अंचल									
1	शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा.	8	सेठिया कोटड़ी, मरोठी सेठिया मोहल्ला, ठंठेरा बाजार, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178	2	शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा.	5	राजकरन जी पुगलिया का निवास, नई लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	सुरेन्द्र जी सेठिया 8302383399
3	शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा.	4	कांकरिया भवन, कांकरिया चौक, नोखामंडी, बीकानेर (राज.)	मदनलाल जी लूणिया 9413968297 बाबूलाल जी कांकरिया 9460452789	4	शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा.	2	एस.एस.जैन सभा, चौटाला, सिरसा (हरियाणा)	पूनमचंद जी सुराणा 9351092281
5	पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा.	14	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगडी चौक, बीकानेर (राज.)	राजेन्द्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178	6	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा.	4	समता भवन, केंद्रीय कार्यालय, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	सुरेंद्र जी सेठिया 8302383399

7	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.	6	ओसवाल भवन, सेतरावा, फलौदी (राज.)	लालचंद जी गुलेच्छा 9414803248	8	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.	3	समता भवन, फलौदी (राज.)	देवेंद्र जी बैद 9413509550
9	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा.	4	विमल जी सुराणा का निवास, मंगलम् कॉलोनी, भीनासर, बीकानेर (राज.)	सुरेंद्र जी सेठिया 8302383399	10	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा.	3	राजकरन जी पुगलिया का फॉर्म हाऊस, उदयरामसर, बीकानेर (राज.)	राजकरन जी पुगलिया 9414139488
11	शासन दीपिका साध्वी श्री सुनीता श्री जी म.सा.	4	जैन जवाहर मंडल, देशनोक, बीकानेर (राज.)	शांतिलाल जी भूरा 9983033479	12	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा.	3	नथमल जी संखलेचा का निवास, गांधी चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	मदनलाल जी लूणिया 9413968297 बाबूलाल जी कांकरिया 9460452789
13	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक, कुचेरा, नागौर (राज.)	लुणकरण जी सुराना 9414415149	14	पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री प्रभात श्री जी म.सा. पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री चंद्रकला श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा.	6	समता भवन, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चौपड़ा 9828426000
15	शासन दीपिका साध्वी श्री महक श्री जी म.सा.	3	ओसवाल भवन, केतु, जोधपुर (राज.)	प्रकाश जी गोलेच्छा 9784321833	16	पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री मैनासुंदरी श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री अभिप्सा श्री जी म.सा.	4	अशोक जी श्रीश्रीमाल का निवास, वी.डी. नगर, पाली (राज.)	पदम जी लोढ़ा 9414120315
17	शासन दीपिका साध्वी श्री वरण श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, समन्वय नगर, पाल रोड, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चौपड़ा 9828426000	18	शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा.	4	बोथरा जी का निवास, नई लेन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	सुरेंद्र जी सेठिया 8302383399
3. जयपुर-ब्यावर अंचल									
1	पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. पर्याय ज्येष्ठ श्री प्राणेश मुनि जी म.सा. शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा.	5	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477	2	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा.	2	अशोक जी जैन का निवास, जयश्री विहार, कोटा (राज.)	पंकज जी सामसुखा 9799205049
3	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा.	3	गौतम जी विनायक का कार्यालय परिसर, 35, मनवा जी का बाग, एम.डी. रोड, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा.	6	कांकरिया डेलान, नयाबास, ब्यावर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477

5	शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा.	6	प्रज्ञा भवन, बापू नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	6	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले)	3	समता भवन, बजरिया, सवाई माधोपुर (राज.)	पदम जी जैन 9667006756
4. मध्य प्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा.	3	अरूण जी पितलिया का निवास, अमलतास कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी पिरोदिया 9424529214	2	पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूर कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. (पिपलिया मंडी)	7	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली न.–2, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	3	रामेश समता भवन, एल्कोलाइड कॉलोनी के सामने, नीमच (म.प्र.)	शोकीन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	4	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा.	4	बोकाड़िया जी के निवास के पास, शांति कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी पिरोदिया 9424529214
5	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा.	14	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमार जी तातेड़ 9826033624 ललित जी दुग्गड़ 9827013200	6	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.	4	बालशंकर जी पटेल का निवास, भरभड़िया, नीमच (म.प्र.)	ओम जी पटेल 8109973591
7	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. (जावरा वाले)	3	समता भवन, हरिपुरम् कॉलोनी, जावद, नीमच (म.प्र.)	नरेंद्र जी गांधी 9425108224	8	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा जी म.सा.	10	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी पिरोदिया 9424529214
9	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा.	3	महावीर भवन, सरवानिया महाराज, नीमच (म.प्र.)	अजीत जी फाफरिया 9827281805	10	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोद श्री जी म.सा.	4	समता स्वाध्याय भवन, शिक्षक नगर, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमार जी तातेड़ 9826033624 ललित जी दुग्गड़ 9827013200
11	शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शना श्री जी म.सा.	4	समता भवन, पाडलिया, खंडवा (म.प्र.)	मानकचंद जी जैन 9754507700	12	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.	6	समता भवन, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकीन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
13	शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञा जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, जमुनिया कलां, नीमच (म.प्र.)	कमलेश जी नागोरी 9754407427	14	शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा.	3	राजेंद्र जी संचेती का निवास, पानसेमल, बडवानी (म.प्र.)	राजेंद्र जी संचेती 9407441684
15	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियता श्री जी म.सा.	3	आयुष्मान आरोग्य केंद्र, आलमपुर, बैतुल (म.प्र.)	निखिल जी राठौर 9479545654					
5. छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल									
1	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.	2	पूनमचंद जी कवाड़ का निवास, तरपोंगी, सिमगा (छ.ग.)	राजू जी धारीवाल 9300660225	2	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.	2	डायरेंद्र जी गोलछा का निवास, अर्जुनी चौक, रायपुर रोड, धमतरी (छ.ग.)	दीपक जी बाफना 9098469354

3	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा जी म.सा.	6	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	प्रकाश जी सांखला 8819811008 9009611008 ज्ञानचंद जी रांका 9131359770 9425558427	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, बागबहारा, महासमुंद (छ.ग.)	हेमंत जी सांखला 9425521368
5	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.	4	प्रिंस जी कोटडिया का निवास, कुसुमकसा, बालोद (छ.ग.)	प्रिंस जी कोटडिया 8960931522	6	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला जी म.सा.	3	समता भवन, छतेरा, बालाघाट (छ.ग.)	मनीष जी चोरड़िया 7697391011
7	पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीला जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञा जी म.सा.	4	जैन भवन, डोंडी, बालोद (छ.ग.)	अंकित जी गुणधर 9755685556	8	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.	5	समता मुकीम भवन, शैलेंद्र नगर, रायपुर (छ.ग.)	इंदरचंद जी सांखला 9300255141
9	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.	4	नितिश जी टाटिया का निवास, नरेंगा रोड, वृंदावन कॉलोनी, भाटापारा, बलोदा बाजार (छ.ग.)	रितेश जी ओस्तवाल 9770052437					
6. कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.	2	अजयराज जी दौलतराज जी धारीवाल का निवास, स्टार होम्स, दोमलगुड़ा, हैदराबाद (तेलं.)	अजय जी धारीवाल 9391060966	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा जी म.सा.	4	जैन मंदिर, हेबाड़ के.एन., बेलगाम (कर्ना.)	सुनील जी कटारिया 9341114777
3	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक, विद्यारण्यपुरम्, मैसूर (कर्ना.)	मोहनलाल जी कोठारी 9845108828	4	साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा.	4	धर्मचंद जी बंबकी का निवास, सदाशिव नगर, बेंगलुरु (कर्ना.)	किशोर जी कर्नावट 9845038597 धर्मचंद जी बंबकी 9845322355
5	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा.	3	सुरेशचंद जी पोरवाल का निवास, विनायक नगर, हैदराबाद (तेलं.)	विकास जी पितलिया 9246296435	6	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.	4	विशनराज जी पितलिया का निवास, द्वारकापुरी, बंजारा हिल्स, हैदराबाद (तेलं.)	विकास जी पितलिया 9246296435 विजय जी कटारिया 9848027457
7. तमिलनाडु अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.	3	अंकुर वसन्ती अपार्टमेट, ब्रेक्स रोड, पेरंबुर, चेन्नई (तमि.)	देव जी धारीवाल 9840613129					
8. मुंबई-गुजरात अंचल									
1	शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा.	3	जैन मंदिर, कालेर, ठाणे (महा.)	शकेंद्र जी छाजेड़ 9869651177	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	8	अनिल जी सुराणा का निवास, धर्मनगर सोसा. साबरमती, अहमदाबाद (गुज.)	अनिल जी सुराणा 9510654189
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमन प्रभा जी म.सा.	4	जैन स्थानक, बुवारी, तापी (गुज.)	पंकज जी चोरडिया 7726025575	4	शासन दीपिका साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा.	3	अशोक जी दक का निवास, स्टेशन रोड, बारडोली, सूरत (गुज.)	पवन जी तातेड़ 9662252006

5	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म. सा.	3	जैन मंदिर, कसार वडवली रोड, ठाणे (महा.)	महेन्द्र जी चोरड़िया 9821042009	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा.	3	सोहनलाल जी नाहर, स्वाध्याय भवन, डी.आर.बी. कॉलेज के पास, न्यू सिटीलाइट, सूरत (गुज.)	हुलास जी सुराणा 9825198522
9. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री पदम मुनि जी म.सा.	2	जैन मंदिर परिसर, मंडाणा, नंदुरबार (महा.)	प्रकाश जी कोटडिया 9423485603	2	शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक, सिलोड, औरंगाबाद (महा.)	शांतिलाल जी जैन 9422204345
3	शासन दीपक श्री सुमित मुनि जी म.सा.	3	सागर भवन, सुभाष चौक, जलगाँव (महा.)	निलेश जी पगारिया 9329421008	4	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा.	4	समता भवन, शिंदखेडा, धुलिया (महा.)	कमलेश जी जैन 9981181008
5	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा जी म.सा.	3	जैन स्थानक, फागना, धुलिया (महा.)	हीरा भाऊ छाजेड़ 9765324643	6	पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभा जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा.	3	दत्तु भाई गुर्जर का निवास, अकुलखेड़ा, जलगाँव (महा.)	दत्तु भाई गुर्जर 9448086670
7	शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.	4	नर्मदा सोया प्रा. लि., अंजनखेड़ा, वाशिम (महा.)	संजय प्रकाश जी रूहाटिया 9823043660	8	शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणा श्री जी म.सा.	3	संतोष जी देसरड़ा का निवास, देवकली प्रवरा, अहमदनगर (महा.)	संतोष जी देसरड़ा 8788998113
9	शासन दीपिका साध्वी श्री ऋजुता श्री म. सा.	3	प्रदीप जी डोडिया का निवास, पिंपल गाँव, जलगाँव (महा.)	प्रदीप जी डोडिया 7020456772	10	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमेरु श्री जी म.सा.	3	मंगलम् भवन, धर्मपेठ, नागपुर (महा.)	राजेंद्र जी बैद 9960695111
10. बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.	4	समता भवन, हरदत्तराय चमारिया रोड, हावड़ा, कोलकाता (प.बं.)	वीरेंद्र जी गेलड़ा 9831440699	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.	4	शुभम् एलाइट, सिलफुकुरी, गोवाहाटी (असम)	सुरेंद्र जी चोरड़िया 9531284804
12. दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.	4	128, बाबुलाल जी लुणावत का निवास, विवेकानंदपुरी, दिल्ली	रमेश जी गोलछा 9810074206	2	शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा.	3	एस.एस. जैन सभा, पानीपत (हरियाणा)	गौतम जी 9354916249

मनुष्य अपने जिन अंगोपांगों पर सुंदरता का अनुभव करता है और जिनकी साज-सज्जा के लिए अपनी पूरी जिंदगी तक बिता देता है, बल्कि ऐसा करते हुए अपने को सुंदर मानने के अभिमान में फूला नहीं समाता, वही मनुष्य अपने भीतरी संस्थान तथा उनकी सूक्ष्म प्रक्रियाओं को नहीं समझता। इन्हीं अंगोपांगों के भीतरी संस्थान में प्रवाहित होती हुई वायु जब प्रकुपित हो जाती है और उसका प्रकोप असाध्य बन जाता है, तब यह बाहर दिखाई देने वाली सुंदरता बहुत जल्दी बदसूरती में बदल जाती है। यह विषय प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनुभवगम्य हो सकता है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

।।जय गुरु नाना।।

राम चमकते भानु समाना

।।जय महावीर।।

।।जय गुरु राम।।

कार्यसमिति बैठक
(सत्र 23-25)

कवर्धा, छत्तीसगढ़

4 जनवरी 2025, शनिवार

दोपहर 11.45 बजे से

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह-संयोजक, संयोजन मंडल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर 11.45 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह-संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

दोपहर 11.45 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय एवं आंचलिक प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ/शाखा अध्यक्ष, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

रात्रि 07.00 बजे से

महत्तम महोत्सव

महत्तम शिखर सम्मेलन (संयुक्त सत्र)

आमंत्रित : श्रीसंघ, महिला समिति, समता युवा संघ पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य एवं स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री

संयुक्त सत्र

-✻ निवेदक ✻-

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति **श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ**

भावभीनी श्रद्धांजलि

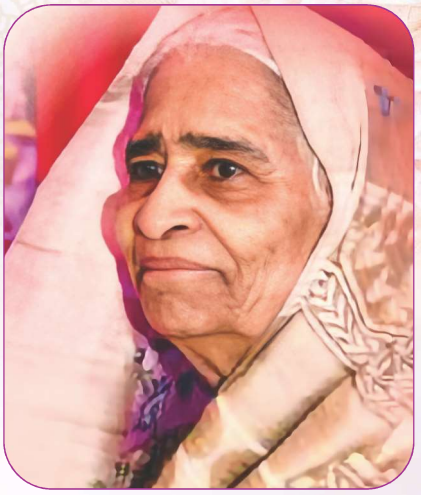

सुश्राविका रत्ना श्रीमती कुसुम देवी देशलहरा, दुर्ग

दुर्ग। वरिष्ठतम सुश्राविका, जप-तप आराधिका, सेवाभावी, सहज एवं सरल व्यक्तित्व की धनी **श्रीमती कुसुम देवी देशलहरा** धर्मसहायिका स्व. श्री मानकलाल जी देशलहरा का विगत **24 सितंबर 2024** को देहावसान हो गया। समता साधिका कुसुम देवी धर्मनिष्ठ, शासननिष्ठ सुश्राविका थीं। आपके लगभग 60 वर्ष से अधिक समय से जमीकंद व पाँचों तिथि हरी त्याग तथा रात्रि चौविहार के प्रत्याख्यान थे। जीवनभर सभी के प्रति सहयोग की भावना रखने वाली आप आदर्श सुश्राविका के मरणोपरांत नेत्र दान कर दो व्यक्तियों के जीवन को रोशन किया गया।

आपका संपूर्ण परिवार संघ एवं समाज सेवा में सदैव अग्रणी रहता है। आपके सुपुत्र नवीन जी श्री अ.भा.सा. जैन संघ के छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के राष्ट्रीय मंत्री पद पर सेवाएँ दे रहे हैं तथा श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा प्रभा जी देशलहरा आपकी ज्येष्ठ पुत्रवधू हैं।

आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

:: श्रद्धानवत ::

अनिल जी-प्रभा जी, मनोज जी-संगीता जी, नवीन जी-ममता जी देशलहरा (पुत्र-पुत्रवधू),
रौनक-प्रियंका, रजत-ग्रीष्मा, आदित्य-सिल्की (पौत्र-पौत्रवधू), **खुशी** (पौत्री),
राजवीर (प्रपौत्र), **आर्या, मीरा** (प्रपौत्री) **एवं समस्त देशलहरा परिवार ।**
प्रमोद-कोमलचंद जी चोपड़ा, सोनिया-निर्भय जी बेगानी (पुत्री-दामाद), **एकता, शिखा** (दोहितियाँ),
आशीष, ऋषभ, तनय (दोहिते) ।

:::::::::: प्रतिष्ठान ::::::::::

UTOPIA
Real Estate Developers
मैंसर्स सिरेमल मानकलाल देशलहरा, दुर्ग ● मैंसर्स एस्पायर फार्मास्युटिकल प्रा.लि., रायपुर ● मैंसर्स शेड्स ऑफ ग्रीन, दुर्ग

भावभीनी श्रद्धांजलि

सुश्राविका श्रीमती विजयश्री जी भूरा, देशनोक/कोलकाता

सुश्राविका विजयश्री जी भूरा धर्मपत्नी निर्मल कुमार जी भूरा, पुत्रवधू स्व. श्री दीपचंद जी भूरा (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ), सुपुत्री स्व. श्री केशरीचंद जी सेठिया का **3 नवंबर 2024** को देवलोकगमन हो गया। आपको संघ, शासन व गुरु नाना-राम पर श्रद्धा एवं भक्ति विरासत में मिली। इस गुरुभक्ति को आपने अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना लिया। आपने दोनों ही परिवारों में धर्म अनुसरण की प्रेरणा देते हुए श्रद्धा का बीजारोपण किया। पूर्ण पारदर्शिता के साथ सत्य पथ पर चलना आपकी विशेषता रही।

विशाल हृदया विजयश्री जी प्राणिमात्र पर दयाभाव रखते हुए किसी को तकलीफ में देखकर सहज ही सहयोग देने को तत्पर रहती थीं। आप वात्सल्यपूर्ण, मिलनसार, व्यवहार कुशल व सच्ची सलाहकार थीं। संपूर्ण भूरा एवं सेठिया परिवार सर्वतोभावेन संघ, शासन व समाज के प्रति समर्पित रहते हुए संघ की विविध प्रवृत्तियों में यथा अवसर सहयोग प्रदान करने में अग्रणी रहता है। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान संघ व शासन समर्पित परिवार छोड़कर गई हैं।

:: श्रद्धानवत ::

कमला देवी, केसरीचंद, जयंत कुमार-सरला देवी, गोपालचंद-गुलाब देवी, उत्तम कुमार-सपना देवी भूरा, ललिता-पदमचंद चोरड़िया (ननद-ननदोई), **राजेंद्र-अनुरीता भूरा** (जेठूता-जेठूतावधू), **नरेंद्र कुमार-वंदना** (पुत्र-पुत्रवधू), **अरहम-शगुन भूरा** (पौत्र-पौत्रवधू), **अंजू-संजय कोठारी** (पुत्री-दामाद), **श्रेया-गर्व बच्छावत** (पौत्री-दामाद), **श्रुति-गौरव भूतोरिया** (दोहिती-दामाद), **धृहीं, दिविक भूतोरिया** (परदोहिती, परदोहिता), **ऋषभ-प्रशंसा** (दोहिता-दोहितावधू), **हृदया कोठारी** (पड़पौत्री) एवं **एवं समस्त भूरा परिवार ।**

पता : 10, लॉर्ड सिन्हा रोड, अंकुर बिल्डिंग, कोलकाता-700071 (प.बं.)

:::::::::: **प्रतिष्ठान** ::::::::::

BDB Exports Pvt. Ltd.

पीहर पक्ष : सत्यजीत-शारदा सेठिया (भाई-भाभी)
अगरचंद भैरोंदान सेठिया परिवार, बीकानेर/चेन्नई

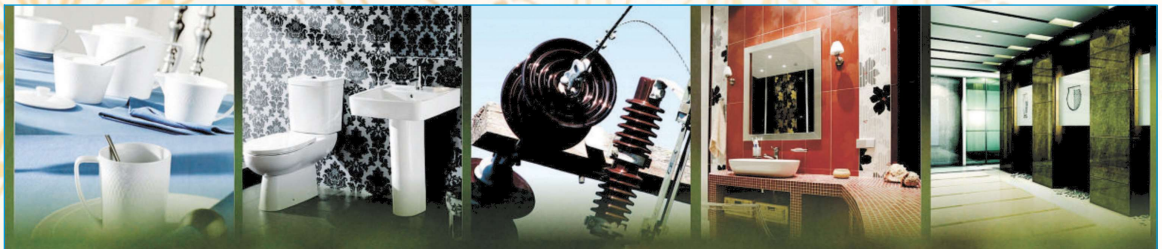

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

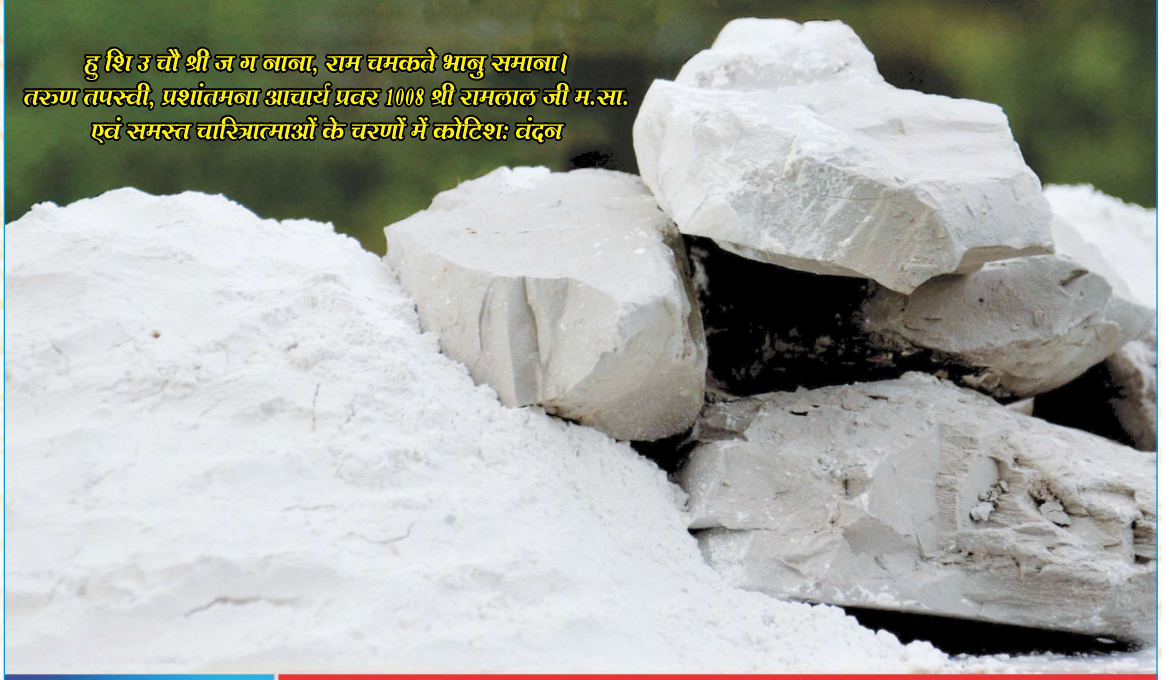

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

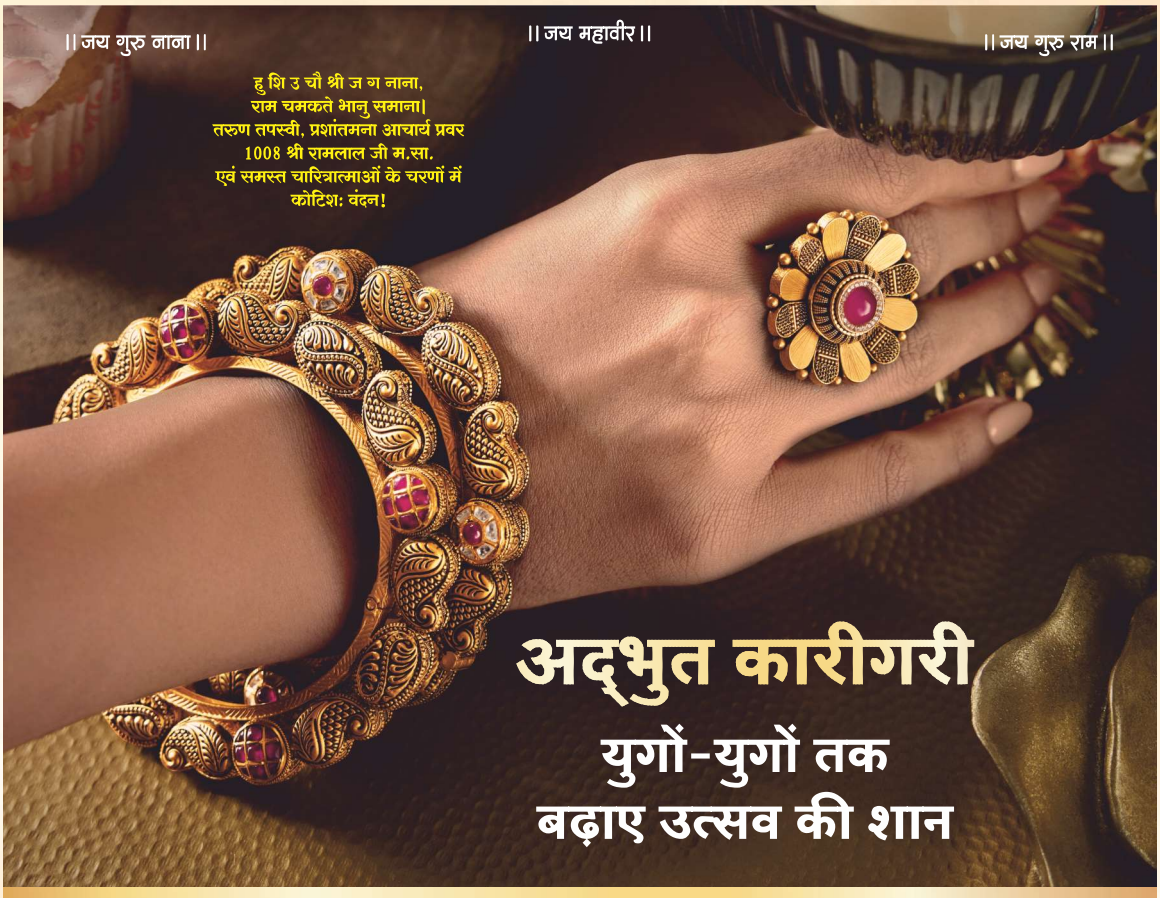

84 GOLDEN YEARS

DP

D.P. Jewellers

A BOND OF TRUST SINCE 1940

A VENTURE OF D.P. ABHUSHAN LTD.

30 लाख परिवारों का विश्वास

TOLL FREE No.: 1800 202 0339 www.dpjewellers.com

138, चाँदनी चौक, रतलाम (07412-408900

✦ इन्दौर (0731-4099996 ✦ भोपाल (0755-2606500 ✦ उज्जैन (0734-2530786 ✦ उदयपुर : (0294-2418712/13 ✦ भीलवाड़ा : (01482-237999
✦ कोटा : (0744-2500009 ✦ बांसवाड़ा : (02962-250007 ✦ अजमेर : (0145-2990748 ✦ नीमच : (9201825489

@absjainsangh

www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24700

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261